सुबह सवेरे

A Daily News Magazine
इंदौर
बुधवार, 17 अप्रैल, 2024

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 9 अंक 182 , नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्याः MP/IDC/1529/2016-2018)

प्रसंगवश

नवीन पटनायकः छठी बार सीएम बनने की राह में क्या चुनौतियां हैं

संदीप साहू

इस समय नवीन पटनायक देश में सबसे लंबे अरसे तक मुख्यमंत्री बने रहने वाले नेताओं की सूची में दूसरे नंबर पर हैं। अगर इस बार भी उनकी पार्टी बीजू जनता दल (बीजेडी) चुनाव जीत जाती है, तो अगस्त के महीने के अंत तक वे इस सूची में सिक्किम के पूर्व मुख्यमंत्री पवन कुमार चामलिंग को पछाड़ कर पहले स्थान पर आ जाएंगे। यही नहीं, लगातार छठी बार विधानसभा चुनाव जीतने का अनोखा रिकॉर्ड भी उनके नाम हो जाएगा। लेकिन लगातार पांच बार आसानी से चुनाव जीतने वाले नवीन इस बार अपनी लंबे और सफल राजनैतिक कॅरियर की सबसे बड़ी चुनौती का सामना कर रहे हैं। चौबीस साल में पहली बार उन्हें और उनकी पार्टी को 'एंटी इनकंबेंसी' का सामना करना पड़ रहा है। पटनायक की लोकप्रियता अभी भी कमोबेश कायम है, लेकिन अधिकांश स्थानों पर लगातार सत्ता में रहने के कारण स्थानीय कार्यकर्ता लोगों का भरोसा और समर्थन खोते दिख रहे हैं।

यही कारण है कि पार्टी द्वारा अब तक जारी की गई 21 लोकसभा और 118 विधानसभा प्रत्याशियों की सूची में आखिरी वक्त पर भाजपा और कांग्रेस से आए नेताओं की भरमार है। इसका परिणाम यह हो रहा है कि टिकट की आस लगाए बैठे बीजेडी के कई नेता टिकट न मिलने पर भाजपा का रुख कर रहे हैं या निर्दलीय प्रत्याशी के रूप में चुनावी मैदान में उतरने की तैयारी में जुट गए हैं। कांग्रेस के वरिष्ठ नेता और राज्य के पूर्व वित्त मंत्री पंचानन कानूनगो मानते हैं कि इस बार बीजद की स्थिति उतनी मजबूत नहीं है जितनी पिछले तीन चुनावों में थी। इसके दो कारण हो सकते हैं। एक तो यह कि इस बार टिकट के उम्मीदवारों की संख्या पहले के सभी चुनावों के मुकाबले कहीं ज्यादा है। पार्टी के नंबर तीन माने जाने वाले संगठन सचिव प्रणब प्रकाश दास की मानें तो इस बार राज्य के 21 लोकसभा सीटों और 147 विधानसभा सीटों के टिकट के लिए 10 हजार से अधिक लोगों ने आवेदन किया था। पार्टी कार्यकर्ताओं की शिकायत है कि जितनी बड़ी संख्या में इस बार दूसरे दलों से आए नेताओं को टिकट दिया जा रहा है, वह पहले कभी नहीं देखा गया।

अधिकांश बीजेडी नेता ये मानकर चल रहे हैं कि पार्टी के सुप्रीमो नवीन पटनायक, जो अब 77 साल के हो चुके हैं, अगले चुनाव (2029) में पार्टी का नेतृत्व करने की शारीरिक और मानसिक स्थिति में नहीं होंगे। बीजेडी और भाजपा के बीच आखिरकार चुनावी गठबंधन भले ही न हो पाया हो। लेकिन लगभग तीन हफ्तों तक चली दोनों पक्षों के बीच कशमकश से बीजेडी की साख और विश्वसनीयता को गहरा धक्का पहुंचा है। गठबंधन के लिए बीजेडी ही इसके लिए अधिक उतावली थीं क्योंकि उसे शायद डर था कि भाजपा के साथ हाथ न मिलाने पर कहीं तमिलनाडु, झारखंड और दिल्ली जैसे राज्यों की तरह प्रवर्तन निदेशालय (ईडी), केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई) और दूसरी केंद्रीय जांच एजेंसियां ओड़िशा में भी न आ धमकें। वैसे भी ओडिशा सरकार की अलमारी में खनिज स्कैम, चिट फंड घोटाला जैसे कई कंकाल भरे पड़े हैं। बीजद नेता दबी छिपी जुबान में बीजद में नवीन के सबसे करीबी माने जाने वाले मुख्यमंत्री के पूर्व व्यक्तिगत सचिव और अब पार्टी के नंबर दो वीके पांडियन की राजनीतिक महत्वाकांक्षा को बताते हैं।

अब यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि बीजद की ओर से वे ही भाजपा के साथ गठबंधन के लिए पूरा ज़ोर लगा रहे थे, क्योंकि वे अपना राजनीतिक भविष्य को सुरक्षित करना चाहते थे। पांडियन की मंशा आख़िरकार पूरी नहीं हो पाई। लेकिन गठबंधन न होने से सबसे ज्यादा नुकसान उन्हें ही हुआ है। कुछ हफ्ते पहले तक बीजद के हर पोस्टर और बैनर से पांडियन का मुस्कराता हुआ चेहरा नजर आ रहा था। खुद बीजू पटनायक, जिनके नाम पर पार्टी बनी है, पोस्टरों से नदारद हो गए थे। लेकिन भाजपा के साथ बातचीत विफल होने के बाद अचानक पांडियन कहीं नजर नहीं आ रहे। पार्टी के पोस्टरों में फिर बीजू पटनायक की तस्वीर देखने को मिल रही है।

जानकारों का मानना है कि नवीन पटनायक को अब यह बात समझ में आ गई है कि पांडियन को उनके उत्तराधिकारी के रूप में पेश किया जाना पार्टी के लिए घातक सिद्ध हो रहा है। लोगों में नवीन की लोकप्रियता अब भी बनी हुई है। नवीन ने पांडियन के पर काट कर पार्टी का बागडोर अपने हाथों में लेने का निर्णय लिया है।

अब देखना है कि इस ढलती उम्र में अप्रैल और मई की चिलचिलाती धूप और गर्मी में नवीन पूरे राज्य में चुनाव प्रचार कर पाते हैं या नहीं। पार्टी कार्यकर्ताओं के गिरते मनोबल को फिर से उठा पाते हैं या नहीं और पार्टी की बिगड़ी स्थिति को संभाल सकते हैं या नहीं।

पार्टी कार्यकर्ताओं के घटते आत्मविश्वास का एक प्रमुख कारण राज्य में भाजपा के बढ़ते हुए कदम है। लगातार 9 साल तक भाजपा के साथ गठबंधन सरकार चलाने के बाद 2009 के चुनाव से ठीक पहले जब नवीन ने भाजपा का हाथ छोड़ दिया तो भगवा पार्टी को अपनी जमीनी शक्ति का सही प्रमाण मिल गया।

बीजद के साथ गठबंधन में लड़े गए 2004 के चुनाव में सात लोकसभा और 32 विधानसभा सीटें हासिल करने वाली भाजपा 2009 के चुनाव में एक भी लोकसभा सीट जीत नहीं पाई जबकि विधानसभा में उसकी संख्या 32 से गिरकर छह पर आ गई। इसके साथ ही पार्टी का वोट शेयर केवल 15.05 फीसदी रह गया।

लेकिन उसके बाद से पार्टी का वोट प्रतिशत हर चुनाव में बढ़ता रहा है। 2019 के विधानसभा चुनाव में यह प्रतिशत 32.49 तक जा पहुंचा, हालांकि सीटें उसे केवल 23 ही मिलीं। बीजद का वोट प्रतिशत 44.71 फीसदी रहा और सीटों की संख्या 112।

लोकसभा चुनाव में भाजपा का प्रदर्शन और भी बेहतर रहा। पार्टी ने राज्य के 21 में से आठ सीटों पर जीत हासिल की। 2014 के आंकड़े से 13.4 फीसदी की लंबी छलांग लगाते हुए पार्टी का वोट प्रतिशत 38.4 फीसदी पर जा पहुंचा, जो बीजद के वोट प्रतिशत से केवल 4.4 फीसदी पीछे था। पहली बार पार्टी कांग्रेस को पछाड़ कर मुख्य विरोधी दल के रूप में उभरी। भाजपा अगर इस बार विधानसभा में 50 सीटें जीत जाती है, तो बीजद की सरकार के लिए 2029 तक टिकना मुश्किल होगा। भाजपा के राज्य अध्यक्ष मनमोहन सामल ने स्पष्ट किया है कि इस बार उनकी पार्टी ओड़िया अस्मिता को मुख्य मुद्दा बनाकर चुनाव में उतरेगी।

(बीबीसी हिंदी में प्रकाशित लेख के संपादित अंश)

जब बैलेट पेपर्स से वोटिंग होती थी तो क्या होता था हम जानते हैं

ईवीएम के खिलाफ बहस पर बोला सुप्रीम कोर्ट, याचिकाकर्ताओं को दिखाया 'आईना'

नई दिल्ली (एजेंसी)। इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (ईवीएम) से वोटिंग और वीवीपैट पर्चियों से मिलान की मांग वाली याचिकाओं पर सुप्रीम कोर्ट में सुनवाई हुई। इस दौरान सर्वोच्च अदालत ने सीक्रेट बैलट के जरिए वोटिंग समस्याओं की ओर इशारा किया। जस्टिस संजीव खन्ना ने याचिकाकर्ता एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) के वकील प्रशांत भूषण से कहा कि हम अपनी जिंदगी के छठे दशक में हैं। हम सभी जानते हैं कि जब बैलट पेपर्स से मतदान होता था, तब क्या समस्याएं हुआ करती थी। हो सकता है आपको पता नहीं हो, लेकिन हम भूले नहीं हैं। प्रशांत भूषण यह तर्क दे रहे थे कि कैसे अधिकांश यूरोपीय देश, जिन्होंने ईवीएम के माध्यम से मतदान का विकल्प चुना था, वापस कागज के मतपत्रों पर लौट आए हैं। प्रशांत भूषण ने कहा कि हम वापस पेपर बैलट्स (मतपत्रों) पर जा सकते हैं। दूसरा विकल्प ये है कि ईवीएम से वोटिंग के दौरान मतदाताओं को हाथ में वीवीपैट की पर्ची देना। ये भी हो सकता है कि स्लिप मशीन में गिर जाए और इसके बाद वोटर के ये स्लिप मिले। इसके बाद इसे बैलट बॉक्स में रखा जाना चाहिए। उन्होंने कहा कि ये वीवीपैट पर्चियां वोटर के हाथ में दी जानी चाहिए। हालांकि, वीवीपैट का डिजाइन बदल दिया गया, यह पारदर्शी ग्लास होना चाहिए था। लेकिन इसे गहरे अपारदर्शी मिरर ग्लास में बदल दिया गया। इसमें केवल तब तक सब दिखाई देता है जब लाइट 7 सेकंड के लिए जलती है। जब प्रशांत भूषण ने जर्मनी का उदाहरण दिया।

यूपीएससी-23 का रिजल्ट जारी लखनऊ के आदित्य ने किया टॉप

सिविल सर्विसेज में 1016 कैंडीडेट सिलेक्ट, इनमें से 180 आईएएस और 200 आईपीएस बनेंगे

नई दिल्ली (एजेंसी)। संघ लोक सेवा आयोग ने मंगलवार को सिविल सर्विसेज एग्जामिनेशन- 2023 का रिजल्ट जारी कर दिया। 1016 कैंडीडेट्स इंडियन एडमिनिस्ट्रेटिव सर्विस , इंडियन पुलिस सर्विस और इंडियन फॉरेन सर्विस के लिए चुने गए हैं। 180 आईएएस और 200 आईपीएस अफसर बनेंगे। लखनऊ के आदित्य

श्रीवास्तव ने ऑल इंडिया रैंक 1 हासिल की है। वहीं, अनिमेष प्रधान दूसरी और अनन्या रेड्डी को तीसरी रैंक मिली है। आदित्य ने अपनी पढ़ाई लखनऊ के प्राइवेट स्कूल की अलीगंज ब्रांच से की है। पिछले साल आदित्य की 216 रैंक थी। वो फिलहाल हैदराबाद की आईपीएस ट्रेनिंग एकेडमी में प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे हैं। उनका परिवार लखनऊ के विकास नगर में रहता है। आदित्य ने 2014 में 12वीं की परीक्षा करीब 98.4 फीसदी अंक के साथ पास की थी। पिछले दो सालों से यूपीएससी सिविल सर्विसेज एग्जाम में महिलाओं ने टॉप किया। 2022 में इशिता किशोर ने रैंक 1 हासिल की थी। 2021 में श्रुति शर्मा ने ऑल इंडिया रैंक 1 हासिल की थी। 2022 में गरिमा लोहिया, उमा हरथी एन और स्मृति मिश्रा टॉप रैंकर्स में थीं। 2021 में टॉप तीन रैंक पर लड़कियां थीं। अंकिता अग्रवाल ने रैंक 2 हासिल की थी, जबकि चंडीगढ़ की गामिनी सिंगला ने रैंक 3 हासिल किया था।

छत्तीसगढ़ में 18 नक्सली ढेर मुठभेड़ जारी

- **25 लाख का इनामी लीडर भी मारा गया, 2 जवान घायल**

कांकेर (एजेंसी)। छत्तीसगढ़ के कांकेर जिले के माड़ इलाके में पुलिस ने नक्सली लीडर शंकर राव सहित 18 माओवादियों को ढेर कर दिया है। सूत्रों के मुताबिक 30 नक्सलियों के मारे जाने की बात कही जा रही है। मुठभेड़ में डीआरजी इंस्पेक्टर रमेश चौधरी सहित तीन जवान घायल हुए हैं। इनमें 2 डीआरजी के हैं। घायल जवानों को अभी तक बाहर नहीं निकाला जा सका है। उन्हें लाने के लिए चॉपर भेजा गया है। मौके से 5 एके-47 बरामद की है। लोकसभा चुनाव के बीच यह मुठभेड़ हुई है। कांकेर लोकसभा में दूसरे चरण में मतदान होना है। इसके लिए नामांकन फॉर्म भी भरे जा चुके हैं। कांकेर में 26 अप्रैल को वोटिंग होगी। वहीं चार दिन बाद 19 अप्रैल को बस्तर लोकसभा में वोटिंग होनी है। इसके लिए मतदान दल भी रवाना हो गए हैं। मुठभेड़ में मारे गए शंकर राव और ललिता माड़वी डीवीसी रैंक के नक्सली लीडर थे। दोनों पर 25-25 लाख का इनाम घोषित था। पुलिस ने मौके से 4 ऑटोमेटिक हथियार भी जब्त किए हैं।

पूर्णिया में पीएम बोले-इंडी वाले भ्रष्टाचारियों को बचाने में लगे

हम उनको हटाने में लगे हैं, इन पर अगले 5 साल और कड़ाई होगी

पीएम बोले- बाबा साहेब अंबेडकर भी संविधान को नहीं बदल सकते

गया/पूर्णिया (एजेंसी)। पीएम नरेंद्र मोदी बिहार में मंगलवार को 3 घंटे रहे। उन्होंने गया और पूर्णिया में जनसभा की। पीएम ने संविधान, भ्रष्टाचार, राम मंदिर और आतंकवाद पर इंडी गठबंधन को घेरा। उन्होंने पूर्णिया में कहा कि घमंडिया गठबंधन के लोग सनातन को मिटाने में लगे हैं। जिसको किसी ने नहीं पूछा हम उनको पूज रहे हैं। हम भ्रष्टाचार को मिटाने में लगे हैं और वे बचाने में लगे हैं। भ्रष्टाचार के ठिकाने को बचाने के लिए सभी एक हो रहे हैं। प्रधानमंत्री ने कहा कि पहले देश में जवानों की शहादत होती थी। आपको गुस्सा होती थी, इन्हें घर में घुसकर मारो। आज जो देश हमें आंखें दिखाता था वो आज कटोरा लेकर भटक रहा है। जो लोग संविधान बदलने का कह रहे हैं उन्होंने कई दशकों तक काम किया, लेकिन वो कभी बाबा साहेब का संविधान कश्मीर में लागू नहीं करवा पाए। ये मोदी है, आज जम्मू-कश्मीर में भी संविधान आन-बान और शान से लागू हो गया है। ये कहते थे 370 हटी तो कश्मीर में आग लग जाएगी। आज आर्टिकल-370 का एंड हो चुका है। भारत को बांटने वालों को जलन हो रही है। ये लोग राम मंदिर के लिए भी यही कहते थे। राम मंदिर बना तो देश में आग लग जाएगी। आज राम मंदिर दुनिया में भारत का गौरव है। प्रधानमंत्री ने कहा कि पहले देश में जवानों की शहादत होती थी।

श्रीनगर नाव हादसा

2 बच्चों समेत 6 लोगों की मौत

- झेलम में पलटी नाव, 15 लोग सवार थे, 6 को रेस्क्यू किया, 3 लापता

श्रीनगर (एजेंसी)। कश्मीर के श्रीनगर में मंगलवार को झेलम नदी में एक नाव पलट गई। श्रीनगर के जिला कलेक्टर ने बताया कि इस नाव पर 15 लोग सवार थे, इनमें 7 स्कूली बच्चे और 8 लोग शामिल थे। हादसे में 2 बच्चों समेत 6 लोगों की मौत हो गई है। 6 लोगों को रेस्क्यू किया गया है, जबकि 3 लोग अब भी लापता हैं। जिला कलेक्टर ने बताया कि हादसा सुबह 7.45 बजे से 8 बजे के बीच हुआ। बारिश की वजह से नदी का जलस्तर बढ़ गया था, जिसे लेकर प्रशासन ने अलर्ट जारी किया था। हालांकि, रात को बारिश रुकने के बाद जलस्तर कुछ कम हुआ था। एनडीआरएफ, पुलिस और सेना सुबह से ही रेस्क्यू ऑपरेशन चला रही हैं। फिलहाल लापता लोगों की तलाश की जा रही है।

पहले भी नादान लोगों ने सिंधिया परिवार से टकराने की कोशिश की थी चारों खाने चित्त हो गए थे

पहले बेईमानों पर कार्रवाई नहीं होती थी, अब उनकी काली कमाई से हजारों करोड़ों आए : मुख्यमंत्री

शिवपुरी। पहले बेईमानों पर कार्रवाई नहीं होती थी। ईडी, सीबीआई कार्रवाई करती थी तो स्कूल के बेग में ही उनकी काली कमाई बन जाती थी, लेकिन अब बेईमानों की काली कमाई से हजारों करोड़ों आए हैं। अब चारों दिशाएं शुभ समाचार ला रही है, हर तरफ मोदी, मोदी, मोदी है। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने देश के लोकतंत्र को गौरवान्वित किया है। यह बात मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने शिवपुरी जिले के पोलो ग्राउंड में आयोजित जनसभा में कही। लोकसभा का यह चुनाव देश के यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में हो रहा है और यह चुनाव देश से भ्रष्टाचार, आतंकवाद, तुष्टीकरण की नीति को समाप्त करने के साथ-साथ परिवारवादी लोगों को समाप्त करने के लिए है। यह बात खजुराहो सांसद एवं भाजपा प्रदेश अध्यक्ष श्री विष्णुदत्त शर्मा ने कही। कांग्रेस के लोग भगवान श्रीराम का विरोध हमेशा से करते रहे। कांग्रेस ने श्री रामलला प्राण-प्रतिष्ठा कार्यक्रम का आमंत्रण तक ठुकरा दिया। कांग्रेस के लोग प्रधानमंत्री श्री मोदीजी का विरोध करते-करते अब भगवान राम का भी विरोध करने लगे हैं। यह बात पूर्व मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कही। प्रधानमंत्री श्री मोदीजी ने गरीबों की चिंता की है। प्रधानमंत्री ने आज ऐसी कई योजनाएं चलाई हैं जिनका लाभ आम आदमी को मिल रहा है। देश में पीएम आवास, प्रधानमंत्री उज्जवला योजना, किसान सम्मान निधि यह योजनाएं आम लोगों के लिए लाई गईं। यह बात शिवपुरी-गुना संसदीय सीट से भाजपा प्रत्याशी एवं केंद्रीय मंत्री श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने कही। सभी नेतागण शिवपुरी में भाजपा प्रत्याशी श्री ज्योतिरादित्य सिंधिया की नामांकन रैली के दौरान स्थानीय पोलो ग्राउंड पर आयोजित जनसभा को संबोधित कर रहे थे। इससे पहले विशाल रोड शो संपन्न हुआ।

subahsaverenews@gmail.com
facebook.com/subahsaverenews
www.subahsavere.news
twitter.com/subahsaverenews

सुप्रभात

अब तो मेरा राम नाम दूसरा न कोई ॥
माता छोड़ी पिता छोड़े छोड़े संगा भाई।
साधू संग बैंठ बैंठ लोक लाज़ ख़ोई ॥
सतं देख़ दौड़ आयी, जगत देख़ रोई।
प्रेम आंसू डार डार, अमर बेल बोईं
मार्ग मे तांरग मिलें, संत राम दोईं।
सन्त सदा शींश राखू, राम ह्रदय होईं ॥
अन्त में से तंत काढ़यो, पीछें रही सोईं।
राणें भेज्या विष क़ा प्याला, पींवत मस्त होईं ॥
अब तो ब़ात फ़ैल गई, जानें सब कोईं।
दास मीरा लाल गिरधर, होनीं हो सो होईं ॥

– मीराबाई

संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में सुधारों के लिए गरजा भारत

न्यूयॉर्क (एजेंसी)। भारत ने सुरक्षा परिषद में सुधार की मांग को एक बार फिर जोरदार तरीके से उठाया है। भारत ने मंगलवार को सुरक्षा परिषद सुधार पर निर्णायक कार्रवाई का आह्वान करते हुए एक समावेशी ढांचे का समर्थन किया जो वास्तव में आज के गतिशील वैश्विक परिदृश्य का प्रतिनिधित्व करे। न्यूयॉर्कमें

सुरक्षा परिषद सुधार पर अंतर-सरकारी वार्ता के छठे दौर के दौरान संयुक्त राष्ट्र में भारत की स्थायी प्रतिनिधि रुचिरा कांबोज ने ये मांग उठाई। कांबोज ने कहा कि भारत संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद की सदस्यता के विस्तार के पक्ष में है। स्थायी और गैर-स्थायी, दोनों श्रेणियों के विस्तार की जरूरत है। कांबोज ने कहा, हमारा मानना है कि सुरक्षा परिषद में वास्तविक सुधार लाने के लिए इसका विस्तार जरूरी है। यही सभी को प्रतिनिधित्व देने, ज्यादा उत्तरदायी और प्रभावी बनाने का एकमात्र तरीका है।

भोपाल का तापमान
अधिकतम 40 °c
न्यूनतम 29°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ बुधवार, 17 अप्रैल 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

MANTRA OF SUCCESS

राजेश शर्मा
सिनियर जर्नलिस्ट
मोटिवेशनल स्पीकर

कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती, कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

मंत्र को सफलता का आधार बना डाला माही शर्मा ने....

यूपीएससी (सिविल सेवा परीक्षा) में 106वी रैंक ला कर आईपीएस के लिए चयनित माही शर्मा की सफलता पर राजेश शर्मा की स्पेशल स्टोरी .....

लहरों से डर कर नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

नन्हीं चींटी जब दाना लेकर चलती है
चढ़ती दीवारों पर, सौ बार फिसलती है
मन का विश्वास रगों में साहस भरता है
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

डुबकियां सिंधु में गोताखोर लगाता है
जा जाकर खाली हाथ लौटकर आता है
मिलते नहीं सहज ही मोती गहरे पानी में
बढ़ता दुगना उत्साह इसी हैरानी में
मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो
क्या कमी रह गई, देखो और सुधार करो
जब तक न सफल हो, नींद चैन को त्यागो तुम
संघर्ष का मैदान छोड़ मत भागो तुम
कुछ किये बिना ही जय जयकार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।

पहले प्रयास में पहला पड़ाव अर्थात् प्रीलिम्स में नाकामी, लेकिन दूसरे ही प्रयास में यूपीएससी की प्रतिष्ठित (सिविल सेवा परीक्षा) में 106वी रैंक ला कर भारतीय पुलिस सेवा (आईपीएस) के लिए चयनित हो कर छोटे से नगर की प्रतिभा ने बता दिया कि 'मुट्ठी उसकी खाली हर बार नहीं होती,कोशिश करने वालों की हार नहीं होती' बस एक ही जुनून..एक ध्येय.. एक लक्ष्य.. देश के लिए कुछ कर गुजरना है.. तभी तो कंप्यूटर साइंस से बीएससी पासआउट यह युवा निकल पड़ी देश सेवा का लक्ष्य लेकर आईएएस / आईपीएस बनने..... मिशन एक ही था संतुष्टि बड़े- बड़े पैकेज से नही अपितु मां भारती की सेवा से ही हासिल हो सकती है......चुनौती थी तो हौसला था खुद को साबित करने का.. तभी तो निकल पड़ी देश सेवा को जीवन का ध्येय मान कर देश के दिल दिल्ली की और... देश की इस सबसे चुनौतीपूर्ण और प्रतिष्ठित परीक्षा में फतह आसान नही है पर 'हार को रखना अपने से दूर, क्योंकि जीत का कोई विकल्प नहीं होता' मंत्र को सफलता का आधार बना डाला माही राजेन्द्र शर्मा ने ... सफलता की यह कहानी है 'छोटे शहर की बड़ी प्रतिभा' माही शर्मा की.. देश की प्रतिष्ठित सिविल सेवा परीक्षा में 106वीं रैंक हासिल कर माही ने राजगढ़ की पावन धरा, धार जिले की माटी और ह्दयप्रदेश मध्यप्रदेश को गर्वित किया है...

संघ लोक सेवा आयोग (यूपीएससी) द्वारा आयोजित भारत की प्रतिष्ठित सिविल सेवा परीक्षा में चयनित होना देश के हर युवा का स्वप्न होता है...

माही टेक्नोलॉजी की जानकार है तो साहित्य- संस्कृति और साइंस के पहलूओं की अनूठी समझ भी रखती है , तो वे एक बेहतर स्पीकर भी है... वाद- विवाद प्रतियोगिता में मध्यप्रदेश में विजेता रह कर नारी सशक्तिकरण के प्रतीक के रूप में नजीर बन कर उभरी है.... आसमान को छूने का हौसला रख सिविल सेवा के माध्यम से देश सेवा का जज्बा पाले है... तो छोटे से शहर की बिटिया ने सफलता का परचम फहरा कर जता दिया कि आज नारी हर क्षेत्र में सफलता के परचम फहरा रही है... क्या खूब कहा है 'खोल दे पंख मेरे, कहता है परिंदा...अभी और उड़ान बाकी है, जमीन नहीं है मंजिल मेरी, अभी पूरा आसमान बाकी है...' यह पंक्तियां सटीक बैठती है अद्भुत प्रतिभा की धनी माही पर... उनकी सक्सेस स्टोरी जानिए ...

पहले प्रयास में नाकामी, दूसरे में आईपीएस क्रेक .....

माही को इतनी बड़ी सफलता की जानकारी दिल्ली में ही मिली... सीनियर जर्नलिस्ट राजेश शर्मा की माही शर्मा से बातचीत के अंश...

प्रश्न- यूपीएससी सिविल सेवा में कैरियर बनाने का लक्ष्य कब तय किया था?

माही - स्कूली शिक्षा के दौरान प्रशासनिक अधिकारी बनने का लक्ष्य निर्धारित किया था, पर होलकर साइंस कालेज इंदौर से बीएससी करने के दौरान तय कर लिया था देश सेवा करना है सिविल सर्विसेज के माध्यम से...

प्रश्न- पहले प्रयास की असफलता ने आपको हौसला कैसे दिया ?

माही - तैयारी के लिए दिल्ली मैं 2022 में ही आई थी, पहला प्रयास बिना तैयारी के दिया था इसलिए बिल्कुल भी निराश नही थी। हां 2023 में दूसरा प्रयास कड़ी मेहनत के साथ दिया सो चयनित होने को लेकर आशवस्त थी।

प्रश्न- आपने वैकल्पिक विषय के रूप में क्या रखा था ?

माही - मैंने समाजशास्त्र को वैकल्पिक विषय के रूप में रखा था।

प्रश्न- दिल्ली के किस कोचिंग संस्थान में आपने कोचिंग ली थी?

माही - नेक्स्ट आईएएस कोचिंग इंस्टीट्यूट दिल्ली से कोचिंग ली थी...

प्रश्न- इतनी बड़ी सफलता का श्रेय किसे देना चाहेगी?

माही- ईश्वर, माता- पिता, गुरूजनों खासकर राजगढ़ के मेरे प्रारंभिक शिक्षकों को सफलता का श्रेय देना चाहुंगी... दिल्ली में मेरे कोचिंग संस्थान नेक्स्ट आईएएस कोचिंग इंस्टीट्यूट का मेरी सफलता में बड़ा योगदान है..

बेहद प्रतिभाशाली माही शर्मा भारत के स्वर्णिम भविष्य के प्रति आशांवित है उनकी स्वरचित कविता के अंश... 'अपनी कविता से कुछ ऐसा मुल्क गढ़ू.. जो हर दिशा और हर दशा में अपराजित हो. जब भी भारत का स्वर्णिम भविष्य वाचु.. तो जिव्हा पर मां शारदै विराजित हो'।

नौंवा दिवस

नौंवा स्वरूप सिद्धिदात्री

मां सिद्धिदात्री आपको जीवन में अद्भुत सिद्धि, क्षमता प्रदान करती हैं ताकि आप सब कुछ पूर्णता के साथ कर सकें।

सिद्धि का क्या अर्थ है। सिद्धि, सम्पूर्णता का अर्थ है विचार आने से पूर्व ही काम का हो जाना। आपके विचारमात्र, से ही, बिना किसी कार्य किये आपकी इच्छा का पूर्ण हो जाना यही सिद्धि है।

अयोध्या में आज रहेगी रामनवमी की 'धूम'

● दोपहर में 12 बजे होगा रामलला का सूर्य तिलक ● स्वर्ण जड़ित पीली-गुलाबी पोशाक पहनेंगे रामलला

अयोध्या (एजेंसी)। कल बुधवार को रामनवमी है। अयोध्या में इस मौके पर दोपहर 12 बजे रामलला का सूर्य तिलक होगा। इस दौरान अभिजीत मुहूर्त रहेगा। वाल्मीकि रामायण के मुताबिक त्रेतायुग में इसी समय श्रीराम का जन्म हुआ था। श्रीराम जन्म पर पूजा और व्रत करने की परंपरा है। पूजा के लिए करीब ढाई घंटे का एक ही मुहूर्त है, जो सुबह 11.05 बजे से दोपहर 1.35 बजे तक रहेगा। 1992 से रामलला के मुख्य पुजारी रहे सत्येंद्र दास और मौजूदा पुजारी पं. संतोष तिवारी से आसान पूजा विधि लिखवाई। इस विधि के मुताबिक आप घर में ही श्रीराम की पूजा कर सकते हैं। दोपहर 12 बजे जब रामलला का सूर्य तिलक होगा, उस समय केदार, गजकेसरी, पारिजात, अमला, शुभ, वाशि, सरल, काहल और रवियोग बनेंगे। इन 9 शुभ योग में रामलला का सूर्य तिलक होगा। वाल्मीकि रामायण में लिखा है कि राम जन्म के समय सूर्य और शुक्र अपनी उच्च राशि में थे। चंद्रमा खुद की राशि में मौजूद थे। इस साल भी ऐसा ही हो रहा है। वाराणसी के प्रो. रामनारायण द्विवेदी और पुरी के डॉ. गणेश मिश्र के मुताबिक सितारों का ये संयोग देश के लिए शुभ संकेत है। अयोध्या में 17 अप्रैल को दोपहर 12 बजे जहां सूर्य तिलक से भगवान रामलला का जन्मोत्सव शुरू होगा। इस दिन रामलला स्वर्ण आभूषण और रत्न जड़ित पोशाक में अद्भुत दर्शन देंगे। उनकी रत्न जड़ित पोशाक दो रंगों में बनी है- पीली और गुलाबी। वस्त्रों पर स्वर्ण धागों से सिलाई-कढ़ाई की गई है। रामलला को मुकुट, कुंडल, हार, तिलक, बाजूबंद, हाथों के कड़े पहनाए जाएंगे। यानी रामलला के सिर से लेकर पैर के अंगूठे तक सोने और हीरे-पन्ने के आभूषण होंगे। सोने के तार वाला धनुष-बाण भी होगा। उनके मस्तक पर चंदन का लेप होगा, उनमें माणिक्य को पीसकर मिलाया जाएगा, ताकि रोशनी में प्रभु का मस्तक दमकता रहे। रामनवमी पर 20 घंटे तक रामलला के दर्शन होंगे। ब्रह्म मुहूर्त में मंगला आरती के बाद यानी सुबह 3.30 बजे से रात 11 बजे तक दर्शन होंगे। दर्शन के बीच में ही रामलला का अभिषेक और श्रृंगार होगा। रामनवमी के दिन मंदिर 5 घंटे ज्यादा खुला रहेगा, लेकिन पूजा के लिए दर्शन के बीच में 2 से 5 मिनट के लिए भगवान का परदा गिरता रहेगा। मंदिर के पुजारी संतोष तिवारी बताते हैं कि रामलला का जन्म उत्सव 17 अप्रैल को दोपहर ठीक 12 बजे होगा।

विषय-''भारत की ज्ञान विज्ञान परम्परा'' विषय पर जयंत स्मृति व्याख्यान का आयोजन

भोपाल। विज्ञान भारती मध्य भारत प्रांत द्वारा स्व. जयंतराव सहस्त्रबुद्धे के जन्मदिवस पर ''भारत की ज्ञान विज्ञान परम्परा'' पर व्याख्यान का आयोजन दिनांक 17 अप्रैल 2024 को राज्य पशुपालन प्रशिक्षण संस्थान सभागार, कुक्कुट भवन, वैशाली नगर भोपाल में सायं 5 बजे से आयोजित किया जायेगा।

इस कार्यक्रम के मुख्य वक?ता प्रसिद्ध पुरातत्वविद, साउथ एशियन आर्केलाजी सोसायटी के संस्थापक एवं डेक्कन कालेज के पूर्व कुलपति डॉ. वसंत शिंदे होंगे। डॉ. वसंत शिंदे हड़प्पा संस्कृति की राखीगढी साइट के डीएनए परीक्षण के लिये भी विश्व प्रसिद्ध है। इस कार्यक्रम में प्रवेश एवं शुल्क नियामक समिति के अध्यक्ष प्रो. रविन्द्र रामचन्द्र कान्हेरे विशिष्ट अतिथि होंगे। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अशोक पाण्डेय, माननीय प्रांत संघचालक मध्यभारत प्रांत द्वारा की जायेगी।

विदित है कि स्व. जयंतराव सहस्त्रबुद्धे एक प्रसिद्ध चिंतक एवं दार्शनिक रहे हैं, जिन्होंने विज्ञान को एक स्वदेशी आंदोलन के रूप में आमजन तक विज्ञान की पहुंच पर अपने अंतिम समय तक कार्य किया, उनकी स्मृति में यह व्याख्यानमाला आयोजित की जा रही है। श्री सहस्त्रबुद्धे द्वारा रचित पुस्तक ''भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में भारतीय वैज्ञानिकों का योगदान'' एवं इस पर उनके व्याख्यान पूरे देश में चर्चित रहे हैं। इस कार्यक्रम में विज्ञान भारती मध्यभारत प्रांत मीडिया के माध्यम से समाज के प्रबुद्ध नागरिकों, गणमान्य व्यक्ति, शिक्षकों,प्राध्यापकों एवं विद्यार्थियों से उपस्थित रहने की अपील करता है तथा आपसे अपेक्षा है कि कार्यक्रम स्थल पर अपने प्रतिनिधि को भेजने का कष्ट करें ताकि यह कार्यक्रम समाज के समक्ष व्यापक रूप से प्रकाशित एवं प्रसारित हो सके।

रातभर पूछताछ नहीं कर सकते, नींद मानवीय अधिकार

मुंबई (एजेंसी)। बॉम्बे हाई कोर्ट ने सोमवार को मनी लॉन्ड्रिंग मामले में एक बुजुर्ग व्यवसायी से रातभर पूछताछ के लिए प्रवर्तन निदेशालय (ईडी) को फटकार लगाई। हाई कोर्ट ने कहा कि सोने का अधिकार एक बुनियादी मानवता का अधिकार है। इसका उल्लंघन नहीं किया जा सकता। मामला यूं है कि बुजुर्ग व्यवसायी ने ईडी की गिरफ्तारी के खिलाफ कोर्ट में याचिका डाली थी। जिसमें उल्लेख किया था कि उससे रात से अगली सुबह साढ़े तीन बजे तक पूछताछ की गई। फिर सवेरे गिरफ्तार कर लिया गया। मामले में सुनवाई न्यायमूर्ति रेवती मोहिते-डेरे और न्यायमूर्ति मंजूषा देशपांडे की खंडपीठ ने की। पीठ ने कहा कि बयान रात में दर्ज नहीं किए जाने चाहिए क्योंकि इससे उसके सोचने-समझने की क्षमता प्रभावित हो सकती है। इस तरह की प्रथा को समाप्त किया जाना चाहिए।

कयामत की निशानी...

मक्का और मदीना के रेगिस्तान अब हो रहे हरे-भरे

● *अनोखे बदलाव देख सहमे लोग, बोले-पैगंबर ने कर दी थी भविष्यवाणी*

रियाद (एजेंसी)। सऊदी अरब के रेगिस्तान में आश्चर्यजनक रूप से कुछ असामान्य बदलाव हाल के सालों में सामने आए हैं। भारी बारिश के कारण मक्का और मदीना के आसपास एक जीवंत हरा-भरा नखलिस्तान बन रहा है। रेगिस्तानी इलाके में आती हरियाली स्थानीय लोगों के साथ-साथ आगंतुकों को भी आकर्षित कर रही है। भारी बारिश ने इस बंजर परिदृश्य को समृद्ध वनस्पतियों के हरे-भरे आश्रय में बदल दिया है। रेगिस्तान की मुश्किल परिस्थितियों के बीच अचानक जीवन का उभार प्रकृति के लचीलेपन और पुनर्जीवन की क्षमता का गवाह बन रहा है। रिपोर्ट के मुताबिक, बारिश के आगमन से सूखी धरती पुनर्जीवित हो गई है, जो इसके सामान्य बंजर स्वरूप के उलट है। यह नखलिस्तान ना केवल एक आश्चर्यजनक दृश्य प्रदान करते हुए नई जैव विविधता को भी आश्रय दे रहा है। ये क्षेत्र में विभिन्न प्रकार के वन्यजीवों को भी आकर्षित कर रहा है। सऊदी अरब के विशाल रेगिस्तानी विस्तार के एक हिस्से में विशेष रूप से मक्का और मदीना के पवित्र शहरों के आसपास के क्षेत्र में हाल ही में हुई भारी वर्षा के चलते ये आश्चर्यजनक परिवर्तन हुआ है। बारिश ने इन पहले के शुष्क और उजाड़ परिदृश्यों को पुनर्जीवित कर दिया है, जिससे यह हरियाली की उज्ज्वल छटाओं से खिल उठा है। इस क्षेत्र में बदलाव का श्रेय बारिश के पानी को दिया जा रहा है। पानी के प्रवाह ने शुष्क मिट्टी को पुनर्जीवित किया, जिससे समृद्ध वनस्पति के विकास को बढ़ावा मिला है। सोशल मीडिया पर भी इस बात की चर्चा है कि कैसे भारी बारिश के बाद मक्का और मदीना के पास रेगिस्तान के कुछ हिस्से हरे हो गए हैं। सोशल मीडिया में ऐसी कई तस्वीरें देखी जा सकती हैं, जिसमें ऊंटों को हरे-भरे वनस्पति खाते हुए दिखाया गया है। ये वह इलाके हैं, जहां रेत ही रेत थी और ये पूरी तरह से बंजर थे। बारिश के बाद की तस्वीरों में ऊंटों को ताजी घास पर चरते हुए दिखाया गया है। ऐसा दृश्य आम तौर पर शुष्क क्षेत्रों में शायद ही कभी देखा जाता है। इस बदले परिदृश्य पर सोशलम मीडिया पर कई तरह के दावे किए गए हैं। इसमें कुछ दिलचस्प टिप्पणियां और प्रतिक्रियाएं भी आई हैं। इन टिप्पणियों में दावा किया गया है कि ये कयामत के पास आने की निशानी है, जिसके बारे में 1400 साल पहले पैगंबर मोहम्मद ने बता दिया था।

राहुल बोले-मोदी 5-6 बड़े बिजनेसमैन की कठपुतली हैं

● केरल में रोड शो के दौरान कहा-आरएसएस और बीजेपी संविधान को नष्ट कर रही

नई दिल्ली (एजेंसी)। कांग्रेस नेता राहुल गांधी के चार दिन के केरल दौरे का मंगलवार को दूसरा दिन है। उन्होंने आज कोझिकोड के कोडियाथुर में रोड शो किया। इस दौरान राहुल ने कहा- आरएसएस और बीजेपी कथित तौर पर संविधान को नष्ट करने की कोशिश कर रही है। पीएम मोदी भारत के 5-6 बड़े बिजनेसमैन की कठपुतली बन गए हैं। मोदी में देश चलाने की समझ नहीं है। उनका काम लोगों को असली मुद्दों से भटकाना है। जब लोग कोविड से मर रहे थे, तब पीएम कह रहे थे थाली बजाओ। इस पर मीडिया ने उन्हें जीनियस कहा। अगर देश के किसी अन्य नागरिक ने थाली बजाओ कहा होता तो उसे लाठी से पीटा जाता या जेल में डाल दिया जाता। इसके अलावा एएनआई को दिए इंटरव्यू में इलेक्टोरल बॉन्ड को लेकर मोदी के जवाब पर राहुल ने कहा- वे कहते हैं कि राजनीति में पारदर्शिता लाने के लिए ऐसा स्कीम लाई गई थी। अगर ऐसा था तो नाम क्यों छिपा रखे थे।

रामनवमीं के उपलक्ष में डॉ. राधावल्लभ त्रिपाठी से संवाद कार्यक्रम

भोपाल। वैश्विक हिंदी परिवार की साप्ताहिक विमर्श श्रृंखला के अंतर्गत रामनवमी की पूर्व संध्या पर भोपाल निवासी भारतीय वांगमय एवं संस्कृत के प्रख्यात विद्वान डॉक्टर राधावल्लभ त्रिपाठी से 'वाल्मीकि और तुलसी के राम' विषय पर संवाद कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर केंद्रीय हिंदी संस्थान के पूर्व उपाध्यक्ष एवं वैश्विक हिंदी परिवार के अध्यक्ष श्री अनिल जोशी विशिष्ट अतिथि के रूप में उपस्थित रहे। प्रारंभ में वैश्विक हिंदी परिवार के संयोजक डॉ. जवाहर कर्नावट ने विषय परिवर्तन करते हुए अतिथियों का स्वागत किया। डॉ. त्रिपाठी ने लेखक वरुण कुमार से किए गए संवाद में वाल्मीकि और तुलसी दोनों महाकवियों द्वारा राम के बारे में प्रकट की गई अवधारणाओं और जिज्ञासाओं का समाधान किया। त्रिपाठी ने राम की लौकिकता बनाम अलौकिकता, उनमें इतिहास बनाम मिथक, रामकथा में वाल्मीकि और तुलसी दोनों महत्वपूर्ण कवियों द्वारा अपने युगानुरूप परिवर्तन-परिमार्जन, वर्तमान समय में रामकथा की प्रासंगिकता, रामकथा का ऐतिहासिक विकासक्रम, राम एवं कृष्ण में वैदिक यज्ञ संस्कृति एवं परवर्ती योग-साधना का प्रभाव, रामकथा के अप्रिय प्रसंगों (शंबूक-वध एवं सीता-वनवास) के बारे में सामान्य जन की आपत्तियां आदि के बारे में विस्तार से चर्चा की। अनिल जोशी ने अपने सानिध्य वक्तव्य में इस बात को रेखांकित किया कि रामकथा को आजादी के उपरांत एक नकारात्मक अर्थ में व्याख्यायित करने की कोशिश की जाती रही है। टीवी धारावाहिकों में भी इसके उन प्रसंगों को प्रमुखता से दिखाया गया जो प्रक्षिप्त हैं या जिनकी प्रमाणिकता संदिग्ध है। इसके बावजूद जनमानस में राम की जड़ें बहुत गहरी हैं। कार्यक्रम का समापन श्री जयशंकर यादव के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ। इस ऑनलाइन कार्यक्रम में भारत के अलावा 15 देशों के विद्वानों एवं अन्य श्रोताओं की भागीदारी रही।

ट्रक की चपेट में आए आरक्षक की मौत

इंदौर, एजेंसी। आरक्षक कमल पारगी 18 नवंबर 2018 की रात नियमित ड्यूटी के दौरान राजोदा बायपास चौराहा देवास जेल के पास तैनात था। वह रोड से नीचे खड़ा होकर ड्यूटी कर रहा था। इस दौरान ट्रक एमपी 06 एचसी 1782 का चालक लापरवाही पूर्वक वाहन चलाते हुए लाया और ट्रक को पलट दिया। ड्यूटी में तैनात कमल पारगी और एक अन्य ट्रक के नीचे दब गए। कमल की मौके पर ही मौत हो गई थी। पुलिस ने ट्रक चालक के खिलाफ आपराधिक प्रकरण दर्ज कर उसे हिरासत में ले लिया। कमल की पत्नी पूनमबाला, दो पुत्र और अन्य ने

एडवोकेट एलएन यादव के माध्यम से ट्रक का बीमा करने वाली बीमा कंपनी के खिलाफ क्षतिपूर्ति के लिए जिला न्यायालय में परिवाद प्रस्तुत किया। एडवोकेट यादव ने तर्क रखे कि कमल परिवार का इकलौता कमाऊ सदस्य था। उसकी असामयिक मौत से पत्नी, पुत्र, पुत्री, माता-पिता को अपूरणीय क्षति हुई है। बीमा कंपनी ने यह कहते हुए परिवाद का विरोध किया तो कमल के एक पुत्र को अनुकंपा नियुक्ति मिल चुकी है और हादसे के वक्त ट्रक चालक के पास वैध लायसेंस नहीं था। सोलहवे सदस्य मोटर दुर्घटना दावा अधिकार न्यायधीश राजेश कुमार अग्रवाल ने यादव के तर्कों से सहमत होते हुए बीमा कंपनी को आदेश दिया कि वह मृतक के आश्रितों को क्षतिपूर्ति के रूप में 52 लाख तीन हजार रुपये का भुगतान एक माह के भीतर करे।

मप्र बोर्ड की पांचवी-आठवीं परीक्षा के परिणाम इसी सप्ताह जारी होंगे

इस बार मार्च में आयोजित हुई परीक्षा में करीब एक लाख परीक्षार्थी शामिल हुए थे।

इंदौर, एजेंसी। राज्य शिक्षा केंद्र द्वारा इस बार बोर्ड पैटर्न में पांचवीं और आठवीं आयोजित की गई थी। इन परीक्षाओं का मूल्यांकन भी अप्रैल माह में शुरू होकर पूरा हो गया है। अब चिन्हित कापियों का दोबारा मूल्यांकन किया जा रहा है। यह काम भी तकरीबन पूरा हो चुका है। राज्य शिक्षा केंद्र से मिली जानकारी के अनुसार, पांचवीं और आठवीं परीक्षा के परिणाम इसी सप्ताह में जारी हो सकते हैं। इस बार मार्च में

आयोजित हुई परीक्षा में करीब एक लाख परीक्षार्थी शामिल हुए थे। जिला परियोजना समन्वयक शांता स्वामी भार्गव ने बताया कि इस बार 300 से अधिक परीक्षा केंद्रों पर परीक्षाएं आयोजित की गई थीं, जिसमें 1200 से अधिक शिक्षकों की ड्यूटी लगी थी। परीक्षाएं खत्म होते ही मूल्यांकन कार्य भी शुरू हो गया था। कुछ दिनों पहले राज्य शिक्षा केंद्र से निर्देश जारी हुए हैं, जिसमें जिले की करीब 40 हजार कापियों के अंक दोबारा जोड़े जा रहे हैं। यह काम भी पूरा होने को है। संभवत: इसी सप्ताह पांचवीं और आठवीं के परीक्षा परिणाम भी जारी कर दिए जाएंगे। हमारी कोशिश रहेगी कि इस बार समय पर अंकसूची जारी हो जाए। बता दें कि पिछले दो वर्षों से आठवीं कक्षा की अंकसूची का प्रकाशन नहीं हुआ था, जो कि इसी वर्ष हुआ है।

स्वामी ने बताया कि आठवीं की परीक्षा दे चुके विद्यार्थियों को नौवीं कक्षा में ब्रिज कोर्स में शामिल होने के लिए पहले ही बता दिया गया था। लेकिन अधिकांश विद्यार्थी स्कूल नहीं जा रहे हैं, जिसके चलते वे ब्रिज कोर्स में पीछे रह जाएंगे। ब्रिज कोर्स सिर्फ 30 अप्रैल तक ही चलेगा।

भाजपा के सामने 75 प्रतिशत मत हासिल करने का लक्ष्य तो कांग्रेस के सामने

वर्ष 2019 की स्थिति बनाए रखने की चुनौती

2019 में हुए लोकसभा चुनाव में भाजपा को 65.59 प्रतिशत तो कांग्रेस को मिले थे 31.97 प्रतिशत मत

इंदौर, एजेंसी। लोकसभा चुनाव के लिए होने वाले मतदान में एक माह से भी कम समय बचा है। दोनों ही प्रमुख राजनीतिक दल मतदाता को अपने पक्ष में करने के लिए रणनीति बना रहे हैं। कार्यकर्ताओं के दल मैदान में उतर चुके हैं। हैरान करने वाली बात यह है कि अब तक चुनावी माहौल नजर नहीं आ रहा। न प्रचार का परंपरागत शोर सुनाई दे रहा है, न झंडे बैनर से अटी सड़कें दिख रही हैं। इंदौर लोकसभा क्षेत्र में भाजपा और कांग्रेस के बीच सीधा मुकाबला है। वर्ष 1952 से लेकर अब तक इक्का-दुक्का मौकों को छोड़ दें तो इंदौर में कभी भी तीसरी पार्टी शक्तिशाली नहीं रही। वर्ष 2019 के चुनाव में भाजपा को 65.59 प्रतिशत मत हासिल हुए थे। उसने इस लोकसभा सीट को 5 लाख 47 हजार 754 मतों से जीता था। वहीं कांग्रेस को 31.97 प्रतिशत मत मिले थे। इस बार चुनाव में भाजपा ने जहां 75 प्रतिशत मत पाने का लक्ष्य रखा है, जबकि कांग्रेस के सामने पुराने प्रदर्शन को दोहराने की चुनौती है। दोनों ही राजनीतिक दलों के नेता अपने-अपने दावे कर रहे हैं। हालांकि किसके दावे में कितना दम है यह तो 4 जून को होने वाली मतगणना में स्पष्ट होगा।

वर्ष 2009 वाला प्रदर्शन नहीं दोहरा सकी कांग्रेस- वर्ष 1984 में हुए लोकसभा चुनाव में इंदौर लोकसभा सीट पर कांग्रेस के प्रकाशचंद सेठी ने जीत दर्ज की थी। इस चुनाव में कांग्रेस ने 56.83 प्रतिशत मत हासिल किए थे, जबकि उनके सामने मैदान में उतरे भाजपा के राजेंद्र धारकर को सिर्फ 37.86 प्रतिशत मत मिले थे। कांग्रेस इस चुनाव के बाद कभी भी इंदौर लोकसभा सीट पर जीत दर्ज नहीं कर सकी। वर्ष 1989 में शुरू हुआ उसकी पराजय का सिलसिला सतत जारी

रहा। वर्ष 1989 से वर्ष 2019 तक नौ लोकसभा चुनाव हुए और हर बार जीत भाजपा को मिली।

वर्ष 2009 में जरूर कांग्रेस ने भाजपा को जोरदार टक्कर दी थी। उस चुनाव में भाजपा की प्रत्याशी सुमित्रा महाजन को 48.77 प्रतिशत मत मिले थे, जबकि कांग्रेस के सत्यनारायण पटेल को 47.33 प्रतिशत। महाजन ने यह चुनाव 11,480 मतों से जीता था। हालांकि यह जीत आठ बार की सांसद और लोकसभा की पूर्व अध्यक्ष सुमित्रा के संसदीय सफर की सबसे छोटी जीत थी। कांग्रेस वर्ष 2009 के बाद से इंदौर में कभी भी मुकाबले में नजर नहीं आई।

भाजपा को युवा मतदाताओं पर विश्वास तो कांग्रेस को अल्पसंख्यक और दलितों की आस- 35 वर्ष से इंदौर सीट पर कब्जा जमाए बैठी भाजपा ने इस बार कुल मतदान का 75 प्रतिशत मत हासिल करने का लक्ष्य रखा है। पार्टी इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए युवा और पहली बार मतदान करने वालों पर ध्यान केंद्रीत कर रही है। यही वजह है कि पार्टी कालेजों, हास्टलों में शिविर आयोजित कर पार्टी की विचारधारा युवाओं तक पहुंचाने में जुटी है। इन शिविरों के माध्यम से सिर्फ विचारधारा ही नहीं पहुंचाई जा रही, बल्कि युवाओं को पार्टी से जोड़ने का काम भी हो रहा है। पार्टी नेतृत्व को विश्वास है कि युवाओं और नवमतदाताओं के भरोसे पार्टी इस बार 75 प्रतिशत के लक्ष्य को हासिल कर लेगी। इधर दूसरी तरफ कांग्रेस को अल्पसंख्यक और दलित मतदाताओं से उम्मीद है। उसे लगता है कि ये वर्ग उसके परंपरागत मतदाता हैं। इसके अलावा पार्टी युवाओं को पार्टी से जोड़ने की मुहिम भी चला रही है। हालांकि इसमें कितनी सफलता मिलेगी यह परिणाम ही बताएगा।

आसान नहीं होगा परंपरागत मतदाताओं की मानसिकता बदलना- भाजपा ने भले ही कुल मतों का 75 प्रतिशत हासिल करने का लक्ष्य तय कर लिया है, लेकिन जानकारों का कहना है कि कांग्रेस के परंपरागत मतों को भाजपा की तरफ मोड़ना आसान नहीं होगा। नए मतदाताओं तक पार्टी की विचारधारा पहुंचाना आसान होता है, लेकिन जो मतदाता दशकों से कांग्रेस से जुड़ा हुआ है, उसकी मानसिकता में बदलाव लाना मुश्किल होता है। ऐसे में भाजपा के लिए 75 प्रतिशत मत हासिल करने का लक्ष्य प्राप्त करना आसान नहीं होगा।

वर्ष 2019 में रहा भाजपा का सबसे अच्छा प्रदर्शन- भाजपा ने वर्ष 2014 में कुल मतदान का 64.93 प्रतिशत मत हासिल किए थे। उसे चार लाख 66 हजार मतों से जीत मिली थी। वर्ष 2019 में यह प्रतिशत मामूली बढ़कर 65.59 पर पहुंच गया, लेकिन उसकी जीत का अंतर करीब एक लाख बढ़कर पांच लाख 47 हजार से ऊपर पहुंच गया। ऐसे में अगर पार्टी वर्ष 2019 में अपने पक्ष में मिलने वाले मतों में मामूली बढ़त भी बना लेती है तो उसकी जीत के अंतर में उछाल आ सकता है।

युवाओं में बढ़ रहा तनाव, अवसाद, चिंता, परिवार के सदस्य नहीं समझ रहे बीमारी

इंदौर, एजेंसी। युवाओं में नौकरी, पारिवारिक चिंता, आर्थिक स्थिति के कारण तनाव, अवसाद, बढ़ता जा रही है। कई मामलों में समाधान नहीं मिलने के कारण वे आत्महत्या के लिए प्रेरित हो रहे हैं। शहर में हर वर्ष सैकड़ों लोग इसी के चलते आत्महत्या कर रहे हैं। इसका एक कारण यह भी है कि इनके मनोरोग को परिवार के सदस्य ही नहीं समझते हैं। हाल ही में इंदौर में एक युवती ने 16वीं मंजिल से कूदकर आत्महत्या कर ली। युवती सोमेटाइजेशन से पीड़ित थी। ऐसे कई लोग हैं, खासकर युवा जो सोमेटाइजेशन से पीड़ित हैं। उन्हें समय पर इलाज उपलब्ध करवाकर बचाया जा सकता है। सरकार द्वारा मनोरोग के लिए संचालित टेलिमानस हेल्पलाइन में मार्च में 1700 से अधिक लोगों ने काउंसलिंग ली। इसमें सबसे अधिक फोन नींद न आने की शिकायत को लेकर आए, वहीं मनोदशा की उदासी को लेकर काफी फोन आ रहे हैं। इसमें यह बता रहे हैं कि वे खुश नहीं है। उन्हें ऐसा लग रहा है कि समझने वाला भी कोई नहीं है। मनोचिकित्सक डा. कृष्णा मिश्रा ने बताया कि सोमेटाइजेशन को लेकर लोगों में जागरूकता की कमी है। इसमें शरीर के किसी एक हिस्से में दर्द होता है और इसका कारण भी समझ नहीं आ पाता है। इस कारण अकसर व्यक्ति लंबे समय तक पीड़ा से गुजरता है। इनके मन में आसपास के सामान्य लोगों की तरह दैनिक जीवन न जी पाने का अफसोस रहता है। इसमें पीड़ित के आसपास नकारात्मक वातावरण बन जाता है। वह नकारात्मक चीजों को ही देखना पसंद करता है। हाल ही में एक मरीज काउंसलिंग के लिए आया था, जिसमें उसे सांस फूलने की शिकायत थी। जांच में कुछ सामने नहीं आ रहा था। मरीज को लग रहा था कि उसे अस्थमा हो सकता है, लेकिन वह सोमेटाइजेशन से पीड़ित है।

सम्मेलनों के बाद मैदान में उतरने की बारी

पार्टी नेताओं का कहना है कि नामांकन फार्म जमा करते ही कार्यकर्ता मैदान में उतर जाएंगे

इंदौर, एजेंसी। राष्ट्रीय अध्यक्ष जेपी नड्डा की क्लास के बाद भाजपा में आई कार्यकर्ता सम्मेलनों की बाढ़ थमने का नाम नहीं ले रही। हालत यह है कि कार्यकर्ता भी इनसे परेशान होने लगे हैं। ये सम्मेलन कार्यकर्ताओं में उत्साह भरने और उन्हें अति आत्मविश्वास से बचाने के लिए शुरू किए गए थे, लेकिन इनकी अधिकता की वजह से कार्यकर्ताओं में सुस्ती छाने लगी है। पार्टी नेताओं का कहना है कि नामांकन फार्म जमा करते ही कार्यकर्ता मैदान में उतर जाएंगे। सम्मेलन भले ही सफल रहे, लेकिन नेताओं को अब कार्यकर्ताओं के अति आत्मविश्वास से ग्रसित होने का डर सता रहा है। भय छाने लगा है कि कहीं ऐसा न हो कि इन आयोजनों से कार्यकर्ताओं में इतनी सुस्ती छा जाए कि वह ऐन मौके पर घर से बाहर ही नहीं निकलें। यही वजह है कि नेता भी अब इन सम्मेलनों के बजाय बैठकों पर जोर दे रहे हैं।

चाय से गरम केटली

चाय से ज्यादा गरम केटली वाली बात राऊ विधानसभा में इन दिनों सटीक बैठ रही है। विधायक की एक करीबी केटली का व्यवहार विधानसभा में चर्चा का विषय बना हुआ है। विधायक के ये करीबी उनका पूरा कामकाज संभाले हुए हैं। विधायक भी इन पर आंख मूंदकर भरोसा कर रहे हैं। हालत यह है कि कार्यकर्ता तो ठीक आमजन भी विधायक के पास समस्या लेकर पहुंचते हैं, तो वे कह देते हैं कि उससे बात कर लो। ऐसे में विधानसभा के मतदाता समझ नहीं पा रहे कि उन्होंने विधायक चुना किसे है। विधायक और उनकी खास केटली के व्यवहार की वजह से क्षेत्र के कार्यकर्ता और नेता उनसे दूरी बनाने लगे हैं। वर्षों से विधायक के साथ रहे लोगों ने भी उनसे किनारा करना शुरू कर दिया

है। इतिहास गवाह है कि नेताओं ने जब भी आंख मूंदकर ऐसी गलती की, उन्हें धोखा हुआ। बाद में उनके पास सिवाय पछताने के कुछ नहीं बचा।

आचार संहिता लागू है, काम सब ठप हैं- लोकसभा चुनाव के चलते लागू आचार संहिता का सीधा असर नगर निगम मुख्यालय में नजर आ रहा है। व्यवस्थाएं ठप हैं और कर्मचारी सुस्ता रहे हैं। शिकायत लेकर पहुंचने वालों की कोई सुनवाई नहीं हो रही। निगमायुक्त जरूर सुबह-सुबह सफाई व्यवस्था का जायजा लेने सड़क पर उतर रहे हैं, लेकिन उनके मौके से रवाना होते ही बाकी अमला घर की राह नाप रहा है। हालांकि यह पहला मौका नहीं है जब निगम मुख्यालय में ऐसा माहौल बना हो। हर बार आचार संहिता लगते ही अधिकारी, कर्मचारी आराम के मूड में आ जाते हैं। शिकायत लेकर पहुंचने वालों से कहा जा रहा है कि आचार संहिता लागू है, चार जून के बाद देखते हैं। ऐसी बात नहीं है कि वरिष्ठों को मुख्यालय से लेकर जोन कार्यालयों में चल रही इस लापरवाही की जानकारी नहीं, लेकिन पता नहीं क्यों वे आंख मूंदें बैठे हैं।

पार्किंग समस्या हल, अब चेंबर का मुद्दा- जिला न्यायालय की वर्षों पुरानी पार्किंग की समस्या के समाधान के बाद अब अभिभाषकों के बीच चेंबर को लेकर चर्चा होने लगी है। दरअसल, अभिभाषकों ने छह वर्ष पहले निर्माणाधीन इमारत में चेंबर के रजिस्ट्रेशन के नाम पर दस-दस हजार रुपये जमा किए थे। राशि जमा होने के बाद से अब तक वकीलों के चेंबर को लेकर कोई कार्रवाई नहीं हुई। यह पता चलने के बाद कि नई इमारत में चेंबर का तो कोई प्रविधान ही नहीं किया गया, वकील खुद को ठगा महसूस कर रहे हैं। मामला जबलपुर तक पहुंच चुका है। हाल ही में जिला न्यायालय प्रांगण में आयोजित एक कार्यक्रम में यह मुद्दा एक बार फिर उठा। इंदौर अभिभाषक संघ के अध्यक्ष ने मंच से इस मुद्दे को उठाते हुए मदद की गुहार भी लगा दी। उनके इस प्रयास के बाद वकीलों में एक बार फिर चेंबर मिलने की उम्मीदें जाग गई हैं।

मध्य प्रदेश के व्यापारी पहुंच रहे चांदनी चौक

दिल्ली के चुनाव में दिखेगा इंदौरी रंग

इंदौर, एजेंसी। आम चुनाव के मौसम में इंदौर और मप्र के व्यापारी कारोबारी भी चुनाव प्रचार करते नजर आएंगे। अनोखी बात तो ये है कि इंदौर, भोपाल, कटनी जैसे शहरों के व्यापारी अपने क्षेत्र या प्रदेश के किसी शहर गांव में नहीं बल्कि राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली में चुनावी प्रचार में मशगूल रहेंगे। प्रदेशभर से व्यापारी दिल्ली के चांदनी चौक में नजर आएंगे। शाहजहां के काल में बने दिल्ली के इस ऐतिहासिक मशहूर बाजार से भाजपा ने व्यापारियों के प्रतिनिधि को टिकट दे दिया है। असर ये है कि अब इंदौर से लेकर प्रदेश के तमाम शहरों के कारोबारी चांदनी चौक में पहुंचने लगे हैं। राष्ट्रीय स्तर पर व्यापारियों का प्रतिनिधि संगठन कन्फेडरेशन आफ आल इंडिया ट्रेडर्स (केट) के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रवीण खंडेलवाल को दिल्ली के चांदनी चौक से भाजपा ने उम्मीदवार घोषित किया है। केट देशभर में व्यापारियों के आंदोलन और मुद्दों पर आवाज उठाने के लिए पहचाना जाता है। बीते वर्षों में यह संगठन देशभर में जीएसटी खामियों से लेकर ई-कामर्स की परेशानियों तक पर हड़ताल और आंदोलन कर चुका है। नई ई-कामर्स नीति बनवाने से लेकर जीएसटी के सुधार के लिए आवाज उठाने वाले इस संगठन ने बीते सालभर में देशभर में बैठकें भी की थी। इंदौर समेत मप्र के तमाम प्रमुख व्यापारिक शहरों में केट के न केवल पदाधिकारी हैं, बल्कि इसकी स्थानीय कार्यकारिणी भी गठित है। ऐसे में अब तक आंदोलनों में साथ रहने वाले व्यापारी अब चुनाव में भी अपने नेता के लिए एक हो गए हैं।

दो हजार से ज्यादा कारोबारी पहुंचेंगे

इंदौर के कारोबारी और केट के राष्ट्रीय उपाध्यक्ष रमेश गुप्ता के अनुसार केट के राष्ट्रीय अध्यक्ष प्रवीण खंडेलवाल को टिकट देने से देश का व्यापारी प्रसन्न है। संभवत: पहली बार हो रहा है जब सीधे किसी व्यापारी को राजनीति में सीधे प्रतिनिधित्व का मौका मिलता दिख रहा है। केट ने बीते वर्षों में आनलाइन कारोबार पर सख्ती और नई नीति बनाने में सीधी भूमिका निभाई है। राष्ट्रीय अध्यक्ष के साथ मैं व अन्य पदाधिकारी लगभग हर प्रदेश के हर बड़े शहर में बैठकें कर चुके हैं।

व्यापार की बेहतरी के लिए केट के पास नीतियों और सुधार का खांका तैयार है। ऐसे में हर व्यापारी को उम्मीद है कि उसकी समस्याएं और मांग आसानी से केंद्र सरकार तक पहुंचने का मौका आगे मिलेगा, इसलिए व्यापारी दलगत राजनीति से ऊपर उठकर दिल्ली के चुनाव में योगदान देने के लिए पहुंच रहे हैं। इस बार आम चुनाव अलग-अलग चरणों में होने का लाभ भी मिल रहा है। इंदौर में मतदान 13 मई को है, जबकि दिल्ली में 25 मई को। ऐसे में व्यापारी अपने यहां बिना मतदान चूके आसानी से दिल्ली भी पहुंच सकता है। प्रदेशभर से केट के साथ ही वैश्य समाज के प्रतिनिधि भी दिल्ली चुनाव में अपना योगदान देने पहुंच रहे हैं। मप्र से करीब दो हजार कारोबारी पूरे चुनाव के दौरान दिल्ली पहुंचेंगे। वहां पहुंच रहे प्रदेश के प्रतिनिधि मुख्य तौर पर कारोबारी, क्षेत्र के समाजजनों और परिचितों के बीच में सघन संपर्क करने में भूमिका निभाएंगे। कुछ कारोबारी इसलिए भी पहुंचेंगे की भले ही वे प्रचार में सीधा योगदान न दे सकें लेकिन वहां जाकर अपना समर्थन तो जता ही सकेंगे।

11 लाख रुपए की अवैध शराब पकड़ी, पुलिस को चकमा देकर भागा ड्राइवर

इंदौर, एजेंसी। इंदौर जिले में लोकसभा निर्वाचन के मद्देनजर मदिरा के अवैध क्रय-विक्रय, परिवहन, भण्डारण की रोकथाम के लिए आबकारी विभाग के दलों द्वारा लगातार कार्यवाही की जा रही है. सहायक आबकारी आयुक्त मनीष खरे ने बताया कि प्रभारी सहायक जिला आबकारी अधिकारी रामचरण डावर के नेतृत्व में गश्त के दौरान सूचना प्राप्त हुई कि एक सफेद रंग की पिकअप इंदौर से राऊ होकर धार की तरफ शराब भरकर निकल रही है। आबकारी वृत्त महू अ उपनिरीक्षक अमर सिंह बघेल मय स्टाफ एवं वरिष्ठ अधिकारी को अवगत कराकर तुरंत बताए गए पते पर नाकेबंदी की गई। वाहन का पीछा कर वाहन को राऊ इंदौर एबी रोड पर पिपलिया मल्हार में ओवरटेक करके रोका गया।

दो मुख्यमंत्री बदले, एक भी क्लस्टर पूरा नहीं, औद्योगिक विकास के दावे पर सवाल

इंदौर, एजेंसी। प्रदेश की औद्योगिक राजधानी इंदौर के लिए विडंबना है कि चार साल में शहर में एक भी नया औद्योगिक क्लस्टर पूरा नहीं हो सका है। विपक्षी दल कांग्रेस को सत्ताधारी दल भाजपा पर निशाना साधने का मौका मिल गया है। 2018 में कनफेक्शनरी क्लस्टर के रूप में छोटे-मध्यम उद्योगों को अंतिम औद्योगिक क्षेत्र मिला था। इसके बाद घोषित हुए खिलौना (टाय) क्लस्टर और फर्नीचर क्लस्टर घोषित हुए, लेकिन पूरे नहीं हो सके। 2016 में इंदौर में खिलौना क्लस्टर की रूपरेखा बनी थी। लगभग चार साल पहले फर्नीचर क्लस्टर घोषित हुआ। खिलौना क्लस्टर की औपचारिक शुरुआत 2022 में तत्कालीन मुख्यमंत्री शिवराजसिंह चौहान और एमएसएमई मंत्री ओमप्रकाश सकलेचा ने करते हुए वर्चुअल फीता भी काट दिया। इसके बाद भी राऊ-रंगवासा में बने इस क्लस्टर में एक भी उद्योग खड़ा नहीं हो सका। असल में उद्योगों को कागज पर जमीन तो आवंटित कर दी गई लेकिन न तो पजेशन मिला, न वे कारखाना बना सके। सरकार के इस औद्योगिक क्षेत्र में बैंक लोन भी स्वीकृत नहीं कर रही है। दूसरी ओर फर्नीचर क्लस्टर की हालत ये है कि पहले जमीन चिह्नित तो कर ली, लेकिन बाद में शासन के ही दूसरे अंग वन विभाग ने उद्योग विभाग के कब्जे पर आपत्ति लगा दी। न शासन आपत्ति दूर करवा सका, न फर्नीचर क्लस्टर जमीन पर आ सका। 2018 में कमल नाथ के मुख्यमंत्री रहते इंदौर में कनफेक्शनरी क्लस्टर घोषित हुआ। इसमें जमीन आवंटन हो गया और विकास कार्य पूरा होने के बाद फैक्ट्रियां भी संचालित होने लगीं।

कांग्रेस को इस पर निशाना साधने का मौका मिल गया है। कांग्रेस ने कहा कि औद्योगिक विकास के नाम पर भाजपा दिशाहीन है। बिना सोच और योजना के सिर्फ वाहवाही के लिए औद्योगिक क्षेत्र तो घोषित किए जाते हैं लेकिन असल में काम नहीं होता।

मुख्यमंत्री और नीति सब बदले

कांग्रेस के उद्योग एवं व्यापार प्रकोष्ठ के प्रदेश अध्यक्ष अजय चौरड़िया ने कहा कि नाथ की सरकार गिराने के बाद से भाजपा के प्रदेश में दो मुख्यमंत्री बदले। सरकार ने तीन साल पहले उद्योग नीति बदलकर क्लस्टर के विकास की जिम्मेदारी भी उद्योगपतियों पर ही डाल दी। सरकार ने अपनी जिम्मेदारी कम से कम कर ली फिर भी औद्योगिक क्षेत्र का विकास पूरा नहीं हो पाना बता रहा है कि काम कैसे हो रहे हैं।

केंद्र में दूसरी बार सत्ता मिली लेकिन इंदौर को एक भी नया औद्योगिक क्षेत्र नहीं दिया। उलटे निजी औद्योगिक क्षेत्र विकसित हो रहे हैं। हमें पता चला है कि फर्नीचर क्लस्टर में तो उद्योगपतियों ने प्लाट लेने लाइन में लगे उद्योगों को उनके रुपये भी लौटा दिए हैं।

साफ जाहिर है कि मेक इन इंडिया के सिर्फ झूठे नारे लगाए जा रहे हैं, जबकि राज्य के साथ केंद्र में भी भाजपा की सरकार है। जबकि सिर्फ 16 महीने में कांग्रेस सरकार ने सफलतापूर्वक इंदौर को नया क्लस्टर दे दिया था।

संपादकीय

विश्व युद्ध के मुहाने पर दुनिया?

ईरान द्वारा बदले की कार्रवाई के रूप में इजराइल पर भीषण हवाई हमला और अब इजराइल द्वारा जवाबी कार्रवाई की तैयारी के बीच दुनिया खतरनाक तीसरे विश्व युद्ध के मुहाने पर जा बैठी है। यदि महाशक्तियों ने इस टकराव को यहीं नहीं रोका तो इसके नतीजे समूचे विश्व को भुगतने पड़ेंगे। अर्थव्यवस्था ध्वस्त हो जाएगी। इसका कारण यह है कि ईरान और इजराइल दोनों देश बदले की आग में सुलग रहे हैं और कोई भी विवेकपूर्ण तरीके से नहीं सोच रहा है। इजराइल को अमेरिका का वरदहस्त है तो ईरान को रूस, चीन जैसी महाशक्तियां समर्थन दे रही हैं। ऐसे में विश्व युद्ध की आग कभी भी भड़क सकती है। ईरान और इजराइल की दुश्मनी तो चार दशकों से चली आ रही है। लेकिन पूरे विवाद को इजराइली सेना द्वारा सीरिया में ईरानी दूतावास पर हमले और ईरान की जवाबी कार्रवाई ने और भड़का दिया। ऐसे में पूरे मध्य पूर्व में तनाव और बढ़ गया है। अगर ताकत और क्षमता की बात की जाए तो ईरान और इजराइल में सीधी लड़ाई हुई तो इजराइल ही भारी पड़ेगा। ईरान लंबा युद्ध झेलने की स्थिति में नहीं है। गौरतलब है कि बीते 1 अप्रैल को दमिश्क स्थित ईरानी वाणिज्य दूतावास पर 1 अप्रैल को हमला हुआ था। इसमें ईरान के दो वरिष्ठ सैन्य कमांडरों की मौत हो गई थी। इसी के बाद ईरान ने जवाबी कार्रवाई की चेतावनी दी थी। इजराइल और ईरान में यह खूनी प्रतिद्वंद्विता भू राजनीतिक हालात के हिसाब से घटती-बढ़ती रहती है। इसकी नब्ज़ मध्य-पूर्व में अस्थिरता के मुख्य स्रोतों में से एक बन गई है। ईरान के शासक इजराइल को 'छोटा शैतान' मानते हैं, जो मध्य-पूर्व में अमेरिका का सहयोगी है। अमेरिका को वो 'बड़ा शैतान' बताते हैं। ईरान चाहता है कि अमेरिका और इजराइल इस क्षेत्र से गायब हो जाएं। गाज़ा में जारी हमास इजराइल युद्ध ने हालात को और भी बदतर बना दिया है। इन दोनों देशों के बीच यह कड़वाहट 1979 में ईरान में हुई इस्लामिक क्रांति के बाद आई। कट्टर इस्लाम में भरोसा रखने वाले ईरान के अयातुल्लाह खोमेनी इजराइल निर्माण के विरोधी और स्वतंत्र फिलीस्तीन के समर्थक थे। इजराइल को शक है कि इस्लामिक क्रांति के बाद वह परमाणु बम बना रहा है। ईरान फिलीस्तीनी गुरिल्लों को भी समर्थन और ट्रेनिंग दे रहा था। इसकी वजह यही थी कि ईरान खुद को नई इस्लामिक ताकत के रूप में पेश करना चाहता है। हालांकि ईरान के ये तेवर अरब देशों को पसंद नहीं हैं। वो कभी नहीं चाहेंगे कि शिया ईरान इतना ताकतवर हो। अगर ये लड़ाई लंबी चली तो आश्चर्य नहीं कि बड़ी महाशक्तियां भी इसमें कूद जाएं और दुनिया तीसरे विश्व युद्ध की ओर धकेल दी जाए। उधर यूरोप में यूक्रेन और रूस के बीच युद्ध खत्म होने का नाम ही नहीं ले रहा है। अगर ईरान व इजराइल भी भिड़ गए तो युद्ध की आग दूसरे देशों तक फैलने से रोकना मुश्किल होगा। ऐसे में भारत जैसे देशों की कठिनाइयां और बढ़ेंगी, जिसके ईरान और इजराइल दोनों ही दोस्त हैं। बिगड़ते हालात के मद्देनजर भारत ने दोनों देशों में रह रहे अपने नागरिकों को निकालने पर गंभीरता से विचार शुरू कर दिया है। इस मामले में संयुक्त राष्ट्र की भूमिका भी औपचारिक ही ज्यादा है। वह इस क्षेत्र में शांति का कोई सर्वमान्य फार्मूला नहीं ढूंढ पा रहा है। क्योंकि संरास में सबसे ज्यादा अमेरिका की चलती है। अमेरिका भी कभी नहीं चाहेगा कि इजराइल कमजोर और ईरान ताकतवर हो। कुल मिलाकर हालात बेहद चिंताजनक हैं। युद्ध रूके इसके लिए सभी देशों को हर संभव प्रयास करने चाहिए।

कालेधन जैसा है इलैक्टोरल बॉण्ड

नजरिया

वीरेन्द्र कुमार पैन्यूली
लेखक स्वतंत्र पत्रकार हैं।

चुनावी बॉण्ड असंवैधानिक करार कर उनसे राजनैतिक दलों को चुनाव फंडिंग न किये जाने के सुप्रीमकोर्ट के आदेश के बाद यह संज्ञान में रहना चाहिये कि कम-से-कम मान्य चुनावी प्रक्रियाओं के संदर्भ में चुनावी बॉण्ड से मिला धन शुचिता वाला धन न होकर काले धन के समतुल्य ही था। दुखद यह रहा कि जब प्रजातांत्रिक चुनावों में काले धन का वर्चस्व हर बीतते चुनावों के साथ बढ़ता ही जा रहा था, चुनावी बॉण्ड की गुमनामी धनराशि भी उसी रूप में इसमें मददगार भी हो रही थी। जब ये एन चुनावों के पहले जारी होते थे, तब तो खासकर इनसे पाये करोड़ों रूपयों से राजनैतिक दलों को चुनाव लड़ने में आसानी होती थी। लगभग पांच साल देरी से आये इस निर्णय से पहले चुनावों में गैर-बराबरी जारी थी। इससे कई दलीय उम्मीदवारों की हार-जीत पर असर भी पड़ा होगा।

जब चुनावी फंडिंग की चुनावी बॉण्ड योजना आई थी, तो संसदीय परम्परा के विशेषज्ञ सुभाष कश्यप का विचार था कि राजनैतिक दल चुनावों में कालेधन का भारी उपयोग करते हैं। राजनैतिक दलों को इन बॉण्डों को देने वालों का नाम जाहिर करना बाध्यकारी नहीं है, अतः पारदर्शिता का अभाव तो रहेगा ही। जिनका गैर-कानूनी काम किया गया है वे भी तो नेताओं के कहने पर उनके दलों को बॉण्ड दे सकते हैं। फर्जी कम्पनियों के माध्यम से राजनैतिक बॉण्ड खरीदकर राजनैतिक आकाओं के दलों को उपकृत करने की संभावनाओं से भी इन्कार नहीं किया जा सकता। ऐसा धन राजनैतिक इस्तेमाल के लिए शुचिता वाला धन कैसे हुआ?

अक्टूबर 2023 में पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त एसवाई कुरेशी का बयान था कि इलैक्टोरल बॉण्ड के पहले जो कुछ पारदर्शिता थी वह भी खत्म हो गई। पहले राजनैतिक दलों को बीस हजार रूपये और उससे ज्यादा धन देने वालों की सूची चुनाव आयोग के पास होती थी। वह उनको सार्वजनिक भी करता था, परन्तु इलैक्टोरल बॉण्ड जारी होने के बाद यह अनिवार्यता और पारदर्शिता भी नहीं रही। समाचारों में ही था कि नवम्बर 2023 में जिन पांच राज्यों में विधानसभा चुनाव हुये थे वहां जब्त राशि पिछले विधानसभा चुनावों के मुकाबले सात गुणा ज्यादा थी। यदि सालों के अंतराल के बाद 31 अक्टूबर 2023 से चुनावी बॉण्ड की वैधता पर पुनः शुरू हुई सुनवाई पूरी होने के बाद भी उच्चतम न्यायालय की पांच न्यायाधीशों की

संवैधानिक पीठ ने अपना निर्णय 2 नवम्बर 2023 को सुरक्षित न रखा होता तो शायद नवम्बर 2023 के विधानसभा चुनावों के पहले चुनावी बॉण्ड जारी भी न होते। स्टेट बैंक ऑफ इंडिया की 29 शाखाओं से 29वीं बार 6 नवम्बर से 20 नवम्बर 2023 के दौरान चुनावी बॉण्डों की बिक्री, खरीददारी हुई थी। पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों में जो दो नवम्बर के काफी बाद हुये थे, कुछ राजनैतिक दलों को चुनावी बॉण्ड का फायदा मिल ही गया।

पहली बार चुनावी बॉण्ड मार्च 2018 में बिके थे। इसके बाद वे विभिन्न सालों में विभिन्न अवधियों में बिकते रहे। अप्रैल 2021 में भी गैर-सरकारी संस्था एडीआर (एसोसियेशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफार्म्स) ने सुप्रीमकोर्ट में दायर याचिका में तब कुछ राज्यों में होने वाले विधानसभा के चुनावों के पूरे होने तक इलैक्टोरल बॉण्ड की बिक्रियों पर रोक लगाने की मांग की थी, किन्तु बेंच ने उसे खारिज कर दिया। केन्द्र ने एक अप्रैल 2021 से 10 अप्रैल 2021 तक बॉण्ड जारी भी किये थे। तब याचिकाकर्ता संस्था एडीआर का कहना था कि गैर-कानूनी और अवैध धन की मुखौटा कम्पनियों के माध्यम से फंडिग की और ज्यादा होने की संभावनायें बढ़ जायेगी। दो नवम्बर 2023 को चुनावी बॉण्डों की वैधता पर अपने निर्णय को सुरक्षित रखने के पहले अदालत ने ये टिप्पणी भी की थी कि सरकार की यह दलील मानना मुश्किल है कि मतदाताओं को राजनैतिक चंदों का स्त्रोत जानने का अधिकार नहीं है।

भारत आये भारतीय रिजर्व बैंक के पूर्व गर्वनर रघुराम राजन 12 दिसम्बर 2023 को बिना लाग-लपेट यह कह गये थे कि बॉण्ड चुनावी फण्डिंग का नकदी से भी ज्यादा खराब विकल्प है। यह गैर-पारदर्शी है। केवल स्टेट बैंक ऑफ इण्डिया ही जानता है कि चुनावी बॉण्ड से पैसे देने वाला कौन है। गुमनाम चुनावी बॉण्ड राजनैतिक दलों के बीच गैर-बराबरी के मैदान तैयार करता है। किसी काम के एवज में भी राजनैतिक दल चुनावी बॉण्ड से पैसे ले सकते हैं। सत्तारूढ़ दल तो चुनावी बॉण्ड से अकूत धन पाकर चुनावी खर्चे के चेक काट सकता है, किन्तु विपक्ष ऐसा नहीं कर सकता। चुनाव बराबरी में लड़ा जा सके इसके लिये विपक्ष को भारी नकदी का इंतजाम करना पड़ता है। काले धन पर निर्भर रहना पड़ता है। उन्हीं दिनों राज्यसभा सांसद धीरेन्द्र साहू से जुड़े ठिकानों में तीन सौ करोड़ रूपये की बरामदगी भी सुर्खियों में थी।

यह विडम्बना ही थी कि दो जनवरी 2018 को अधिसूचित जिस चुनावी बॉण्ड योजना को वैकल्पिक पारदर्शी राजनैतिक फण्डिंग की पहल बताया गया था उससे भ्रष्टाचार पनपने व सत्तारूढ़ दलों को ही ज्यादा फायदा पहुंचने की शंकायें छः साल पूरे होते-होते काफी गहरा गई। बॉण्डों से प्राप्त धन चुनाव आयोग व्दारा सत्यापित एक अलग एकाउण्ट में रखना होता था। नियमतः कार्पोरेट या निजी दानदाता विभिन्न मूल्यों के बॉण्डों को खरीदकर पात्र राजनैतिक दलों को दे सकते थे। बॉण्डों पर न देने वाले का नाम होना था, न दाता की पहचान बताई जानी थी। कम्पनी के अंशधारकों या जनता के संज्ञान में नहीं आ सकता था कि राजनैतिक दलों को कौन धन दे रहा है। मोदी सरकार ने कहा था इससे हालांकि राजनैतिक दलों को मिले चंदे का विवरण पता चल जायेगा, किन्तु देने वालों के नामों का पता नहीं चलेगा। ऐसे में कांग्रेस पार्टी ने भी इसे धनशोधन या मनी-लॉण्डरिंग के समकक्ष ही माना था। बैंकों का भी ऐसा ही सोचना था। चुनाव आयोग की भी चाहत थी कि खरीदकर बॉण्ड देने वालों का नाम गुप्त रखा जाये।

भविष्य में जब स्टेट बैंक आफ इण्डिया व्दारा अब तक बिके बॉण्ड के मूल्यों, उनके खरीददारों, उनके मूल्यों व उनसे जिन राजनीतिक दलों को जब-जब धन मिलने की सूचना चुनाव आयोग को दी जायेगी तो उसके सार्वजनिक होने के बाद खोजी जानकारी से ही मालूम चल सकेगा कि किन मामलों में चुनावी बॉण्डों से राजनैतिक दलों को धन दिये जाने में व्यवसायिक लाभ लिये व दिये जाने के कारण थे। परन्तु जिन मामलों में ऐसा हुआ होगा उनमें तो बाद में भी और काले धन बनने और उसकी एक श्रंखला बनने की संभावना बन जाती है। साफ धन दिया जाना है तो सीधे चेक से पार्टी को दिया ही जा सकता था तो कई क्षेत्र के नियमों में बदलाव लाकर चुनावी बाण्ड जैसे नये गुमनामी वाले दस्तावेज बनाने की योजना पर संदेह के कारण तो थे ही।

सुप्रीम कोर्ट की बाबा रामदेव को फटकार

मुद्दा

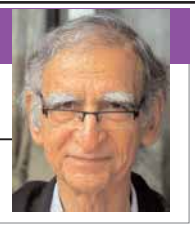

राम पुनियानी
लेखक आईआईटी मुंबई के शिक्षक रहे हैं।

पिछले कुछ दशकों में भारत में कई बाबाओं का उदय हुआ है. इसके पहले भी बाबा हुआ करते थे मगर इन दिनों बाबाओं का जितना राजनैतिक और सामाजिक दबदबा है, उतना पहले शायद कभी नहीं रहा. कई बाबा अनेक तरह के काले कामों में लिप्त भी पाए गए हैं मगर उनकी दैवीय छवि के चलते उनके अपराधों को नज़रअंदाज़ किया जाता रहा है. शंकराचार्य जयेंद्र सरस्वती पर उनके आश्रम के एक कर्मी शंकर रमण की हत्या का आरोप था. सत्यसांई बाबा के प्रशांति निलयम में भी एक हत्या हुई थी. गुरमीत राम रहीम के कुकर्मों को उजागर करने के लिए पत्रकार छत्रपति रामचंद्र को अपनी जान गंवानी पड़ी. अंततः राम रहीम कानून के पंजे में फँस गया और इन दिनों जेल में है. यह अलग बात है कि वो अधिकांश समय पैरोल पर बाहर रहता है. आसाराम बापू लम्बे समय तक कानून की पकड़ से दूर रहा मगर अब वह सीखचों के पीछे है. इस समय बागेश्वर धाम नामक एक बाबा काफी लोकप्रिय है. ये कुछ उदाहरण मात्र हैं. देश में असंख्य बाबा हैं जो अपने-अपने अंधभक्तों की भीड़ से घिरे रहते हैं. उनकी रईसी देखते ही बनती है.

दो अन्य बाबाओं का ज़िक्र ज़रूरी है. एक हैं श्री श्री रविशंकर, जिन्होंने अपने उत्सव के लिए यमुना को बर्बाद कर दिया था. वे अन्ना हजारे के आरएसएस-समर्थित आन्दोलन से भी जुड़े हुए थे. फिर बाबा रामदेव हैं. रामदेव ने अपने करियर की शुरुआत योग गुरु के रूप में की थी. लेकिन बाद में उन्होंने पतंजलि ब्रांड नेम से व्यापार शुरू कर दिया. आयुर्वेदिक उत्पादों को बनाने और बेचने वाली इस कंपनी ने बाबा रामदेव को अरबपतियों की श्रेणी में ला खड़ा किया. बाबा रामदेव और उनके सहयोगी आचार्य बालकृष्ण ने एक बड़ा साम्राज्य स्थापित कर लिया है और उन्हें चुनौती देने वाला कोई नहीं है. या कम से कम अब तक तो नहीं था. उनके आयुर्वेदिक उत्पादों का जबरदस्त प्रचार-प्रसार हुआ और मीडिया का एक बड़ा तबका उनका गुणगान करने लगा.

बाबा और आचार्य की शैक्षणिक योग्यता के बारे में हम बहुत नहीं जानते. इस समय देश में कई आयुर्वेदिक कॉलेज हैं मगर इन दोनों के पास शायद आयुर्वेद की कोई डिग्री नहीं हैं. पड़ताल से बचने के लिए रामदेव ने देशभक्ति का लबादा ओढ़ लिया और यह कहते रहे कि वे बहुराष्ट्रीय कंपनियों से मुकाबला कर रहे हैं.

असली खेल शुरू हुआ कोविड-19 महामारी के दौरान. एक ओर सरकार ने पुणे स्थित भारत बायोटेक को कोवैक्सीन का विकास और उत्पादन करने हेतु भारी आर्थिक मदद उपलब्ध करवाई वहीं बाबा रामदेव ने यह दावा किया कि उनकी कंपनी ने कोविड-19 के इलाज और उससे बचाव के लिए एक दवाई विकसित की है जिसका नाम है कोरोनिल. हमें यह भी बताया गया कि कोरोनिल को विश्व स्वास्थ्य संगठन (डब्लूएचओ) का अनुमोदन प्राप्त है. जब आयुष मंत्रालय ने इस दावे को चुनौती दी तो पंतजलि की ओर से यह कहा गया कि कोरोनिल 'डब्लूएचओ के मार्गनिर्देशों के अनुरूप है'. आयुष मंत्रालय ने कोरोनिल के बारे में दावों को सत्यापित करने से इंकार कर दिया. इसके बाद भी कोरोनिल के कांबो पैक को बड़ी धूमधाम से दो केबिनेट मंत्रियों- डॉ. हर्षवर्धन और नितिन गडकरी, की उपस्थिति में जारी किया गया. हर्षवर्धन स्वयं एलोपैथिक डॉक्टर हैं. इस कार्यक्रम में उनकी उपस्थिति से यह जाहिर है कि वे भारत की प्राचीन चिकित्सा पद्धतियों के कितने अंधभक्त हैं.

बाबा ने दावा किया कि कोरोनिल का परीक्षण मामूली से लेकर मध्यम श्रेणी के कोविड संक्रमण से पीड़ित लोगों पर किया गया और कोरोनिल का सेवन करने के कुछ ही दिनों के भीतर उनका कोविड टेस्ट निगेटिव हो गया. आधुनिक चिकित्सा विज्ञान में किसी भी नई दवा को सामान्य उपयोग के लिए जारी करने के पहले उसका जैव रासायनिक विश्लेषण किया जाता है, पशुओं पर उसका परीक्षण किया जाता है और फिर समुचित आकार के नमूनों पर उसकी 'डबल ब्लाइंड' ट्रायल की जाती है. कोरोनिल के मामले में इनमें से कुछ भी नहीं किया गया.

अपनी व्यवसायिक सफलता से गदगद बाबा रामदेव ने गोदी मीडिया की प्रशंसा को कबूल किया. इससे एक कदम आगे बढ़कर उन्होंने एलोपैथी को एक बेवकूफाना विज्ञान बताना शुरू कर दिया. इससे व्यथित होकर इंडियन मेडिकल एसोसिएशन (आईएमए) ने रामदेव के खिलाफ प्रकरण दायर किया जिसकी सुनवाई हाल में हुई. रामदेव ने अदालत में आधुनिक चिकित्सा विज्ञान का अपमान करने के लिए आईएमए से क्षमायाचना की. यहां पाठकों को यह याद दिलाना श्रेयस्कर होगा कि बाबा रामदेव ने जब भ्रष्टाचार के खिलाफ भूख हड़ताल की थी तब उन्होंने यह दावा किया था कि योग के कारण उनका शरीर इतना मजबूत हो गया है कि वे लंबे समय तक बिना भोजन के रह सकते हैं. मगर उपवास प्रारंभ करने के कुछ ही दिनों के बाद उनकी हालत इतनी पतली हो गई कि उन्हें एक एलोपैथिक अस्पताल में भर्ती करना पड़ा. इसी तरह करीब एक वर्ष पहले जब आचार्य बालकृष्ण बीमार पड़े तो वे एक एलोपैथिक अस्पताल के आईसीयू में भर्ती हो गए.

उच्चतम न्यायालय की चेतावनियों के बाद भी बाबा की कंपनी भ्रामक विज्ञापन जारी करती रही. अदालत ने उन्हें बुलाया और बाबा ने गिड़गिड़ाते हुए माफी मांगी. मगर अदालत ने उनकी माफी मंजूर नहीं की.

अदालत में चल रहे प्रकरण का नतीजा चाहे जो हो सवाल यह है कि देसी चिकित्सा पद्धतियों और आस्था पर आधारित ज्ञान के आधार पर कोई भला किस तरह आधुनिक चिकित्सा पद्धति का मखौल बना सकता है? यह मानने से किसी को इंकार नहीं है कि पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियों में ही नहीं बल्कि दादी मां के नुस्खों में भी कुछ ज्ञान हो सकता है. मगर आधुनिक चिकित्सा पद्धति साक्ष्य और साथी चिकित्सकों व वैज्ञानिकों की समीक्षा पर आधारित होती है. हर दावे को हर तरह की समीक्षा और समालोचना का सामना करना पड़ता है. और इसके नतीजे में ही ऐसी चीजें विकसित होती हैं जो मानवता के लिए उपयोगी साबित होती हैं.

इसके विपरीत आस्था पर आधारित ज्ञान और उससे जुड़ी चिकित्सा प्रणालियों पर प्रश्न नहीं उठाए जा सकते. हर बाबा अपनी तरह से रोगों का इलाज करता है. चिकित्सा प्रणालियों के प्रोटोकाल में लगातार सुधार इसलिए होता रहता है क्योंकि उसकी समीक्षा करने का अधिकार सभी को होता है. इसके विपरीत रामदेव जैसे लोग अपने दैवीय दर्जे का लाभ उठाते हुए मनमाने दावे करते हैं और उन्हें न तो कोई चुनौती देता है और न कोई उनकी आलोचना करता है. बाबा ने यह दावा भी किया था कि वे कैंसर और एड्स का इलाज भी कर सकते हैं. वे तो समलैंगिकता को भी एक रोग मानते हैं और उनका दावा है कि वे इलाज से उसे ठीक कर सकते हैं.

अब तक उन्हें सत्ता का संरक्षण प्राप्त था और इसी के चलते वे इतने अहंकारी हो गए थे कि वे एलोपैथी का मजाक बनाते थे और 'अपनी' प्रणाली को सर्वश्रेष्ठ बताते थे.

बाबा लोग इतने मजे में क्यों हैं? इसका कारण यह है कि पिछले कुछ सालों में भारत में धर्म के नाम पर राजनीति का बोलबाला बढ़ा है. इसके साथ ही प्राचीन ज्ञान का भी महिमामंडन किया जा रहा है. वैज्ञानिकता और तार्किकता में विश्वास करने वाले लोग चाहते हैं कि प्राचीन ज्ञान को आधुनिक विज्ञान की कसौटी पर कसा जाए. यही बात डॉक्टर दाभोलकर, गोविंद पंसारे, एमएम कलबुर्गी और गौरी लंकेश कहते थे. और उन्हें इसकी कीमत अपनी जान देकर चुकानी पड़ी. आज हमारे देश में तार्किक सोच और पद्धतियों को परे हटाकर केवल आस्था पर आधारित ज्ञान का ढोल पीटा जा रहा है. यहां तक कि शैक्षणिक संस्थाओं में भी आस्था आधारित ज्ञान विद्यार्थियों को पढ़ाया जा रहा है.

बाबा रामदेव श्रद्धा और अंधश्रद्धा के कांबो से पीड़ित रोगी समाज के लक्षण हैं. सुप्रीम कोर्ट ने चिकित्सा की दुनिया में बाबाओं की मनमानी को रोकने का जो प्रयास किया है वह सराहनीय है.

मैं इरोम अबुंग मैतेई बोल रहा है

कटाक्ष

शांतिलाल जैन
लेखक व्यंग्यकार हैं।

'हेलो, नमस्कार' - फोन पर जननायक थे.

'नमस्कार शर. मैं इरोम अबुंग मैतेई बोल रहा है.'

'कैसे हैं आप?'

'एकदम हैप्पी है शर. मणिपुर में ही हैं. रिलीफ कैम्प में हैं. इदर रिलीफ को छोड़कर शब कुछ है. तकलीफ को ही रिलीफ समझ लिया है तो शब ठीक लगने लगा है. कैम्प में लोग ज्यादा हैं जगह कम. टोईलेट्स भी कम हैं. कभी पानी है कभी नहीं है. बाकी शब ठीक है. गंदगी बहुत है मगर पॉलिटिक्स में जितनी है उतनी नहीं है. शर्दी है कम्बल नहीं है. बीमारियाँ हैं डॉक्टर नहीं है, दवा भी नहीं है. चांवल देर देर में मिलता है थोड़ा थोड़ा. कभी नमक तो कभी नमक के बिना भी. रात रात भर जाग कर कैम्प का शिक्युरिटी करने का ड्यूटी है. नाम बदलने का शरकार का खूबी है. नरक का नाम बदलकर रिलीफ कैम्प कर दिया है. बाकी एकदम हैप्पी है शर.'

'बच्चे कैसे हैं?'

'वेरी हैप्पी है शर. न श्कूल है न एग्जाम है. मस्त खेलता है दिनभर को. शोटा बच्चा लोग का थोड़ा प्रोबलेम है. दूध के लिए बहुत रोता है बट कोई इशू नहीं है, उश्का माँ एक झापड़ मार देता है तो रोकर-रोकर शो जाता है शर.'

'वेरी गुड. इसका श्रेय आप किसको देते हैं?'

'इंजिन नंबर टू को शर. डबल इंजिन का शरकार. नंबर टू ने मैतेई को मैतेई और कुकी को कुकी होने का एहसास कराया. बोले - अपना कम्युनिटी पर गर्व करना सीखो !! बस फिर क्या था! लीपुन के मेम्बरों की भीड़ ने मिलकर दो कुकी लोग को घेरा, लिंच किया, किल कर दिया. लाइफ में फर्स्ट टाईम मैतेई होने पर इतना गर्व किया. आप बताएँ शर, जूनियर जननायक शाब्जी ने चिंगारियाँ बाँटी न होती तो क्या हम कुकीज के घरों में आग लगाने का अपना जातीय कर्तव्य पूरा कर पाते. उन्होंने आँखें बंद नहीं कर लीं होती तो क्या हम पुलिस स्टेशन से वेपन्स लूट कर ला पाते. नहीं शर. अब कुकी ने भी कुकी होने पर गर्व कर लिया है, उन्होंने हमारे घरों में आग लगा दी और हिल-एरिया में भाग गए. वे भी बेघर, हम भी बेघर. उनने हमारी लेडीज के कपड़े फाड़े तो हमने उनकी लेडिजों को नंगा कर दिया. वीडिओ भी बनाया, देखा होगा आपने! गर्व नंगा कर देने में, गर्व नंगे हो जाने में. असली समाजवाद आ गया है शर. वे भी रिलीफ कैम्पों में, हम भी रिलीफ कैम्पों में. रिलीफ का असली मतलब उनकी समझ में भी आ जारा है. क्रेडिट तो बस आईडेंटिटी पॉलिटिक्स को जाता है शर.'

'हमने स्पेशल सिक्युरिटी फ़ोर्स भेजा है आपकी सुरक्षा के लिए.'

'आया है शर. उससे ज्यादा डर लगता है. विधवाएँ कैम्प से बाहर आने में डरती हैं, कोई कोई फ़ोर्सवाला फ़ोर्सभरी नज़र फ़ोर्सफुल्ली डाल ही लेता है, रूह काँप जाती है शर.'

'तो आप लोग दिल्ली आ जाईए.'

'उदर का पब्लिक हमको चीनी-चपटा समझ कर मारता है शर. इदर ई ठीक है. कैम्प का लाईफ सिक्युरिटी देता है.'

'हमने आपके लिए रिलीफ कैम्पों में स्पेशल पोलिंग बूथ बनवाए हैं, आपको वोट देना है.'

'आएगा तो ..... ही. फिर हम वोट देके क्या करेगा शर. सालभर हुआ आप मणिपुर नहीं आ पाए तो कोई बात नहीं. अपोजिशन वाला भी इदर को नहीं आता. आते तो भी हमारा लाइफ और सफरिंग पर कोई फर्क नहीं पड़ता. हम किसी को वोट देके क्या करेगा शर!'

'आप और कुछ कहना चाहेंगे.'

'जरूरशे शर. दोनों हाथ जोर के एक रिक्वेस्ट है. कम्युनिटी पर जितना गर्व कर सकते थे कर लिया, अब और अधिक गर्व करने को मत कहिएगा, हत्याएँ करने के पाप करने पड़ते हैं.'

इस बीच कॉल कट गया. इरोम अबुंग मैतेई जानता है आईवीआरएस कॉल में दूसरे छोर से आवाज़ आती है, जाती नहीं. तो क्या, उसने अपने मन की बात कह डाली यही बहुत है!

सुबह सवेरे मीडिया एल.एल.पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी.जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा. लि., राउखेड़ी, देवास रोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईं कृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक - उमेश त्रिवेदी
संपादक (म.प्र.) - गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक - अजय बोकिल
स्थानीय संपादक - हेमंत पाल
प्रबंध संपादक - अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNI No. MPHIN/ 2015/ 66040,
Mobile No.: 09893032101
Email- subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

व्यंग्य

चूहा बिल्ली पार्टी का सदस्यता अभियान

अनीता श्रीवास्तव
लेखिका व्यंग्यकार हैं।

जी यही नाम है हमारी पार्टी का। कारण - फारण मत पुछिएगा। हम बड़ी मुश्किल से यह नाम तजवीज पाए हैं। हम वो हैं जो किसी तरह 'पाल्टी' को पार्टी बोलना सीख पाए। अब और सीखना न हो पाएगा हमसे। हमने नरक चौदस के दिन से सदस्यता अभियान चला रखा है। यही महूरत निकला था। अब तक ढेरों लोग सदस्य बन भी चुके हैं। ये सभी ढेर एक बड़े ढेर से निकले हैं जो विगत में एक बड़ी पाल्टी सॉरी पार्टी थी। अभी उसकी झाड़न - फटकन ही बची है। हमारी पार्टी की एक विचारधारा है जिसे हमने भाषण देने के उद्देश्य से बनाया है। आप भी उसे टीप कर रख लें या कॉपिया लें।

हमारी पार्टी में कुतरने का गुण रखने वालों को प्राथमिकता मिलेगी। वस्तुतः यह उन्हीं की पार्टी है। आप प्रमाण ले कर आएं आपने किसे कुतरा! समाज, गाँव, परिवार, राष्ट्र या ऐसा ही कुछ और। आप अपने कृतंक दांत भी दिखा सकते हैं; जो अपनी जुबान फिसलने पर आप शर्मिंदा होने या खेद व्यक्त करने के बजाय निपोर देते हैं। आपके पास एक अदद लम्बी पतली पूँछ होनी चाहिए। आपको यह भी बताना होगा कि आप किसकी पूँछ हैं। आपकी पूँछ कभी कटी तो नहीं। अपनी जगह से हटी तो नहीं। उस पर किसीकी अंगुलियों के निशान तो नहीं। ऐसे चूहे खास वेल्यू रखते हैं जो किसी मोटे चूहे की पूँछ रहे हों और खुद की भी जिनकी लम्बी पूँछ हो।

अगला नम्बर आपके ज़मीन खोदने की क्षमता का आता है। जिस ज़मीन पर खड़े हैं क्या उसे आप खोद सकते हैं। जहाँ कहा जाय, वहाँ खोद सकते हैं! अगर आप अपनी ही विचारधारा की ज़मीन खोद सकते हैं तो आपका स्वागत है। अगर शत्रु के नहीं, मित्र के बनाए मजबूत किलों में भी इस तरह सुरंग बना सकते हैं कि उसे पता तक न चले तो आपका वंदन है। ये आप ही की पार्टी है।

अगली बात, आपको बिल बनाना है और बिल में रहना है, जब तक चुनाव सर पर न आ जाए, बिल ही आपकी आरामगाह है। ये नहीं कि आए दिन जनता के बीच बिलबिलाते फिरें। समाज सेवकों की तरह।

अब हम सिक्के के दूसरे पहलू पर दृष्टिपात करेंगे। जिसके बिना पार्टी लाइन पूरी नहीं होती। आपसे अवश्यक्तानुसार, बिल्ली के गुणों की अपेक्षा की जाती है। यह मामला सुरक्षा से जुड़ा है, देश वेश की नहीं; पार्टी की, बल्कि मेरी आपकी निजी। तो आपको एट द सेम टाइम दोनों होना है, वन बाई वन। चूहा एज़ वेल एज़ बिल्ली भी। आपको मिमियाना आता हो। अभी समय है आप अपनी गुर्राहट को मिमियाहट में बदल सकते हैं। अपने आप को टटोलिए, क्या आप चूहे के साथ- साथ बिल्ली भी हो सकते हैं। आपको लुड़काना आता हो। जब भी माल मत्ता या सत्ता की मलाई खाने का मौका हाथ से निकलता दिखे आप लुढ़का सकें।

और सबसे ज़रूरी पॉइंट, आपके गले में कोई घंटी न बांध सके। सत्तर सालों में जंगल में ढेरों सूरमा पैदा हुए। उनने बहुत प्रयास किए। बड़े बड़े अन्ना, दिल में तमन्ना लिए रह गए। मगर कोई हमारे गले में घण्टी न बांध पाया। दरसल यह गुण दलगत भावनाओं से ऊपर है। कभी कोई दल नहीं चाहता कि उसकी बिल्ली के गले में घण्टी हो लिहाजा यह आपकी मूलभूत अर्हता होगी, राजनीति में आने की कि साम, दाम, दंड, भेद किसी भी नीति से आपके गले में घण्टी न बांधी जा सके। अगर कोई ऐसा करने की जुर्रत करे तो आपको उसके साथ वही करना है जो किसी चूहे के साथ करते आए हैं। सनद रहे आप यानी बिल्ली शेर की मौसी है। इस तरह भाँति- भाँति के विशिष्ट गुणों से सुसज्जित भद्र जन पार्टी की सदस्यता ले कर देश का मेवा निपटाएं। सेवा का क्या है वो तो संग में हो ही जाएगी।

हम चाहते हैं वोटर को अपनी ज़रूरत पूरी करने के लिए दौड़ चूहा दौड़ बिल्ली न खेलना पड़े इसलिए हमने दोनों की कमी पूरी की है। दोनों को एक पार्टी में रखा है। इस काम के लिए पुराने ज़माने के लोग विचारधारा रखते थे। कितने बेचारे थे वे! विचार में क्या धरा है! यह मस्तिष्क से मुक्ति का मार्ग हुआ। अब बचा दिल। हृदय परिवर्तन के दौरे जब पड़ते हैं लोग हृदय ही निकाल के धर देते हैं। दोनों के बिना हर पार्टी अब हमारी पार्टी ही है।

राम नवमीं विशेष

डॉ. लोकेन्द्रसिंह कोट

लेखक स्तंभकार हैं।

जीव राम घट-घट में बोले, ईश राम दशरथ घर डोले

जीवन सेवा का रूप है और प्रत्येक मानव जीवन, सेवा के लिए ही इस धरती पर आया है। सिर्फ भोजन ही शरीर को लगता है शेष तो दूसरों के लिए ही है। यहाँ तक कि जो हम कपड़े पहनते हैं वे भी दूसरों के लिए ही पहनते हैं, हम स्वयं कितनी देर अपने कपड़े देखते हैं। दिन भर सारा काम हम दूसरे यानी परिजन, समाज, देश के लिए ही कर रहे होते हैं। राम ही वह प्रकाश है जो हमें प्रेरित करता है, जीवन को चलायमान करता है। इसलिए कहा गया है, जीव राम घट-घट में बोले। ईश राम दशरथ घर डोले। बिंदु राम का सकल पसारा। ब्रह्म राम है सबसे न्यारा।। इस पर शिष्य बोलता है 'गुरुदेव ! जीव, ईश, बिंदु व ब्रह्म इस प्रकार भी तो राम चार ही हुए न?' गुरु ने देखा कि इसे अभी तक चार राम दिख रहे हैं। गुरु ने करूणा करके समझाया कि 'वत्स ! देख, घड़े में आया हुआ आकाश, मठ में आया हुआ आकाश, मेघ में आया हुआ आकाश और उससे अलग व्यापक आकाश, ये चार दिखते हैं। अगर तीनों उपाधियों- घट, मठ, और मेघ को हटा दो तो चारों में आकाश तो एक-का-एक ही है।

राम का अर्थ है अंदर का प्रकाश। अंदर के प्रकाश की अनुपस्थिति में जीवन व्यर्थ होता है। अंदर के प्रकाश का उजाला जीवन को तार देता है और एक ऐसा आधार बना देता है कि वह हजारों-लाखों को भी प्रकाशवान कर सकता है। राम भी वैसे ही हैं। इस जीवन का उद्देश्य ही यह है कि एक दिए से दूसरा दिया प्रकाशवान हों और यह जगत घनघोर अंधकार में भी प्रकाशवान रहे। जीवन सेवा का रूप है और प्रत्येक मानव जीवन, सेवा के लिए ही इस धरती पर आया है। सिर्फ भोजन ही शरीर को लगता है शेष तो दूसरों के लिए ही है। यहाँ तक कि जो हम कपड़े पहनते हैं वे भी दूसरों के लिए ही पहनते हैं, हम स्वयं कितनी देर अपने कपड़े देखते हैं। दिन भर सारा काम हम दूसरे यानी परिजन, समाज, देश के लिए ही कर रहे होते हैं। राम ही वह प्रकाश है जो हमें प्रेरित करता है, जीवन को चलायमान करता है। इसलिए कहा गया है, जीव राम घट-घट में बोले। ईश राम दशरथ घर डोले। बिंदु राम का सकल पसारा। ब्रह्म राम है सबसे न्यारा।। इस पर शिष्य बोलता है 'गुरुदेव! जीव, ईश, बिंदु व ब्रह्म इस प्रकार भी तो राम चार ही हुए न?' गुरु ने देखा कि इसे अभी तक चार राम दिख रहे हैं। गुरु ने करूणा करके समझाया कि 'वत्स! देख, घड़े में आया हुआ आकाश, मठ में आया हुआ आकाश, मेघ में आया हुआ आकाश और उससे अलग व्यापक आकाश, ये चार दिखते हैं। अगर तीनों उपाधियों- घट, मठ, और मेघ को हटा दो तो चारों में आकाश तो एक-का-एक ही है। सभी दूर राम ही व्याप्त हैं। वह प्रकाश जो हमें मार्ग दिखाता है। इसलिए पल-पल कोई न कोई हमारा गुरु बन जाता है। कभी एक छोटा बच्चा भी हमें रास्ता बता देता है तो कभी कोई अनजान हमारी राह आसान कर देता है, कभी प्रकृति हमें कुछ सिखा जाती है। सर्वत्र राम रूप में गुरु बसे हैं।

'वाल्मीकि रामायण' और 'तुलसीकृत रामायण' में इस कथा का वर्णन नहीं है, पर तमिल भाषा में लिखी महर्षि कम्बन की 'इरामावतारम्' रामायण मे एक अनोखी कथा का उल्लेख मिलता है। रावण केवल शिवभक्त, विद्वान एवं वीर ही नहीं, अति-मानववादी भी था। उसे भविष्य का पता था। वह जानता था कि श्रीराम से जीत पाना उसके लिए असंभव है। ऐसे में जब श्रीराम ने खर-दूषण का सहज ही वध कर दिया, तब तुलसी कृत मानस में भी रावण के मन भाव लिखे हैं, खर दूषण मो सम बलवंता। तिनहि को मरहि बिनु भगवंता।। इसके अलावा कम्ब रामायण और बंगाल में प्रचलित 'कृत्तिवास रामायण' में भी वर्णन मिलता है। 'कम्ब रामायण' तमिल साहित्य की सर्वोत्कृष्ट कृति एवं एक बृहत् ग्रंथ है। उन्होंने तमिल भाषा में लिखी रामायण के आधार पर कहा कि जामवंत ने आसन ग्रहण कर रावण से कहा कि वनवासी राम सागर-सेतु निर्माण उपरांत अब यथाशीघ्र महेश्वर-लिंग-विग्रह की स्थापना करना चाहते हैं। इस अनुष्ठान को सम्पन्न कराने के लिए उन्होंने ब्राह्मण, वेदज्ञ और शैव रावण को आचार्य पद पर वरण करने की इच्छा प्रकट की है। मैं उनकी ओर से आपको आमंत्रित करने आया हूं।

भारतवर्ष के प्रथम प्रशंसित महर्षि पुलस्त्य के सगे भाई महर्षि वशिष्ठ के यजमान का आमंत्रण और अपने आराध्य की स्थापना हेतु आया आमंत्रण रावण कैसे अस्वीकार कर सकता था। राम का आलोक ही ऐसा था कि दुश्मन भी उनके दिए कार्यों को करने के लिए उत्साहित हो जाते थे। वास्तव में तीन प्रकार के मन की स्थिति को रावण के माध्यम से प्रतिबिंबित होती है। एक मन राजसिक, दूसरा मन तामसिक और तीसरा मन है सात्विक। सीता का हरण जैसी गतिविधि राजसिक और तामसिक मन का प्रतीक है वही शिव आराधना, शिव तांडव स्त्रोत की रचना और राम के महेश्वर लिंग-विग्रह स्थापना के निमंत्रण को स्वीकारना सात्विक मन का परिणाम है। इसलिए तुलसी भी लिखते हैं कि इस संसार में सब कुछ बदल रहा है। जरूरी नहीं कि जो अभी सर्वज्ञानी है या मूर्ख है वह हमेशा ऐसा ही रहेगा। बोले बिहसि महेस तब ग्यानी मूढ़ न कोइ। जेहि जस रघुपति करहिं जब सो तस तेहि छन होइ। शास्त्रों के अनुसार जो आवश्यक उपकरण यजमान उपलब्ध न कर सके उसका जुटाना आचार्य का परम कर्तव्य होता है, रावण जानता है कि वनवासी राम के पास क्या है और क्या होना चाहिए, अशोक उद्यान पहुंचते ही रावण ने सीता से कहा, 'राम लंका विजय की कामना से समुद्र तट पर महेश्वर लिंग विग्रह की स्थापना करने जा रहे हैं और रावण को आचार्य वरण किया है, यजमान का अनुष्ठान पूर्ण हो यह दायित्व आचार्य का भी होता है, तुम्हें ज्ञात है कि अर्धांगिनी के बिना गृहस्थ के सभी अनुष्ठान अपूर्ण रहते हैं, विमान आ रहा है, उस पर बैठ जाना' रावण जिस शिव को मानता है वे शिव स्वयं जिसका नाम 'राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे' के रूप में जपते हैं वहां उस सात्विक मन का प्रभाव होना अवश्यम्भावी होगा। जहां राम होंगे वहां किसी का भी मन सात्विक ही रहेगा। राम अर्थात आंतरिक प्रकाश की अनुपस्थिति होते ही राजसिक और तामसिक मन प्रबल होने लगेगा। यहां यही घटित हो रहा था।

वनवासी श्रीराम ने सम्मुख होते ही आचार्य दशग्रीव को हाथ जोड़कर प्रणाम किया, यह विनम्रता सिर्फ राम ही वरण कर सकते हैं। कहते हैं हमारे अंदर सबसे अधिक जल तत्व हैं और जल तत्व का सर्वश्रेष्ठ गुण है विनम्र होना, जैसी परिस्थिति, पात्र हो वैसे बन जाना। राम भी वही अभिव्यक्त कर रहे हैं। प्रत्युत्तर में रावण का जवाब 'दीर्घायु भव, लंका विजयी भव' सबको चौंका देता है। यह सिर्फ राम रूपी आत्मप्रकाश की उपस्थिति में संभव है। राम का अभाव ही हमें रावण बनाता है। पुष्पक विमान में विभीषण रूपी सत्व सीता रूपी आत्मीयता को स्थापना स्थल पर लाते हैं। रावण के सात्विक रूप से लिंग.विग्रह की स्थापना होती है। विधि-विधान के साथ अनुष्ठान सम्पन्न होता है। अंत में जब आचार्य के दक्षिणा बारी आती है तो श्री राम पूछते हैं इस पर रावण का मन ही अमरता के उस छद्म भ्रम को त्यागता है और कहता है कि जब मृत्यु शैय्या ग्रहण हो तब यजमान सम्मुख उपस्थित रहे। राम ही है जो उस नश्वरता का परिचय करवा सकते हैं वरना अहंकार तो हमें जताता है कि हम कभी नहीं मरेंगे। राम इस वचन को अंत में निभाते भी हैं।

वस्तुतः राम तो प्रकाश है और रावण एक अंधकार। प्रकाश का अस्तित्व भी अंधकार की अनुपस्थिति को व्यक्त करता है और अंधकार, प्रकाश की अनुपस्थिति को। दोनों इस जीवन चक्र का हिस्सा है और यह बताता है कि अंधकार का अतिक्रमण ज्यादा न हो पाए वरना वह रावण के रूप में बदल जाता है, प्रकाश का दबदबा बना रहे तो जीवन सार्थक होता है।

ऐ वतन, मेरे वतन

राजेन्द्र बंधु

लेखक सामाजिक कार्यकर्ता हैं।

वतन के साथ दहलीज का संघर्ष दिखाती फिल्म

भारत की आज़ादी के आंदोकारियों की बायोपिक पर फिल्म बनाना आज के दौर में एक साहसिक कार्य हैं। आमतौर पर फिल्म दर्शकों के स्वाद के अनुसार बनती है, लेकिन हाल ही अमेजन प्राइम पर स्ट्रीम हुई कन्नन अय्यन द्वारा निर्देशित, करण जौहर द्वारा निर्मित और सारा अली खान द्वारा स्टारर 'ए वतन मेरे वतन' दर्शकों का स्वाद बदलने का प्रयास करती नजर आती है।

पिछले एक दशक में युवा दर्शकों को ऐतिहासिक नायकों की, खासकर स्वतंत्रता आंदोलन पर स्त्री केन्द्रित फिल्म देखने का अवसर नहीं मिला। यह फिल्म न सिर्फ युवाओं को आज़ादी के आंदोलन को रेखांकित करती है, बल्कि दहलीज के अंदर एक स्त्री के संघर्ष और आंदोलन में शरीक होने के उसके साहस को दर्शाती है, जिसे सारा अली खान ने बखूबी अभिनीत किया है।

इस फिल्म को दो तरह के लैंस से देखा जा सकता है, पहला आज़ादी के आंदोलन में गुमनाम नायकों को सामने लाकर उनके संघर्ष से दर्शकों को अवगत करने के लिए। दूसरा लैंस सारा अली खान द्वारा अभिनीत उषा मेहता का संघर्ष है, जो देश की आज़ादी के अंदोलन में शामिल होने के अपने फैसले लेने के अधिकार को हासिल करने के लिए अपने न्यायाधीश पिता से भी संघर्ष करती है। यानी सारा अली खान ने उषा मेहता के घर के अंदर और घर के बाद दो संघर्ष को अपने अभिनय से जीवंत किया।

कन्नन अय्यर द्वारा निर्देशित, करण जौहर, अपूर्व मेहता और सोमेन मिश्रा द्वारा निर्मित और धर्माटिक एंटरटेनमेंट प्रोडक्शन द्वारा समर्थित, पीरियड ड्रामा में सारा अली खान प्रमुख भूमिका में हैं। यह भारतीय स्वतंत्रता संग्राम पर आधारित फिल्म है, लेकिन यह एक कालातीत कहानी है। वर्तमान पीढ़ी को इससे प्रेरणा लेनी चाहिए। स्वतंत्रता संग्राम 1947 में समाप्त हो गया लेकिन उसके बाद भी, एक महिला, बच्चे और अभिनेता के रूप में हर कोई संघर्ष करता है।

यह फिल्म सन् 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन के दौरान अंग्रेजी हुकूमत के अत्याचार से तो अवगत् कराती ही है, साथ ही यह तत्कालीन कांग्रेस के जमीनी कार्यकर्ताओं के देश के प्रति जज्बात और जीजिविषा को भी सामने रखती है, जो अंडरग्राउंड होकर आजादी की लड़ाई जारी रखते हैं। इनमें उषा मेहता आजादी की आवाज़ को देश की अवाम तक पहुंचाने की जिम्मेदारी निभाती है।

ऐ वतन मेरे वतन फिल्म बॉम्बे में रहने वाली 22 वर्षीय उषा मेहता के उस साहस को दर्शाती है जिसने भारत के स्वतंत्रता आंदोलन की दिशा बदल में खास भूमिका निभाई हैं। अंग्रेजी हुकूमत द्वारा लागू तमाम प्रतिबंधों के बावजूद उषा मेहता एक गुप्त भूमिगत रेडियो स्टेशन शुरू करके आज़ादी के आंदोलन में संचार तकनीकी का उपयोग करती है। क्योंकि भारतीयों के पास संचार या स्वतंत्र प्रेस का कोई माध्यम नहीं था।

फिल्म में, हम उषा की दादी को चेतावनी देते हुए देखते हैं कि अंग्रेज कितने खतरनाक हो सकते हैं, और यह उनके लिए एक घातक मिशन साबित हो सकता है। लेकिन उषा अदम्य भावना वाली महिला थीं, जो अपनी जान देने के लिए तैयार थीं, लेकिन अपने भारतीय भाइयों और बहनों को संवाद करने के लिए एक बहुत जरूरी मंच देना बंद नहीं कर रही थीं।

फिल्म की शुरूआत में जब हम उषा मेहता के न्यायाधीश पिता से उसकी बातचीत देखते हैं तो यहां स्त्री का संघर्ष भी दिखाई देता है, जहां वे अपने पिता की इच्छाओं के विरूद्ध आंदोलन में शरीक होने का साहस दिखाती है। यहां हम एक स्त्री को अपने फैसले लेने के अधिकार के लिए संघर्ष करते हुए देखते हैं।

लोकप्रिय स्वतंत्रता सेनानी राम मनोहर लोहिया (इमरान हाशमी) की मदद से उषा और उसके दोस्त अपने रेडियो स्टेशन कांग्रेस रेडियो के माध्यम से जेल में बंद नेताओं की आवाज देशभर में पहुंचा देते हैं। क्रांतिकारियों की इस हरकत से अंग्रेजी हुकूमत तिलमिला उठती है और अपने अफसरों को किसी भी तरह इस रेडियो स्टेशन की आवाज को चुप कराने का हुक्म देती है।

ऐ वतन, मेरे वतन फिल्म इसलिए भी देखनी चाहिए, क्योंकि यह हमें आज़ादी के आंदोलन के गुमनाम नायकों से तो परिचित करवाती ही है, साथ ही उषा मेहता के रूप में एक स्त्री के संघर्ष को भी सामने रखती है, जो आज़ादी का आंदोलन में महिला आंदोलनकारियों की घर की दहलीज के अंदर लड़ी गई लड़ाई को भी सामने रखती है। दहलीज के अंदर की उनकी लड़ाई आज भी उन सभी युवतियों के लिए प्रेरणा स्त्रोत है, जो शिक्षा, रोजगार एवं अपनी स्वतंत्र भूमिका निभाने के लिए आगे आना चाहती है।

रामनवमीं विशेष

डॉ.मुरलीधर चाँदनीवाला

लेखक स्तंभकार हैं।

श्रीराम ने कभी शक्ति प्रदर्शन नहीं किया

श्रीराम केवल अयोध्या के नहीं है, केवल भारत के भी नहीं, वे सम्पूर्ण पृथ्वी के हैं। वे राजवंश के होकर भी जन-जन के हैं, सबके प्राणों में बसे हुए हैं। वे भगवान मान लिये गये हैं, लेकिन वे स्वयं अपनी दृष्टि में मनुष्य हैं। उनके सब अभ्यास मनुष्य होने के लिये हैं। उनका चरित्र हमें यह बताता है कि मनुष्य यदि सचमुच मनुष्य हो, तो वह भगवान ही है। प्रत्येक मनुष्य में भगवान होने की विपुल सम्भावनाएँ हैं। वह एकनिष्ठ होकर प्रयास करे, तो भगवान हुआ जा सकता है। श्रीराम का पावन चरित्र इसी बात का उदाहरण है।

श्रीराम केवल अयोध्या के नहीं है, केवल भारत के भी नहीं, वे सम्पूर्ण पृथ्वी के हैं। वे राजवंश के होकर भी जन-जन के हैं, सबके प्राणों में बसे हुए हैं। वे भगवान मान लिये गये हैं, लेकिन वे स्वयं अपनी दृष्टि में मनुष्य हैं। उनके सब अभ्यास मनुष्य होने के लिये हैं। उनका चरित्र हमें यह बताता है कि मनुष्य यदि सचमुच मनुष्य हो, तो वह भगवान ही है। प्रत्येक मनुष्य में भगवान होने की विपुल सम्भावनाएँ हैं। वह एकनिष्ठ होकर प्रयास करे, तो भगवान हुआ जा सकता है। श्रीराम का पावन चरित्र इसी बात का उदाहरण है।

श्रीराम मनुष्य जीवन के आचार्य हैं। वे रघुवंश की उस परम्परा के पोषक हैं, जो त्याग को ही जीवन का मूल्य मानती है। वे सत्य की रक्षा के लिये मितभाषी है। वे मत-मतान्तर से बहुत ऊपर हैं। उनके चित्त में कोई विरोध नहीं है, न परिवार के किसी सदस्य के प्रति, न प्रजा के प्रति, न किसी विचारधारा के प्रति। शायद इसीलिये श्रीराम अपराजेय है। उनसे पराजित होता हुआ शत्रु भी अपनी मृत्युवेला में श्रीराम की वंदना करने लग जाता है। श्रीराम तपस्या का विग्रह है, शान्ति का विग्रह है। वे प्रेम के ऐसे रसायन हैं, जो सबको अपने पास आने का न्योता देते हैं।

श्रीराम ने अपना धर्म नहीं चलाया। उन्हें इसकी आवश्यकता ही नहीं पड़ी। श्रीराम स्वयं धर्म है। 'रामो विग्रहवान् धर्मः', यह बात केवल राम के लिये ही कही जाती है। श्रीराम को जान लेने के बाद धर्म अव्यक्त नहीं रहता। इसलिये हमारे संत-महात्मा धर्मशास्त्र पढ़ने की अपेक्षा रामचरितमानस के अध्ययन और अनुशीलन की सलाह देते हैं। हमारे पूर्वज शायद बहुत पढ़े-लिखे नहीं थे, शायद बहुत मंदिरों में नहीं गये हों, लेकिन वे रामचरितमानस में रमे हुए थे। रामचरितमानस ने ही उन्हें सनातन से जोड़कर रखा। रामचरितमानस ने ही उनके परम्परा-बोध को जगाये रखा। भले ही उन्होंने अपने लिये बहुत सारा धन न कमाया हो, लेकिन वे रामरतन धन को जतन से सहेजकर रखने वाले सच्चे वैभवशाली थे।

श्रीराम में हमारी आस्था अटूट है। श्रीराम सबको तारने वाले हैं। वे रावण को भी तारते हैं, बाली को भी। वे प्राणी मात्र की सम्पूर्ण मुक्ति चाहते हैं। एक वे ही हैं, जो अकेले अपनी नहीं, सब प्राणियों की मुक्ति के लिये पहल करते हैं। वे किसी की हानि होते हुए नहीं देखते, युद्ध में भी नहीं। अपने शत्रु के मान-सम्मान की रक्षा करने वाले श्रीराम सचमुच अनोखे हैं। अपने शुभचिंतकों के प्रति अत्यंत उदार और सहिष्णु श्रीराम अपनी मृदुल मुस्कान से सबका हृदय जीत लेते हैं। कोई भी बात, बहुत छोटी हो या बहुत बड़ी, श्रीराम बहुत सोचते हैं। वे कभी बोलने की जल्दी में नहीं होते, लेकिन उनकी भाव-भंगिमा सब कुछ बोल देती है। अपने सामने खड़े योद्धा को वे भरपूर अवसर देते हैं। वह कितना भी छोटा हो या निन्द्य हो, किन्तु श्रीराम की दृष्टि में वह मनुष्य होने के कारण श्लाघ्य है। वे यथा सम्भव उसके लिये अभ्युदय के द्वार खुले रखना चाहते हैं।

श्रीराम के जीवन में उतार-चढ़ाव बहुत हैं, ठीक वैसे ही जैसे एक संघर्षशील और सत्याग्रही के जीवन में होते हैं। श्रीराम जीवन में एक बार भी कठिनाइयों से दूर नहीं भागे। उन्होंने 'सरल' और 'कठिन' में से सदैव कठिन को ही चुना। उनकी कठिनाइयाँ जितनी कठिनतर होती चली जाती, वे उतने ही संयमित और धैर्यवान होते चले जाते। उन्हें न कभी अपने ऊपर क्रोध आया, न परिस्थियों पर। क्रोध उनके स्वभाव में ही नहीं था। शूर्पनखा के प्रसंग पर और रावण को परास्त करते समय भी श्रीराम के तेवर एकदम शान्त दिखाई देते हैं। जैसे कुछ हुआ ही नहीं।

श्रीराम वर्ण व्यवस्था से कोई छेड़-छाड़ नहीं करते। उनकी दृष्टि में चारों वर्ण समान रूप से पूज्य हैं। वे सबके साथ समान व्यवहार करते हैं। वे सबसे प्रेम करना जानते हैं, सबके सुख-दुःख में शामिल होना जानते हैं। श्रीराम के जीवन में जो भी आया है या जिसे श्रीराम का थोड़ा सा भी स्पर्श मिला है, वह श्रीराम की ही तरह उज्ज्वल-चरित और पावन हो गया, भले ही वह जड़ हो या चेतन।

लोग राम नाम का अर्थ 'सत्य' करते हैं। जो सत्य है, वही राम है। इसलिये राम ही भरोसे के हैं। राम नाम के सहारे लोग समुद्र तैर जाते हैं, ऊँची-ऊँची पहाड़ियाँ लांघ जाते हैं। सत्य को अपना दिखावा नहीं करना पड़ता, श्रीराम भी अपना दिखावा नहीं करते। सत्य को किसीसे भय नहीं लगता। श्रीराम को भी किसीका भय नहीं सताता। सत्य कभी किसीसे पराजित नहीं होता। श्रीराम भी कभी किसीसे पराजित नहीं होते। सत्य प्रत्येक स्थिति में शिव है, सुन्दर है। श्रीराम भी नित्य शिव है, सुन्दर हैं। श्रीराम के जीवन में हमें जो विरोधाभास दिखाई पड़ते हैं, वे हमारे विद्रोही मन के विरोधाभास हैं, इसलिये संतों ने उन्हें खारिज किया।

श्रीराम ने अपने जीवन में एक बार भी शक्ति प्रदर्शन नहीं किया। शक्ति का प्रयोग तभी किया, जब कोई दूसरा विकल्प शेष नहीं था। विरोधियों के मुँह बंद रखने के लिये वे अपनी ओर से कोई जतन नहीं करते, किसी तर्क में नहीं उलझते।

उनका संगठन-कौशल अद्भुत है। वानरों की सेना को अपने एक संकेत पर संगठित करने वाले श्रीराम का पुरुषार्थ विलक्षण है। वे सहायता देना जानते हैं, तो सहायता लेना भी। वे कृतज्ञ होना जानते हैं। एक गिलहरी के प्रति उनकी जो कृतज्ञता है, उसे मापने का कोई पैमाना हमारे पास नहीं।

श्रीराम शैव भी हैं, शाक्त भी हैं। इन्द्र से उनका कोई वैर नहीं, न वे इन्द्र के प्रभाव में हैं। ऋषिकुलों में जाने से पहले उन्हें अपनी राजसी वृत्तियाँ नहीं त्यागनी पड़ती, क्योंकि वे वृत्तियाँ स्वयं श्रीराम के सामने दास्य भाव से खड़ी रहती हैं। श्रीराम हैं हमारे पास, तो हमें कहीं और भटकने की जरूरत ही नहीं। श्रीराम का चरित्र सम्पूर्ण धर्म, सम्पूर्ण नीति और सम्पूर्ण मुक्ति का ऐसा अक्षय कोश है, जो तब तक खाली नहीं होगा, जब तक सूर्य रहेगा, यह पृथ्वी रहेगी।

6 साल के इकलौते मासूम की नृशंस हत्या

- दूसरी कक्षा के छात्र को स्कूल से लाकर काटा गला
- अनैतिक रिश्ते की परिणीतिस्वरूप की गई बालक की निर्मम हत्या

संजय द्विवेदी, बैतूल। शहर के सदर क्षेत्र में स्थित सेंट जोन्स ईसाई कालोनी में मंगलवार दिनदहाड़े सुबह 11 बजे, 6 साल के बच्चे की गला काटकर नृशंस

हत्या कर दी गयी। बताया जा रहा है कि आरोपी गणेश पिता रमेश मीणा निवासी हरदा खिरकिया ने स्कूल से बच्चे को लाकर सेंट जोन्स कालोनी में ले जाकर बीयर की बोतल से हत्या कर दी। बच्चे की मौके पर ही बच्चे की मौत हो गयी। शोर सुनकर कालोनी में रहने वाले लोग जैसे ही बाहर निकले, आरोपी ने भागने की कोशिश की, लेकिन लोगों ने उसे पकडक़र पुलिस के हवाले कर दिया। बताया जा रहा है कि आरोपी कई दिनों से बच्चे की माँ के साथ लिव इन में रहने की जिद कर रहा था। लेकिन बच्चे के भविष्य को देखते हुए उसकी मां ने मना कर दिया था। कयास लगाए जा रहे हैं कि

बच्चे को रास्ते से हटाने के लिए ही उसकी हत्या कर दी गयी है। घटना की सूचना मिलते ही एसडीओपी पुलिस बैतूल शालिनी परते, गंज टीआई रविकांत डेहरिया और एफएसएल टीम भी मौके पर पहुंच गयी और घटना की बारिकी से जांच की।

साथ रहने की जिद कर रहा था आरोपी- घटना को लेकर मृतक की मां संगीता पति अरुण बिहारे ने बताया कि 16 मार्च को ही उसके इकलौते पुत्र शिवम उर्फ शिवा 6 साल का जन्मदिन था। वह नवीन प्राथमिक शाला सदर की दूसरी क्लास में पढ़ रहा था। सुबह ही वो अपने बच्चे को स्कूल छोडक़र आई थी। इसी बीच उसे जानकारी मिली कि उसके बच्चे की हत्या कर दी गयी है। संगीता ने बताया कि आरोपी का उससे मिलना जुलना था और आरोपी गणेश काफी दिनों से उसके साथ रहने की जिद भी कर रहा था लेकिन मैंने बच्चे के भविष्य को देखते हुए मना कर दिया था। मेरे साथ काम करने वालों ने भी बताया था कि गणेश तुम्हारे बच्चे की हत्या कर सकता है जिसकी रिपोर्ट आज मैं थाने में करने वाली थी, लेकिन इसके पहले ही मेरे बच्चे की हत्या कर दी गयी। पीड़ित महिला का कहना है कि वह अपने बच्चे के सहारे ही अपनी जिंदगी जी रही थी अब उसके बिना में भी जीना नहीं चाहती।

अनैतिक रिश्ते की परिणीतिस्वरूप की गई निर्मम हत्या - आरोपी गणेश पिता रमेश मीणा खिरकिया का रहने वाला था, जिसका मृतक की मां से प्रेम संबंध था। आरोपी एवं महिला लिव इन रिलेशनशिप में आठ नौ माह तक किराए के मकान में रामनगर बैतूल में निवासरत रहे थे। आरोपी को शक था कि महिला का किसी अन्य पुरुष से अवैध संबंध है और इसी बात को लेकर महिला और आरोपी के बीच कई बार वाद-विवाद भी हुआ था, जिसके चलते महिला आरोपी का साथ छोडक़र अपने बच्चे को लेकर गेंदा चौक पर अलग रहने लगी थी। इसी बात का बदला लेने की नियत से आज जब बालक को सुबह मां स्कूल छोड़कर अपने काम पर गई थी, कुछ देर बाद आरोपी ने बालक को स्कूल से लेकर आया और शराब के नशे में मां से बदला लेने की नियत से बालक की बीयर की बॉटल से गला रेत कर हत्या कर दी।

कॉलोनीवासियों ने दिया जागरूकता का परिचय- घटना को लेकर ईसाई कालोनीवासियों ने बताया कि सुबह लगभग 11 बजे शोर सुनकर वे जैसे ही बाहर निकले, सड़क पर एक आदमी दिखाई दिया जो भागने की कोशिश करने लगा था। उसके हाथों में खून देखने के बाद कालोनी में ही रहने वाले युवकों ने उसे पकड़ लिया। मौके पर देखा तो बच्चे की खून से लथपथ लाश पड़ी हुई थी पास ही बीयर की टूटी बोतल पड़ी हुई थी। आरोपी ने बच्चे की गर्दन पर कई वार किए थे और शरीर पर भी अन्य जगह वार किए थे। पास ही बच्चे का स्कूल बैग भी पड़ा हुआ था। घटना के बाद सभी दहशत में आ गए और आरोपी को तब तक पकड़ कर रखा, जब तक पुलिस मौके पर नहीं आ गयी। पुलिस के आने के बाद आरोपी को पुलिस के हवाले कर दिया गया। फिलहाल आरोपी पुलिस हिरासत में है। पुलिस ने पंचनामा कार्यवाही के बाद शव को पोस्टमार्टम के लिए जिला अस्पताल भेज दिया था। आरोपी को गिरफ्तार करने में एस. आई. वंशज श्रीवास्तव, एस.आई. अजय रघुवंशी, प्रधान आरक्षक चंद्रकिशोर, आरक्षक मयूर- पिंटू, आरक्षक रूपाली की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

इनका कहना है-

बच्चे की हत्या के मामले की जांच चल है। आरोपी को हिरासत में ले लिया है। जांच के बाद ही संपूर्ण घटना की जानकारी विस्तार से मिल पाएगी।
-रविकांत डेहरिया गंज थाना प्रभारी बैतूल

शुभम रघुवंशी का हुआ यूपीएससी में सिलेक्शन, ग्राम में हर्ष

यूपीएससी परीक्षा में हासिल की 556वीं रैंक

बैतूल/मुलताई। मोरखा निवासी अधिवक्ता भोजराज सिंह रघुवंशी और शासकीय शिक्षिका अनिता रघुवंशी के पुत्र शुभम रघुवंशी का यूपीएससी परीक्षा में सिलेक्शन हो गया। शुभम रघुवंशी की प्रारंभिक शिक्षा ग्राम मोरखा में हुई। उसके बाद हाईस्कूल शिक्षा बैतूल के

गवर्नमेंट एक्सीलेंस स्कूल पूरी की। पांच साल की एलएलबी की शिक्षा बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय भोपाल से पूरी की। शुभम रघुवंशी ने लॉ की पढ़ाई के साथ ही यूपीएससी की पढ़ाई शुरू कर दी थी। लॉ शिक्षा पूरी करने के बाद दिल्ली में जाकर यूपीएससी की कोचिंग की। अपने तीसरे प्रयास में ही शुभम रघुवंशी ने यूपीएससी परीक्षा उत्तीर्ण कर 556वीं रैंक हासिल की। शुभम रघुवंशी के अथक प्रयासों और मेहनत के परिणाम ने पूरे परिवार, समाज सहित पूरे ग्राम का नाम रोशन कर दिया। शुभम के बड़े पापा के लड़के युगल रघुवंशी भी न्यायाधीश के पद पर कार्यरत हैं। वर्तमान में हाईकोर्ट जबलपुर में ऑफिसर ऑन स्पेशल ड्यूटी के पद पर कार्यरत हैं। भाजपा मीडिया प्रभारी राघवेंद्र रघुवंशी के चाचा के लड़के हैं, शुभम। इस प्रकार परिवार में प्रशासनिक, न्यायिक और राजनीतिक सभी क्षेत्रों में परिवार के सदस्य हैं। मुलताई विधायक चंद्रशेखर देशमुख ने शुभम रघुवंशी के यूपीएससी परीक्षा उत्तीर्ण करने पर बधाई और शुभकामनाएं भेजी हैं।

रासेयो स्वयं सेवकों ने रेल यात्रियों को मतदान के लिए किया जागरूक

बैतूल। लोकतंत्र की नींव मजबूत करने के लिए मतदान जरूरी होता है। इसी उद्देश्य को लेकर लोकसभा निर्वाचन 2024 के अंतर्गत, मतदाता जागरूकता अभियान के तहत जिला निर्वाचन अधिकारी कलेक्टर नरेन्द्र कुमार सूर्यवंशी, जिला नोडल अधिकारी अक्षत जैन के मार्गदर्शन में जेएच कॉलेज के एनएसएस के स्वयंसेवक लगातार मतदान के लिए लोगों को जागरूक कर रहें हैं। इस तारतम्य में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवकों ने मतदाता जागरूकता को लेकर रेलवे स्टेशन पर रैली निकाली तथा यात्रियों को मतदान करने के लिए जागरूक किया। उन्होने यात्रियों को अपने बहुमूल्य मताधिकार के विषय में बताया। रेल्वे स्टेशन बैतूल एसएम वीके पालीवाल ने स्वयंसेवकों के इस प्रयास की सराहना की। गर्मी के चलते हुए दूर-दूर से ट्रेन में सफर करने वाले यात्रियों के लिए पेयजल की व्यवस्था की गई और उन्हें पानी पिलाया। अभियान को सफल बनाने में स्वयंसेवक कोमल देशमुख, अंजलि नागोरे,आयुष घिंडोडे, दीक्षित झाडे, गंगा बडगारिया, माधुरी असवारे, रोहित परते, श्रेया, निहारिका, आयुष नागोरे, निशा पदाम आदि स्वयंसेवकों का सरानीय योगदान रहा।

बरेठा घाट में चलती बाइक पर कूदा बारहसिंगा

बाइक सहित खाई में गिरे दम्पति की हालत गम्भीर

बैतूल। भोपाल नेशनल हाईवे पर रविवार रात एक चलती बाइक पर बारहसिंगा कूद गया। घटना में बाइक सहित दंपत्ति खाई में गिर गए। जिन्हें गंभीर चोट आने पर उपचार के लिए जिला चिकित्सालय भर्ती किया है। जानकारी के अनुसार मानवेंद्र सिंह कुशवाहा (36) वर्ष और उनकी पत्नी प्रियंका कुशवाह (28) निवासी शाहपुर दोनों पति-पत्नी बाजारों और मेलों में नाश्ते की दुकान चलाते हैं। कुछ दिनों से वे गांव केसिया में लगे मेले में नाश्ते की दुकान चला रहे हैं। रविवार रात यह दंपती शाहपुर में रह रहे अपने बच्चों के घर में अकेले होने के कारण उनसे मिलने बाइक से जा रहे थे। रात करीब 2 बजे दोनों बाइक से बरेठा घाट के उतार में उतर रहे थे। तभी रास्ते में बरेठा घाट मंदिर के पास सडक़ पर अचानक एक बारहसिंगा बाइक पर कूद पड़ा। उसने बाइक को साइड से अपने सिंग से टक्कर मार दी। इससे बाइक अनियंत्रित होकर खाई में गिर गई।

घटना इतनी अचानक हुई की पति पत्नी को बचने और संभलने का मौका ही नहीं मिला। दोनों घाट की खाई में बाइक समेत जा गिरे। घटना के बाद राहगीरों ने दोनों पति-पत्नी को गंभीर हालत में शाहपुर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में भर्ती कराया। जहां पर प्राथमिक उपचार के बाद उन्हें सोमवार सुबह 4 बजे के करीब 108 एंबुलेंस की सहायता से जिला अस्पताल बैतूल रेफर कर दिया गया है। फिलहाल दोनों ही घायल अस्पताल बैतूल में भर्ती कराया गया है। जहां पर डॉक्टरों द्वारा घायलों का उपचार किया जा रहा है।

पत्नी की स्मृति में रक्तदान और देहदान का लिया संकल्प

बैतूल। अपनों की स्मृति को स्थाई बनाने के लिए जनहित व सेवा कार्य से बड़ा कोई काम नहीं है। परिवार में दिवंगतों के जन्मदिवस और पुण्यतिथि पर रक्तदान कर लोगों की दुआएं तो मिलती ही हैं साथ ही आत्म संतुष्टी का भी अनुभव होता है। समाजसेवी देवेन्द्र बर्थे ने अपनी स्व.पत्नी हर्षा बर्थे के जन्मदिवस पर रक्तदान और देहदान का संकल्प लिया। श्री बर्थे इससे पूर्व भी 22 बार रक्तदान कर चुके हैं। उनकी पत्नी का दुखद निधन 24 वर्ष की अल्पायु में दो वर्ष पूर्व हो गया था। इस अवसर पर उपस्थित डॉ.योगेश पंडग्रे, डॉ.अरूण जयसिंगपुरे, डॉ.सौरभ राठौर, रितेश बर्थे ने श्री बर्थे की इस सेवा भावना की सराहना की।

पिछली बार से अधिक हो इस बार मतदान का प्रतिशत : अनुपम राजन

निर्वाचन प्रक्रिया में राजनीतिक दलों की सहभागिता को करें सुनिश्चित

मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने जिला निर्वाचन अधिकारियों को किया वर्चुअली संबोधित

बैतूल। मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी अनुपम राजन ने कहा कि मतदान के प्रतिशत का लक्ष्य निर्धारित करते समय यह ध्यान रखे कि पिछले चुनाव से मतदान लक्ष्य का प्रतिशत इस बार अधिक हो। उन्होंने कहा कि निर्वाचन प्रक्रिया में

पारदर्शिता की दृष्टि से नियमानुसार राजनीतिक दल के प्रतिनिधियों की सहभागिता सुनिश्चित करें। श्री राजन मंगलवार को प्रदेश के जिला निर्वाचन अधिकारियों और स्वीप के नोडल अधिकारियों के साथ वर्चुअल चर्चा कर रहे थे। इस अवसर पर कलेक्ट्रेट स्थित एनआईसी के सभा कक्ष में जिला निर्वाचन अधिकारी श्री नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी, स्वीप नोडल अधिकारी श्री अक्षत जैन, सहायक कलेक्टर श्री ऐश्वर्य वर्मा, उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्री मकसूद अहमद और एडीएम श्री राजीव नंदन श्रीवास्तव भी उपस्थित थे।

मतदान के लिए करें प्रोत्साहित- मुख्य निर्वाचन पदाधिकारी ने कहा कि अधिक से अधिक मतदान के लिए स्वीप के तहत विभिन्न प्रकार के नवाचार करें। कुछ जिलों ने आकर्षक पहल कर मतदाताओं को आकर्षित करने के लिए प्रयास किया है। अन्य जिलों में भी ऐसे नवाचार का अनुसरण करना चाहिए। युवा मतदाता अपने अधिकारों का अधिक से अधिक उपयोग करें। हमारा प्रयास होना चाहिए कि शहरी क्षेत्र की तरह ग्रामीण क्षेत्रों में भी मतदान के लिए लोग स्वयं आगे आए। मतदान केंद्रों एवं मतगणना स्थल के छायाचित्र बहुत अच्छी क्वालिटी के हो। यूनिक और अच्छे फोटोग्राफ्स पोर्टल पर अपलोड करना चाहिए। अच्छे फोटोग्राफर, मीडिया और संदर्भ के लिए ही उपयोगी होते हैं।

वेब कास्टिंग की मॉनिटरिंग हो परफेक्ट

श्री राजन ने कहा कि वेब कास्टिंग की अच्छे से मॉनिटरिंग की जाए। एक डेडिकेटेड टीम हो। एक टीम एक स्क्रीन पर काम करें। टीम को कुछ आपत्तिजनक दिखता हो तो अपने आरओ अथवा प्रभारी अधिकारी के संज्ञान में लाना चाहिए। उन्होंने कहा कि मतदाता परिचय पत्र का वितरण सुनिश्चित हो, जिससे वह समय के पूर्व मतदाताओं को प्राप्त हो जाए।

जिन जिलों में नामांकन की प्रक्रिया चल रही हो या होना है, वहां पर सुनिश्चित कर ले कि नामांकन फॉर्म में किसी प्रकार की त्रुटियां, संशोधन हो तो पहले ही दुरूस्त करवा दें, जिससे नामांकन निरस्त होने की स्थिति नहीं बने। इसके साथ ही सेक्टर अधिकारियों की ट्रेनिंग भी एक बार पुनः करवा ले।

एफएसटी, एसएसटी

श्री राजन ने कहा कि एफएसटी और एसएसटी दलों की टीमें नाकों पर तैनात होगी। उन्हें और अधिक सक्रिय बनाया जाए। नाकों पर परिवहन एवं आवागमन पर निगरानी सख्त रखें। आप लोगों के घोषणा पत्र भी भरकर आयोग भिजवा दे। नाकों पर कैमरे आदि की गुणवत्ता भी समझ लें। आवश्यकता पड़ने पर सही परिणाम सामने आए।

हाईवे एनस मोड़ पर कार से टकराई बाइक, तीन लोग गंभीर घायल

एनएचआई ने नहीं दी मीडियम ओपनिंग, डिवाइडर तोड़कर लोग करते हैं हाईवे क्रॉस

बैतूल/मुलताई। नेशनल हाईवे 47 के एनस मोड़ पर दोपहर डिवाइडर पार कर एनस की ओर जा रही बाइक तेज रफ्तार कार से टकरा गई। जिसके चलते बाइक पर सवार तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए और कार की टक्कर से बाइक भी दूर जा फिकाई। सड़क दुर्घटना की सूचना तत्काल 108 एंबुलेंस पर दी गई।

जिसके बाद जननी 108 एंबुलेंस के चालक दीपक पाल एंबुलेंस लेकर मौके पर पहुंचे और तीनों घायलों को मुलताई नगर के सरकारी अस्पताल लाकर भर्ती कराया गया। प्राप्त जानकारी अनुसार बताया जा रहा है कि चंदोरा निवासी धनराज करदाते दो महिलाओं के साथ बाइक से एनस की ओर जा रहे थे, कि तभी नेशनल हाईवे 47 पर डिवाइडर पार करते समय मुलताई की ओर जा रही तेज रफ्तार कार से जा भिड़े। जिससे कि उनकी बाइक दूर फीका गई और कार भी क्षतिग्रस्त हो गई। हालांकि कार में बैठे व्यक्ति कोई घायल नहीं हुए। लेकिन बाइक पर सवार धनराज करदाते और दो अन्य महिलाएं गंभीर रूप से घायल हो गई। जिनका मुलताई नगर के सरकारी अस्पताल में प्राथमिक उपचार किया गया।

मोही से आरटीओ तक जगह-जगह तोड़ दिए डिवाइडर

ग्राम मोही से आरटीओ बैरियर तक 5 किलोमीटर के दायरे में लगभग एक दर्जन ग्राम आते हैं किंतु यहां नेशनल हाईवे ने एप्रोच रोड ,मीडियम ओपनिंग नहीं दी है जिसके चलते लोगों को अपने ग्राम पहुंचने के लिए या तो लंबा रास्ता तय करके वापस आकर ग्राम जाना पड़ता है या फिर रांग साइड से अपने ग्राम की ओर पहुंचना होता है । उभारिया के पूर्व सरपंच ताकि उल हसन रिजवी बताते हैं कि इसका ग्रामीणों ने भी आसान रास्ता निकाल लिया है और जगह-जगह अवैध रूप से नेशनल हाईवे के मध्य के डिवाइडर को तोड़कर रास्ता बना दिया किंतु जब लोग इन तोड़े हुए डिवाइडर से हाईवे पार करते हैं तो आए दिन दुर्घटना होती है । किंतु ग्रामीण भी क्या करें हाईवे ने ध्यान देना चाहिए। अगर नगरकोट से आरटीओ 5 किलोमीटर की बात करें तो पांच स्थानों पर नेशनल हाईवे के सेंट्रल डिवाइडर तोड़कर रास्ते बनाए गए हैं और यहां इससे पूर्व में गंभीर दुर्घटनाएं भी हो चुकी है। जहां डिवाइडर टूटे हैं उनमें जूनापानी रास्ते पर ,गोंडवाना डाबे के समीप, एनस रोड के सामने और आरटीओ के पास और इन सभी स्थानों पर अब तक दुर्घटनाएं हो चुकी है।

श्री विनायकम स्कूल में धूमधाम से मनाया गया श्रीराम जन्मोत्सव

बैतूल। जिले के प्रतिष्ठित शैक्षणिक संस्थान श्री विनायकम स्कूल में सांस्कृतिक गतिविधियों से सुसज्जित कार्यक्रम में श्रीराम जन्मोत्सव मनाया गया। जनवरी 2024 में अयोध्या में श्री राम की प्राण प्रतिष्ठा के बाद ये पहली राम नवमी है, जिसे पूरा देश संपूर्ण जनमानस सहित धूमधाम से मना रहा है। श्री विनायकम स्कूल में भी ये पर्व धूमधाम से मनाया गया। सर्वप्रथम, श्री गणेश व मां सरस्वती जी के पूजन के साथ कार्यक्रम का पारंपरिक शुभारंभ किया गया। तत्पश्चात, आरंभ हुआ सांस्कृतिक प्रस्तुतियों का सिलसिला, जहां बच्चों ने श्रीराम स्तुति को भक्ति नृत्य द्वारा प्रस्तुत किया। साथ ही साथ श्री राम जी के भजनों की सुमधुर प्रस्तुतियां दी गई। इस अवसर पर आर्ट एंड क्राफ्ट विधा में बच्चो के द्वारा श्रीराम जी की आरती हेतु आकर्षक पूजा थालियां बनाई गई, जिनके विजेताओं को मंच से पुरस्कृत किया गया। अंत में विद्यालय प्रबंधन द्वारा समस्त विद्यार्थियों को श्रीराम जी के जीवन से प्रेरणा लेकर व्यक्तित्व निर्माण के लिए प्रोत्साहित किया गया एवं सभी विद्यार्थियों को श्रीराम जन्मोत्सव की हार्दिक शुभकामनाएं दी गई।

नाटिका और मेहंदी प्रतियोगिता से मताधिकार के लिए किया जागरूक

यूथ आइकॉन शिक्षकों और पालकों को दिलाई मतदाता जागरूकता की शपथ

बैतूल। मतदाता जागरूकता अभियान के तहत एकीकृत माध्यमिक शाला बडोरा में लघु नाटिका एवं मेहंदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। प्रतियोगिता के माध्यम से विद्यार्थियों ने मताधिकार के महत्व की जागरूकता फैलाई। विद्यार्थी मानसी, याचना, गुलाब, अक्षय, रवीना व संजना ने नाटिका में मतदाता जागरूकता को प्रस्तुत किया, यह पहल न केवल लोकतंत्र के सशक्तिकरण में महत्वपूर्ण है, बल्कि यह एक ऐतिहासिक परिवर्तन का संकेत भी है। बच्चों की नाटिका ने लोगों को स्वयं के विचारों का महत्व समझाया, जो एक सशक्त लोकतंत्र के आधार को मजबूत करता है।

जिला निर्वाचन अधिकारी कलेक्टर नरेंद्र कुमार सूर्यवंशी के निर्देशानुसार स्वीप जिला नोडल

अधिकारी अक्षत जैन के मार्गदर्शन में जिला शिक्षा अधिकारी डॉ. अनिल कुशवाह के आदेश अनुसार जिला स्वीप यूथ आइकॉन अभिलाषा बाथरी ने इस अवसर पर स्कूल के शिक्षकों एवं पालकों को मतदाता जागरूकता की शपथ दिलाई। प्रधान पाठिका सुषमा दुबे ने बताया कि यह अभियान अब बच्चों द्वारा संचालित हो रहा है, जो लोगों को वोटिंग के लिए प्रेरित कर रहे हैं। मतदाता जागरूकता अभियान पूरी तरह से हमारे बच्चों द्वारा संचालित है वे वोट देने के पात्र नहीं है, लेकिन उनका अपने आसपास बहुत प्रभाव होता है, उन्होंने बताया कि बच्चे आजकल बहुत जागरूक हैं और वह एक सार्थक समाज की आशा करते हैं। आंगनवाड़ी कार्यकर्ता ललिता डोंगरे और उषा मासोदकर व समस्त शाला परिवार ने लोकतंत्र के बारे में बच्चों को बताया, नारे लगाते हुए रैली निकाली गई।

रामनवमी पर विशेष

अमित राव पवार

एक आदर्श प्रभु श्री राम

वर्तमान समय में जब परिवार बिखर रहे है, भाई-भाई से अलग हो रहे है, मनुष्य अपना धैर्य-संयम खोता जा रहा है, पुत्र माता-पिता के आदेश का पालन करता दिखाई नहीं दे रहा। युवा संघर्षों से घबरा कर गलत रास्तों पर जा रहे हैं, मित्रता भी स्वार्थपूर्ण होती जा रहा है।

इन सब बातों से ऊपर उठते हुए एक आदर्श व्यक्तित्व हमारे सामने नजर आते और वे है प्रभु श्री राम के रूप में।जब बात आदर्श की हो तब सबको भगवान श्री राम ही दिखते हैं। आज परिवारों में भाई से भाई का प्रेम कही नजर नहीं आ रहा। श्री राम से यहां हम सीख सकते हैं कि किस प्रकार उन्होंने व उनके भाइयों ने अपने संपूर्ण जीवन में अपने आपसी बंधुत्व का परिचय दिया।जीवन में मनुष्य इतना भागदौड़ कर रहा है कि वह अपने स्वभाव, चिड़चिड़ापन से रिश्ते खत्म कर रहा है धैर्य संयम कैसे जीवन में लाया जा सकता, ये भगवान श्री राम से सीखना चाहिए, संताने अपने माता-पिता के आदेश का पालन नहीं कर पा रहे हैं। ऐसे में माता-पिता के आदेश और आज्ञा का उल्लंघन ना हो यह भी प्रभु श्री राम हम सबको सिखा रहे हैं। युवा संघर्ष से कतरा रहा श्री राम ने वनवास जो कि एक संघर्षमय जीवन को वरदान साबित करते हुए 14 वर्षों के संघर्ष के बाद राजा राम से मर्यादित प्रभु श्री राम बन गए। यह संघर्ष मनुष्य को अपने जीवन में निखारने का काम करता है। जल्द सफलता पाने के लालच में युवा आज इस संघर्ष कठिनाइयां से घबरा कर गलत रास्ते पर जा रहा है। मित्रता में आज स्वार्थ की भावना आ गई बिना मतलब के मित्र-मित्र के काम नहीं आ रहा ऐसे में मित्रता का भाव राम, हनुमान, विभीषण, निषादराज, सुग्रीव, से सीखना चाहिए। जिन्होंने हर समय निस्वार्थ भाव से मित्रता के भाव को अपनाते हुए एक-दूसरे की सहायता की। अनेक ऐसी बात हमारे राम में समाहित है जो उन्हें आदर्श बनाती है। मर्यादित है राम तो गरिमा है सीता घर में महिलाओं का आचरण भी सीता समान होना आवश्यक है। आज परिवारों का विघटन होते जा रहा है, कारण यही है कि आपसी यकीन, भरोसा, विश्वास कम होता जा रहा है। इससे रिश्ते में दूरियां बनने के साथ परिवार की मर्यादा गरिमा को समाप्त होते हम देख रहे हैं। ऐसे में भगवान राम का अनुसरण हर एक मनुष्य तथा परिवार को करना चाहिए। शास्त्रों में ग्रन्थो में वेदों में कहां भी गया है राम से बड़ा राम का नाम जो इस कलयुग के भवसागर से मनुष्य को आसानी से पार लगा सकता है राम में इतना आदर्श है कि महान होने पर भी उन्होंने सहायता के लिए केवट को छोटा नहीं माना यही बात राम को प्रभु श्री राम बनाती है। भगवान विष्णु के सातवें अवतार के रूप में त्रेतायुग में अयोध्या के राजा दशरथ और माता कौशल्या के यहां जन्मे हमारे आराध्य प्रभु श्री राम को हम प्रणाम करते हैं।

अभिज्ञानम- भगवान श्रीराम

॥दोहा॥

इच्छवाकु कुल में जन्में, रामचंद्र है नाम।
राम नाम से जाने सब, ख्यात नाम है राम॥
मन को वश रखने वाले, तेजस्वी बलवान।
वे जितेंद्रिय धैर्यवान, ऐसे हैं श्रीराम॥

॥ छंद ॥

श्रीमान प्रतिभावान सुंदर,मधुर भाषी राम हैं।
परम विक्रमशाली राघव,नीतिकुशल भी राम हैं॥
मुख भी सुंदर चौड़ामस्तक, नेत्र जिनके विशाल हैं।
पुष्ट गोल भुजाएँ उनकी, कंधे दोनों विशाल हैं॥

ठोढ़ी जिनकी है बड़ी, गर्दन भी शंख समान है।
लंबी लंबी हैं भुजाएँ, रंग चिकना श्याम है॥
अंगों का विन्यास सम और उभरी छाती सुडौल है।
कद ना छोटा ना बड़ा, उनका शरीर सुडौल है॥

सारे शुभ लक्षण से शोभित,राम सत्य प्रतिज्ञ हैं।
कीर्तियुक्त परोपकारी, पवित्र वे धर्मज्ञ हैं॥
ज्ञाननिष्ठ वे हैं जितेंद्रिय, धनुष भी धारण करें।
बड़े प्रतापी शत्रुनाशक, दमन शत्रु का करें॥

राम रक्षक हैं प्रजा के,जैसे ब्रह्मा प्रजापति।
सबके पोषक शोभावान वे,प्राणी मात्र के नरपति॥
करने वाले नाश शत्रु का,हैं प्रवर्तक धर्म के।
धनुर्वेद में हैं प्रवीण वे, मर्मभेदी हैं वेद के॥

स्मरण शक्ति है उत्तम, शास्त्र तत्वों को जानते।
दीनता से हैं परे, सज्जनता को नहीं त्यागते॥
क्रिया लौकिक या अलौकिक, कुशल दोनों में राम है।
वे हैं प्रतिभा के धनी और सर्वप्रिय भी राम हैं॥

जिस प्रकार पहुँचती नदियां, स्वयं पारावार में।
होता सज्जनों का समागम, राम के दरबार में॥
सारे प्राणियों के लिए, रखते हैं समदृष्टि सदा।
इस धरा पर राम आर्य है,सबके प्रियदर्शन सदा॥

वे गंभीर हैजलनिधि से,धैर्य है गिरिराज सा।
क्षमा में पृथ्वी की भांति, क्रोध है कालग्नि सा॥
चंद्रमा-से प्रियदर्शन, पराक्रम है विष्णु सा।
दान में वे कुबेर जैसे, सत्यभाषण धर्म सा॥

रचयिता
सुरेश रायकवार

प्रतिदिन समाचार पत्रों एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में प्रकाशित समाचार एवं विज्ञापन की जानकारी ली

नरसिंहपुर। लोकसभा निर्वाचन- 2024 के अंतर्गत संसदीय निर्वाचन क्षेत्र 17 होशंगाबाद के लिए नियुक्त व्यय प्रेक्षक मीना कुमारी मीना ने कलेक्टर एवं जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती शीतला पटले के साथ मंगलवार को उड़ान निःशुल्क कोचिंग भवन नरसिंहपुर में स्थापित मीडिया सर्टिफिकेशन एवं मॉनिटरिंग सेल का निरीक्षण किया। निरीक्षण के दौरान प्रेक्षक ने प्रतिदिन टेलीविजन पर प्रसारित हो रहे समाचार, विज्ञापन एवं प्रतिदिन समाचार पत्रों में प्रकाशित हो रहे समाचार एवं विज्ञापन तथा सोशल मीडिया पर की जा रही राजनैतिक पोस्ट की जानकारी ली। उन्होंने जिला स्तरीय एमसीएमसी द्वारा की जा रही कार्रवाई का अवलोकन किया। यहां मौजूद नोडल अधिकारी श्री राहुल वासनिक ने व्यय प्रेक्षक को अवगत कराया कि मीडिया सर्टिफिकेशन एवं मॉनिटरिंग सेल द्वारा 24 घंटे इलेक्ट्रॉनिक एवं सोशल मीडिया की मॉनिटरिंग की जा रही है। प्रतिदिन प्रकाशित एवं प्रसारित हो रही खबरों पर सतत निगरानी रखी जा रही है। इसके लिए तीन पाली में अधिकारी एवं कर्मचारियों की ड्यूटी लगाई गई है, जो प्रतिदिन इसकी मॉनिटरिंग कर रहे हैं। प्रतिदिन प्रकाशित होने वाली खबरों को पंजी में इंद्राज किया जा रहा है।प्रतिदिन प्रिंट एवं इलेक्ट्रॉनिक मीडिया में प्रकाशित अभ्यर्थी एवं राजनीतिक दलों से संबंधित प्रकाशित खबरों की पेपर कटिंग निकाल जा रही है और इसकी मॉनिटरिंग की जा रही है। इसी तरह टेलीविजन पर भी विभिन्न चैनलों की मॉनिटरिंग की जा रही है। सोशल मीडिया प्लेटफार्म जैसे इंस्टाग्राम, फेसबुक, X (ट्विटर) और यूट्यूब तथा विभिन्न व्हाट्सएप ग्रुपों पर भी निगरानी रखी जा रही है। व्यय प्रेक्षक मीना ने एमसीएमसी कक्ष में विभिन्न रजिस्टरों का अवलोकन किया एवं मौजूद अधिकारी एवं कर्मचारियों के कार्यों की सराहना की।इस दौरान अपर कलेक्टर एवं उप जिला निर्वाचन अधिकारी श्रीमती अंजली शाह, एमसीएमसी दल के श्री गोविंद बड़कुर, श्री अक्षय शर्मा, श्री प्रतीक लोधी, श्री सचिन पाठक, श्री ओपी मेहरा, श्री मुकेश चौपड़ा, श्री प्रदीप मेहरा, श्री राजेन्द्र पटैल, श्री दुर्गेश साहू, श्री इंद्र कुमार तिवारी, श्री अभिषेक गुमास्ता, श्री राजकुमार काछी, श्री नवनीत चौपड़ा, श्री कमलेश ठाकुर, श्री रीतेश मुड़िया एवं अन्य कर्मचारी मौजूद थे।

अयोध्या में विराजित रामलला की मूर्ति पर आधारित निकलेगी झांकी, 100 मातृशक्ति शस्त्रकला का करेंगी प्रदर्शन

धार। शहर सहित जिलेभर में बुधवार को रामनवमी पर्व उत्साह के साथ मनाया जाएगा। शहर में 20 से अधिक स्थान पर दोपहर 12 बजे रामलला की महाआरती की जाएगी। इसी के साथ धार्मिक आयोजनों का सिलसिला भी होगा। वहीं शाम को यहां विशेष रूप से चल समारोह निकाला जाएगा। इसमें अयोध्या में विराजित रामलला की प्रतिकृति मूर्ति पर आधारित झांकी निकाली जाएगी। जो कि आकर्षण का केंद्र बिंदु रहेगी। वहीं इस झांकी में 100 मातृशक्तियों द्वारा शस्त्र कला प्रदर्शन किया जाएगा। इसी के साथ गायक कलाकार द्वारा भजनों की प्रस्तुति भी दी जाएगी। वहीं धारेश्वर स्थित राम मंदिर में विशेष धार्मिक आयोजन आयोजन होंगे। पूरे दिन यहां भक्तों की भीड़ उमड़ेगी।

गौरतलब है कि धार शहर में राम की एक अलग ही भक्ति देखने को मिलती है। राम नवमी का पूरे साल लोगों को इंतजार रहता है। रामनवमी को लेकर राम मंदिरों में यहां विशेष तैयारी जारी है। मंदिर की रंगाई पुताई से लेकर सजावट की जा रही है। वहीं मंदिरों में अखंड रामायण पाठ का आयोजन भी जारी है। शहर में राम मंदिर के अतिरिक्त अन्य मंदिरों में रामनवमी

परभी दोपहर 12 बजे महा आरती होगी।

दो झांकी होगी शामिल- इधर रामनवमी के अवसर पर श्री हरिराम संकीर्तन रामायण मंडल व श्री रामनवमी शोभायात्रा काठमांडू पैनल के सयुक्त तत्वावधान में चल समारोह निकाला जाएगा। चल समारोह को लेकर समिति द्वारा विशेष तैयारी की जा रही है। शोभायात्रा में बड़ी संख्या में हिंदू समाज के लोगों शामिल होने की संभावना जताई जा रही है। यात्रा में अयोध्या में विराजित भगवान रामलला की मूर्ति पर आधारित की मूर्ति की प्रतिकृति झांकी में विराजित की जाएगी। इसी के साथ एक अन्य झांकी में हैदराबाद से 14 फीट की भगवान राम की मूर्ति बुलवाई गई है जिसे झांकी में विराजित कर निकाला जाएगा। इसमें विद्युत लाइट भी लगाई जाएगी जो की आकर्षण का केंद्र बिंदु रहेगी। इसी के साथ इस शोभायात्रा में चलित भजन संध्या का आयोजन भी होगा। इसमें भजन गायक कलाकार कुंदनपुर द्वारा भजनों की प्रस्तुति दी जाएगी।

शस्त्र कला का होगा आयोजन- इस शोभायात्रा में शत्रकला की प्रस्तुति होगी। इसमें विशेषकर 100 मातृशक्ति इस शोभायात्रा में शस्त्रकला की प्रस्तुति देगी। वहीं यात्रा में बड़ी संख्या में मातृशक्ति भी शामिल होगी। समिति के कार्यकर्ताओं द्वारा शोभायात्रा में शामिल होने के लिए घर-घर निमंत्रण पत्र दिए जा रहे है।

पिपरिया में प्रधानमंत्री के आगमन पर, कांग्रेस से भाजपा में पहुंचे पूर्व विधायक मंच पर,मूल भाजपाई पूर्व विधायक दर्शक दीर्घा में

हीरालाल गोलानी सोहागपुर। नर्मदापुरम जिले के पिपरिया में प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के आगमन क्षेत्र की जनता-जनार्दन के लिए सौभाग्य की बात कही जा सकती है। लेकिन जिस तरह से भाजपा के जिला पदाधिकारियों ने प्रजातंत्र के चौथे स्तंभ की अनदेखी की । यह कदापि उचित नहीं कही जा सकती। बताया जाता है कि पहले पिपरिया के पत्रकारों से प्रेस की आईडी के अलावा आधार कार्ड भी ले लिए गए थे। लेकिन बाद में क्या गलफत हुई । जो सोशल मीडिया पर पत्रकारों की

अनदेखी की बातें चलती रही ।वर्तमान में सारे देश में भाजपा पत्रकारों को तवज्जों दे रहा है। लेकिन पिपरिया में पत्रकारों की उपस्थिति से भाजपा पर कौन सा पहाड़ टूट पड़ता ।अब आते हैं दूसरी महत्वपूर्ण बात जो प्रदेश संगठन एवं राष्ट्रीय नेतृत्व को भी संज्ञान लेना चाहिए कि प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी की पिपरिया की आमसभा के मंच पर हाल ही में कांग्रेस से भाजपा में पहुची पूर्व विधायक सविता दीवान, पूर्व विधायक साधना स्थापक, के अलावा गाडरवारा पूर्व विधायको को नरेश पाठक मंचासीन थे। लेकिन पिपरिया के मूल भाजपाई पूर्व विधायक एवं पूर्व भाजपा जिलाध्यक्ष हरीशंकर जायसवाल, पूर्व विधायक रामकिशन चौहान दर्शक दीर्घा में बैठे नजर आए। चित्र में पूर्व विधायक एवं पूर्व जिलाध्यक्ष भाजपा अध्यक्ष हरीशंकर जायसवाल दर्शन दीर्घा में बैठे नजर आते हुए।आखिर क्यों कांग्रेस से भाजपा में पहुंचे ऐसे लोगों को जो कांग्रेस नेता राहुल गांधी के साथ मंच साझा नहीं कर सके। ऐसे लोगों को सीधे प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी के साथ मंच साझा करवा दिया गया। आखिर उन नेताओं की अनदेखी क्यों की गई।जिन लोगों ने भाजपा के अस्तित्व के लिए झंडा उठाया था।तब ऐसे लोगों को हेय दृष्टि से देखा जाता था। उन लोगों के द्वारा लगाया पौधा आज बड़ा वृक्ष हो गया है । जिसकी छाया आज कौन कौन, कैसे कैसे लोग ले रहे हैं। इस मामले में भाजपा की 6 अप्रैल स्थापना दिवस की पूर्व संध्या पर प्रदेश के भाजपा के संस्थापक सदस्य, पूर्व राज्यसभा सदस्य, पूर्व प्रदेश भाजपा कार्यालय मंत्री रघुनंदन शर्मा ने एक वरिष्ठ पत्रकार को दिया। साक्षात्कार काबिले-तारीफ है कि उन्होंने अपने साक्षात्कार में कहा था ।कि यह पार्टी पंडित दीनदयाल उपाध्याय,श्यामा प्रसाद मुखर्जी के सिद्धांतों पर आधारित पार्टी है। आपने हाल में निरंतर शामिल हो नेताओं एवं कार्यकर्ताओं के मामले में सटीक टिप्पणी करते हुए कहा था। हमें गर्व है कि भारतीय जनता पार्टी विश्व की सबसे बड़ी पार्टी है। लेकिन इस भारतीय जनता पार्टी में शामिल होने वालों की प्रमाणिकता, राष्ट्रीयता की भावना, परमार्थ, प्रमाणिकता हो। ऐसे लोगों को पहले भाजपा का साहित्य देकर , भाजपा के विचारों , सिद्धांतो सहमत हो। ऐसे लोग जो केवल प्रदेश एवं केन्द्र में सरकार है। केवल मलाई खाने वाले हो ऐसों लोगों से परहेज़ करनी चाहिए। इसके साथ ही पुराने कार्यकर्ता में असहजता महसूस नहीं होनी चाहिए। इधर बनखेड़ी की मातृशक्ति पार्षद नीतु पांडे ने ट्वीट करके संगठन को लिखा था कि प्रधानमंत्री की आमसभा में मातृशक्ति की अनदेखी की गई।आखिर वीआईपी 500सौ कार्ड किन किन चहेतों को प्रदान गए गए।

श्री सिद्धेश्वर महादेव मंदिर पर पूर्णाहुति और भंडारे के साथ हुआ, 11 कुंडीय श्री शिव शक्ति महायज्ञ का समापन

संत समागम में शामिल हुए 50 से अधिक संत महात्मा,भक्तों ने की आगवानी और लिया आशीर्वाद

निखिल ग्वाल (सुबह सवेरे) नालछा। नालछा के अतिप्राचीन चंदलाव तालाब के बीचोबिंच टापू पर शाही रूप में विराजित श्री सिद्धेश्वर महादेव मंदिर परिसर में संत श्री श्री 1008 श्री राजेंद्र पुरीजी महाराज की प्रेरणा से आयोजित पांच दिवसीय 11 कुंडीय श्री शिव शक्ति महायज्ञ के पांचवे दिन प्रातः सभी यजमानों द्वारा भगवान सिद्धेश्वर महादेव का रुद्राभिषेक कर महाआरती की गई. यज्ञनारायण भगवान का विधिविधानपूर्व पूजन कर वैदिक मंत्रोच्चार के साथ यज्ञ कुंड में 1 लाख 51 हजार आहुतियों के साथ पूर्णाहुति दी गई और महाआरती की गई .बाबा महांकाल की नगरी उज्जैन से पधारे यज्ञाचार्य पंडित बालमकुंद जोशी,पंडित शुभम तिवारी,पंडित देवेंद्र शर्मा,पंडित कार्तिक जोशी,पंडित विजय तिवारी,एवं पंडित संस्कार जोशी के द्वारा अनुष्ठान करवाया गया . कुंडाचार्य के रूप में पंडित दिनेश कानूनगो,पंडित संतोष कानूनगो,पंडित सुरेंद्र कानूनगो, पंडित मयंक इंदुरकर, पंडित प्रतीक कानूनगो,पंडित गौतम शर्मा,पंडित मनोज मंडलोई,पंडित सुरेश कुलकर्णी,पंडित महेश शर्मा,पंडित शुभम मलतारे,पंडित चिंटू जोशी,पंडित तिलक शर्मा और पंडित संजय जोशी ने अनुष्ठान पूर्ण करवाने में सहयोग किया. वरिष्ठ समाजसेवी मोहनलाल शर्मा व महायज्ञ के मुख्य यजमान सुनील शर्मा ने बताया कि श्री सिद्धेश्वर महादेव के आशीर्वाद और संत श्री राजेंद्र पूरीजी महाराज की प्रेरणा से ही उक्त महायज्ञ और अनुष्ठान आदि कार्य निर्विघ्न संपन्न हुआ,महायज्ञ से पूरे क्षेत्र में धार्मिक वातावरण निर्मित हुआ और पांचों दिन रुद्राभिषेक पूजन कर आरती के साथ प्रसादी वितरण किया गया प्रतिदिन रात्रि मे अलग-अलग धार्मिक आयोजन किए गए.आयोजन में नालछा सहित आसपास के मठ मंदिरो से संत-महात्मा और साध्वी भी आशीर्वाद देने हेतु पधारे वही नालछा व आसपास के क्षेत्र से श्रद्धालु भक्तो सहित बड़ी संख्या में मातृशक्ति ने भी शामिल होकर पुण्य लाभ प्राप्त किया.

कन्यापूजन व कन्याभोज के साथ हुआ भंडारे का आयोजन, हजारों भक्तों ने महाप्रसादी ग्रहण की ..

महायज्ञ के पांचवे दिवस पूर्णाहुति के बाद कन्यापूजन किया गया तत्पश्चात कन्याभोज और संत भोज के साथ भंडारे की शुरुआत हुई जो देर रात्रि तक अनवरत चलता रहा.भंडारे में नालछा सहित आसपास के क्षेत्र से हजारों श्रद्धालु भक्तो ने शामिल होकर महाप्रसादी ग्रहण की ओर पुण्य लाभ प्राप्त किया.

संत समागम में शामिल हुए 50 से अधिक संत...

आयोजन के अंतिम दिवस संत समागम का आयोजन किया गया जिसमे नालछा सहित आसपास के क्षेत्र के मठ मंदिरो से 50 से अधिक तपस्वी संत-महात्मा और साध्वी महायज्ञ के आयोजन में शामिल हुए जहां यजमानों और श्रद्धालु भक्तों ने संत महात्मा और साध्वी की आगवानी कर उनका आशीर्वाद प्राप्त किया.उक्त जानकारी श्री सिद्धेश्वर महादेव मंदिर के मुख्य पुजारी एवं प्रसिद्ध भगवताचार्य पंडित निर्मल इंदुरकर द्वारा दी गई.

राम नवमी विशेष

रमेश रंजन त्रिपाठी

लेखक स्तंभकार हैं।

श्रीराम और तुलसी की 'मानस'

गोस्वामी तुलसीदास जी ने चार सौ पचास साल पहले रामनवमी अर्थात् संवत एक हजार छह सौ एकतीस की चैत्र शुक्ल नवमी के दिन अयोध्या में अपने सार्वकालिक महान ग्रंथ 'श्रीराम चरित मानस' की रचना प्रारंभ की थी। उन दिनों भारत वर्ष में मुगल बादशाह अकबर का राज था। हिंदी भाषा के इतिहास में उस कालखंड को भक्तिकाल कहा जाता है। हिंदू धर्मावलम्बियों में निर्गुण, सगुण, द्वैत, अद्वैत, भक्ति, ज्ञान, वैष्णव, शैव, शाक्त्य इत्यादि धाराएँ प्रचलित थीं। अधिकांश धार्मिक साहित्य संस्कृत में था। जन सामान्य में संस्कृत जानने वालों की संख्या में गिरावट आ रही थी। देवभाषा के जानकारों में ईश्वरीय ज्ञान को लेकर एकाधिकार का प्रचलन था। सामाजिक और राजनीतिक परिस्थितियों के चलते लोग ऐसे अवलम्बन की तलाश में थे जो उनकी व्यग्रता को शांत कर सके। तब संत समाज ने अपने तरीकों से लोगों में आस्था और विश्वास की अलख जगाने का महती काम किया।

संत शिरोमणि श्रीराम के परम भक्त गोस्वामी तुलसीदास ने लोकभाषा अवधी में सनातन धर्म के यथार्थ ज्ञान के भंडार चार वेद, अट्ठारह पुराण, छह शास्त्र इत्यादि के सार को, अपने अनुभवों के साथ पिरोकर, रामकथा के माध्यम से 'श्रीराम चरित मानस' के रूप में प्रत्येक व्यक्ति के लिए ग्राह्य बना दिया। 'मानस' के अध्ययन से सनातन धर्म के विषय में संपूर्ण जानकारी प्राप्त हो जाती है। हिंदू धर्म में मानव मात्र के लिए सबसे बड़ी उपलब्धि मोक्ष को माना गया है। तुलसी बाबा ने 'मानस' में मुक्ति पाने का सरल उपाय श्रीराम की भक्ति और 'राम' नाम के जप को बताया है। वे कहते हैं कि कलियुग में जप, तप, यज्ञ, दान नहीं हो सकता इसलिए संसार में आवागमन के बंधन से छूटने का सबसे सुंदर और सरल तरीका भक्ति योग एवं रामनाम का सहारा है।

आध्यात्मिक उन्नति के साथ गोस्वामी जी 'मानस' में वैयक्तिक, पारिवारिक, सामाजिक, राजनीतिक जैसे अनेक विषयों में उच्च नैतिक मूल्यों की सुंदर व्याख्या करते हैं। तुलसी बाबा ने ज्ञान और भक्ति, कर्म और संन्यास, गृहस्थ और वैराग्य, निर्गुण और सगुण, निराकार और साकार, शैव और वैष्णव, द्वैत और अद्वैत, लोक और शास्त्र जैसे अनेक विषयों में तर्कसंगत समन्वय स्थापित करने में सफलता पाई है। आचार्य हजारी प्रसाद

द्विवेदी उनके समस्त काव्य को समन्वय की विराट चेष्टा निरूपित करते हैं। गुसाईं जी ने अपने महाकाव्य में प्रचलित सभी शैलियों और रसों का अलंकार, उपमा, प्रतीक, रूपकों सहित सुंदर प्रयोग किया है। परंतु यह भी सही है कि 'मानस' में छंदों में दोहे-चौपाइयों की तथा रसों में शांत रस की प्रमुखता है। जैसा कि तुलसी बाबा स्वयं कहते हैं कि 'मानस' में समस्त शास्त्रों का सार शामिल है इसलिए सुधिजनों को इसे पढ़ते हुए श्रीमद् वाल्मीकीय रामायण, अध्यात्म रामायण, गीता, श्रीमद् भागवत पुराण जैसे लोकप्रिय ग्रंथों की याद आ जाए, तो आश्चर्य कैसा?

आधुनिक जीवन शैली में 'मानस' की प्रासंगिकता सर्वविदित है। जिस युग में एक से अधिक पत्नियाँ रखना बुरा न माना जाता हो, उस समय श्रीराम ने एकपत्नीव्रत अपनाकर नारी सम्मान का अनुपम उदाहरण पेश किया था। गुसाईं जी माता-पिता, गुरु और स्वामी की आज्ञा पालन के महत्व को प्रमुखता से प्रतिपादित करने के साथ सार्थक रिश्तों की सुंदर व्याख्या करते हैं। राजनीति के उच्च मापदंड स्थापित करते हुए वे सामाजिक संबंधों की विवेचना तार्किक ढंग से करते हैं। 'मानस' की अनेक चौपाइयाँ और दोहे जन-जन की जुबान में मुहावरे बनकर चढ़ गए हैं। 'का बरसा जब कृषि सुखाने', 'पर उपदेस कुसल बहुतेरे', 'कोउ नृप होय हमें का हानि' इत्यादि तो छोटे से उदाहरण हैं। यह गोस्वामी जी की साधना का सुफल है कि 'श्रीराम चरित मानस' को लोग पूजाघर में रखते हैं और पवित्र होकर उसका पाठ करते हैं। जनमानस के चेतन एवं अवचेतन मन में परमपिता परमात्मा के सगुण स्वरूप श्रीराम को विराजमान कराने में गोस्वामी जी की 'मानस' का सर्वाधिक योगदान है। तुलसी बाबा ने रामलीला का मंचन एवं रामकथा सुनाकर श्रीराम की लोकमान्यता को चरम पर पहुँचा दिया। व्याकुल मानव समाज की भलाई के लिए भगवान राम और उनके रामनाम का अनुपम सहारा प्रदान करने का श्रेय गोस्वामी तुलसीदास जी को देना अतिशयोक्ति नहीं है।

मंच पर रो पड़े कांग्रेस प्रत्याशी नीटू सिकरवार, दिग्विजय ने भरा पर्चा

सिंधिया के नामांकन रैली में पहुंचे मोहन यादव,शिवराज और वीडी शर्मा

भोपाल। लोकसभा चुनाव के लिए सोमवार को पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह, ज्योतिरादित्य सिंधिया, नीटू सिकरवार और अरुण श्रीवास्तव ने नामांकन दाखिल किया। सिंधिया ने शिवपुरी में रोड शो के बाद नामांकन दाखिल किया। सीएम डॉ. मोहन यादव, पूर्व सीएम शिवराज सिंह और बीजेपी के प्रदेशाध्यक्ष वीडी शर्मा उनके साथ रहे। नामांकन से पहले सिंधिया ने गुना के हनुमान मंदिर में पूजा की। इसके बाद काफिले के साथ नामांकन करने गुना से शिवपुरी पहुंचे। रास्ते में उनका फूल-मालाओं से जगह-जगह पर स्वागत किया गया। गुना सीट से भाजपा ने ज्योतिरादित्य सिंधिया को मैदान में उतारा है। कांग्रेस ने यादवेंद्र सिंह यादव को अपना प्रत्याशी बनाया है। पूर्व सीएम दिग्विजय सिंह ने भी राजगढ़ सीट से मंगलवार दोपहर पत्नी अमृता के साथ नामांकन दाखिल किया।

इससे पहले उन्होंने जालपा माता मंदिर में पूजा की। राजगढ़ लोकसभा से भाजपा ने दो बार के सांसद रोडमल नागर को दिग्विजय के खिलाफ मैदान में उतारा है। मुरैना-श्योपुर से कांग्रेस प्रत्याशी सत्यपाल उर्फ नीटू सिकरवार ने भी नामांकन किया। सभा के दौरान वे मंच पर रो पड़े। पीसीसी चीफ जीतू पटवारी ने उन्हें संभाला। नीटू के सामने भाजपा से शिवमंगल सिंह तोमर हैं।

नॉमिनेशन में ज्योतिरादित्य सिंधिया ने दिखाई ताकत

आगरा-मुंबई हाईवे पर लग गया जाम, रही भारी भीड़

भोपाल। लोकसभा चुनाव को लेकर गुना-शिवपुरी सीट से केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया ने नामांकन किया है। नामांकन के दौरान सिंधिया ने रोड शो में अपनी ताकत दिखाई है। हजारों की संख्या में उनके समर्थक गाड़ियों के काफिले के साथ शिवपुरी पहुंचे थे। नॉमिनेशन के दौरान गाड़ियों से गुना से शिवपुरी तक लंबा जाम लग गया था। सड़कों पर बीजेपी के झंडे लहरा रहे थे। मध्य प्रदेश में गुना-शिवपुरी सबसे चर्चित सीट है। केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया यहां से चुनाव लड़ रहे हैं। वह शुभ मुहूर्त में नॉमिनेशन दाखिल करने शिवपुरी पहुंचे थे। इससे पहले मंदिर जाकर उन्होंने पूजा-पाठ की थी। मंदिर में पूजा अर्चना के बाद गुना से लंबी गाड़ियों के काफिले के साथ शिवपुरी रवाना हुए थे। उनके काफिले में इतनी गाड़ियां थीं कि गुना-शिवपुरी रोड पर कई जगह जाम की स्थिति उत्पन्न हो गई। वहीं, मंगलवार को पुख नक्षत्र में ज्योतिरादित्य सिंधिया ने नामांकन दाखिल किया है। नामांकन फॉर्म जमा करने से पहले ज्योतिरादित्य सिंधिया हनुमान जी के शरण में पहुंचे। ज्योतिरादित्य सिंधिया ने प्रसिद्ध हनुमान मंदिर में हवन पूजन किया। साथ ही लंबे काफिले के साथ शक्ति प्रदर्शन करते हुए गुना से शिवपुरी के लिए रवाना हुए।

आचार संहिता के बीच टास्क फोर्स का आदेश,तालाबों को मिलेगा पुनर्जीवन

बीजेपी के संकल्प पत्र के लिए चंदेलों और बुंदेलों के बनाए तालाबों को पुनर्जीवित करेगी सरकार

भोपाल। प्रदेश के बुंदेलखंड क्षेत्र में चंदेल राजाओं और बुंदेली राजाओं द्वारा बनाए गए तालाबों को पुनर्जीवित करने का काम मोहन सरकार करेगी। इसके लिए राज्य शासन ने बुंदेलखंड में आने वाले जिलों को समाहित करते हुए एक टास्क फोर्स का गठन किया है। ये टास्क फोर्स चंदेलों और बुंदेलों द्वारा बनाए गए तालाबों का पता लगाकर उन्हें अमृत सरोवर के रूप में विकसित करने का प्रतिवेदन देंगी। सरकार का यह आदेश विवादों में आ सकता है क्योंकि बीजेपी के संकल्प पत्र 2023 को आधार बनाकर जारी यह आदेश लोकसभा चुनाव की आचार संहिता के दौरान आया है। प्रदेश में लोकसभा चुनाव के लिए 16 मार्च से आचार संहिता प्रभावी है। दूसरे और तीसरे चरण में होने वाले चुनावों में बुंदेलखंड के सभी लोकसभा सीटों के लिए नामांकन भरने और चुनाव प्रचार करने की प्रक्रिया जोरों पर है। इस बीच राज्य शासन के सामान्य प्रशासन विभाग ने 4 अप्रैल को बीजेपी के संकल्प पत्र 2023 के संकल्प- सुदृढ़ आधारभूत संरचना और आउटकम क्षेत्रीय विकास के के अंतर्गत तालाबों को अमृत सरोवर के रूप में विकसित करने संबंधी आदेश जारी किया है। यह आदेश बुंदेलखंड क्षेत्र में आने वाले छतरपुर, पन्ना, दमोह, टीकमगढ़, निवाड़ी, अशोकनगर, दतिया के सभी चंदेली और बुंदेली तालाबों को पुनर्जीवित करने और इन्हें अमृत सरोवर के रूप में विकसित करने को लेकर है। संकल्प पत्र 2023 के आधार पर सरकार ने टास्क फोर्स का गठन किया है। जीएडी द्वारा बनाई गई टास्क फोर्स में जो अधिकारी शामिल हैं उनमें अधीक्षण यंत्री मप्र राज्य रोजगार गारंटी परिषद भोपाल को टास्क फोर्स का समन्वयक बनाया गया है। इसके अलावा कार्यपालन यंत्री जल संसाधन विभाग छतरपुर, पन्ना, दमोह, टीकमगढ़, निवाड़ी, अशोकनगर, दतिया, कार्यपालन यंत्री मप्र राज्य रोजगार गारंटी परिषद तथा कार्यपालन यंत्री ग्रामीण यांत्रिकी सेवा छतरपुर, पन्ना, दमोह, टीकमगढ़, निवाड़ी, अशोकनगर, दतिया सदस्य के रूप में शामिल रहेंगे। सोलह सदस्यीय यह टीम संकल्प पत्र 2023 के अनुसार कार्यवाही कर प्रतिवेदन आयुक्त महात्मा गांधी नरेगा को सौंपेगी।

हाउसिंग बोर्ड इस साल बनाएगा 22115 नए आशियाने

भोपाल में 150 करोड़ का 11 मंजिला बिजनेस पार्क मंजूर

भोपाल। हाउसिंग बोर्ड पिछले बजट के मुकाबले इस साल केवल निर्माण योजनाओं व भू-अर्जन व जमीन खरीदी पर ही तीन गुना ज्यादा रकम खर्च करेगा। इसके लिए 3100 करोड़ रुपए में से निर्माण योजनाओं पर 2500 करोड़ और जमीन खरीदी व भू-अर्जन पर 600 करोड़ खर्च करने का प्रावधान है। प्रदेशभर में 22,115 आशियाने बनाए जाने की योजना है, जिनमें 21 निर्माणाधीन आवासीय योजनाओं के 3637 घर भी शामिल हैं। वित्तीय वर्ष 2023-24 के लिए बोर्ड का कुल अनुमानित बजट 2000 करोड़ रुपए था, जो इस वित्तीय वर्ष में 4177 करोड़ रुपए हो गया है। कुल बजट में 3100 करोड़ के अतिरिक्त 1077 करोड़ रुपए ऑफिस एक्सपेंडेचर, फर्नीचर और वेतन भत्तों के लिए दिए जाएंगे। भोपाल के टीटी नगर में 150 करोड़ रु. लागत से बनने वाले 11 मंजिला बिजनेस पार्क को मंजूरी मिल गई है। अयोध्या नगर में 240 फ्लैट बन रहे, 115 करोड़ होंगे खर्च... अयोध्या नगर में सुरम्य परिसर फेस-2 में 240 फ्लैट और अन्य निर्माण कार्य होंगे। इस प्रोजेक्ट का बजट 115 करोड़ रखा गया है। अयोध्या नगर एक्सटेंशन में बोर्ड 133 नए आवास बना रहा है। इस प्रोजेक्ट की लागत 56 करोड़ होगी। अयोध्या नगर जे-सेक्टर के धमखेड़ा में हाउसिंग बोर्ड 6.43 हेक्येटर यानी करीब 15 एकड़ जमीन पर प्लॉटिंग कर रहा है। यहां के डेवलपमेंट पर 50 लाख रुपए खर्च करने की प्लानिंग है। कटारा हिल्स के सफायर पार्क सिटी में 28 विला बनेंगे। बजट 14 करोड़ है। यहां पहले से डुप्लेक्स कॉलोनी है। जवाहर चौक के पास सरस्वती नगर, शास्त्री नगर में 150 करोड़ से 1000 नए आवास बनाए जा रहे हैं। 80 करोड़ में खजूरीकलां फेस-2 अवधपुरी के खजूरीकलां की प्राइम लोकेशन पर फेस-2 प्रोजेक्ट आएगा। इसमें 147 डुप्लेक्स-ट्रिपलेक्स मकान बनेंगे। बजट 80 करोड़ है। फेस-3 में 160 फ्लैट 3 बीएचके बनेंगे। बोर्ड करीब 85 करोड़ खर्च करेगा।

फ्रंटफुट पर बीजेपी के धाकड़ नेताओं की टीम कर रही बैटिंग

लोकसभा चुनाव में बीजेपी की टीम बड़ी रणनीति के साथ जुटी हुई है

भोपाल। मध्य प्रदेश में लोकसभा की 29 सीटों को जीतने के लिए बीजेपी ने पूरी ताकत झोंक दी है। लोकसभा चुनाव के मद्देनजर बीजेपी ने दिग्गज नेताओं की पूरी टीम को मोर्चे पर लगा दिया है। चुनाव लड़ रहे नेता जहां अधिकांश समय अपने संसदीय क्षेत्र में सक्रिय हैं तो वहीं दीगर नेता अन्य संसदीय क्षेत्र में पहुंचकर मतदाताओं का दिल जीतने की हर संभव कोशिश में लगे हैं। सभी नेता मोदी सरकार की 10 साल की उपलब्धियां का सिलसिलेवार ब्यौरा भी दे रहे हैं। राज्य में लोकसभा की 29 सीटों पर चुनाव चार चरणों में होने वाले हैं। इन चुनाव में प्रचार की कमान मुख्य तौर पर मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव के अलावा प्रदेश अध्यक्ष विष्णु दत्त शर्मा के हाथ में है। इसके अलावा पार्टी के अन्य प्रमुख नेताओं में केंद्रीय मंत्री ज्योतिरादित्य सिंधिया, राज्य सरकार के उपमुख्यमंत्री जगदीश देवड़ा, राजेंद्र शुक्ला, मंत्री कैलाश विजयवर्गीय, प्रहलाद पटेल, पूर्व मंत्री भूपेंद्र सिंह, प्रदेश के चुनाव प्रभारी डॉ महेंद्र सिंह, सह प्रभारी सतीश उपाध्याय और प्रदेश संगठन के महामंत्री हितानंद संभाले हुए हैं। वहीं, एमपी के कद्दावर नेता कैलाश विजयवर्गीय को छिंदवाड़ा लोकसभा सीट की जिम्मेदारी मिली है। छिंदवाड़ा फतह के लिए कैलाश विजयवर्गीय पूरी तरह से जुटे हुए हैं। वह लगातार छिंदवाड़ा को जीतने के लिए वहां डटे हुए हैं। छिंदवाड़ा लोकसभा पर इस बार कांटे की टक्कर है। बीजेपी दमखम के साथ छिंदवाड़ा को कब्जाने के लिए जुटी है। वहीं, बीजेपी के ये नेता हर इलाके में पहुंचकर जनसभाएं कर रहे हैं तो वहीं कार्यकर्ताओं की बैठक में भी हिस्सा ले रहे हैं। बीजेपी के तमाम बड़े नेता एक खास रणनीति के मुताबिक, कांग्रेस को घेर रहे हैं। उनके निशाने पर मुख्य तौर पर महाकौशल में कमलनाथ होते हैं तो वहीं ग्वालियर-चंबल इलाके में दिग्विजय सिंह। भाजपा नेताओं के हमले धारदार हैं और वे मध्य प्रदेश में दिग्विजय सिंह के शासनकाल की याद दिलाने में पीछे नहीं रहते। एक तरफ जहां कांग्रेस और कांग्रेस की नीतियों की आलोचना का सिलसिला जारी है तो वही मोदी सरकार के 10 साल के कार्यकाल का ब्यौरा दिया जा रहा है।

कोग्नाइज 2k24: श्री अरविंदो समूह संस्थान ने 195 देशों के झंडों को सम्मानित किया

इंदौर में सांस्कृतिक और रचनात्मकता का उत्सव

इंदौर। श्री अरविंदो समूह संस्थान ने 12 अप्रैल को प्रतिष्ठित 'इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स' में जगह हासिल कर इतिहास रच दिया। संस्थान के छात्रों ने सभी 195 मान्यता प्राप्त देशों के झंडों को सम्मानित किया, साथ ही वे एक साथ उनके संबंधित राष्ट्रीय गानों को ईयरफोन के माध्यम से सुन रहे थे।

इस अवसर पर, किंशुक त्रिवेदी, श्री अरविंदो समूह संस्थान के उपाध्यक्ष, ने इंडिया बुक ऑफ रिकॉर्ड्स की ओर से निर्णायक डॉ. अनिल जैन से विश्व रिकॉर्ड के लिए पदक और प्रमाण पत्र प्राप्त किया। उल्लेखनीय है कि श्री अरविंदो समूह संस्थान ने 6 से 13 अप्रैल तक अपने जीवंत सांस्कृतिक उत्सव, कोग्नाइज 2k24, का एक और साल मनाया। 1 हजार से अधिक छात्रों की भागीदारी के साथ, इस आयोजन ने भावनाओं, यादों और असीम रचनात्मकता का एक रंगीन संगम प्रस्तुत किया, जिससे यह क्षेत्र के प्रमुख वार्षिक उत्सवों में से एक के रूप में अपनी पहचान बना सका।

कोग्नाइज 2k24 का मुख्य आकर्षण 7 अप्रैल को व्यस्त 56 दुकान पर आयोजित शानदार नुक्कड़ नाटक था। यह नाटक अकेलेपन के महत्वपूर्ण मुद्दे पर ध्यान आकर्षित करता है और उत्सव की सामाजिक चुनौतियों को संबोधित करने की प्रतिबद्धता को दर्शाता है।

सांस्कृतिक प्रस्तुतियों और सामाजिक वकालत के अलावा, कोग्नाइज 2k24 ने खेल उत्सव के साथ विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया, जिनमें टर्फ क्रिकेट, शतरंज, टर्फ फुटबॉल, बैडमिंटन, टेबल टेनिस, खो-खो, और बास्केटबॉल शामिल हैं। विभिन्न कॉलेजों के छात्र और शिक्षक

उत्साहपूर्वक भाग लेकर सौहार्द और स्वस्थ प्रतिस्पर्धा की भावना को बढ़ावा दे रहे थे।

उत्सव ने तकनीकी प्रतियोगिताओं जैसे कि तकनीकी प्रश्नोत्तरी, ईसी-स्केवेंजर हंट, लाइन फॉलोअर, वेबपेज डिजाइनिंग, ब्लाइंड कोड, ब्रिज बिल्डिंग, फेज 2 कैड मेनिया, और कार्यशील मॉडल प्रतियोगिता का भी आयोजन किया। कोग्नाइज 2k24 ने वाद विवाद प्रतियोगिता, लघु फिल्म प्रतियोगिता, एड मैड शो, पोस्टर प्रस्तुति, गेस द लोगो, क्रिप्टिक हंट, और ब्रशलेस पेंटिंग जैसे इंटर-कॉलेज साहित्यिक और प्रबंधन प्रतियोगिताओं के माध्यम से अपने प्रभाव को और बढ़ाया। छात्रों ने सांस्कृतिक अंतर-कॉलेज नृत्य और गायन प्रतियोगिता, थाप, और फैशन शो में भी हिस्सा लिया। जज दमयंती भाटिया, रूपल जोशी, नेहा पांड्या, चानी त्रिवेदी, और अन्य प्रतिष्ठित व्यक्तियों ने भी उपस्थित थे।

कोग्नाइज 2k24 ने इंदौर मूक-बधिर द्विभाषी अकादमी के असाधारण छात्रों के प्रदर्शन के माध्यम से सामाजिक परिवर्तन के लिए वकालत की। इसके अलावा, बधिर समुदाय के सामने आने वाली चुनौतियों और संकेत भाषा में कॅरियर के अवसरों पर चर्चा की गई। श्रीमती चानी त्रिवेदी, एसएजीआई की समूह निदेशक, ने विद्यालय के प्रधानाचार्य का अभिनंदन किया और इन विशेष रूप से सक्षम बच्चों के प्रदर्शन की प्रशंसा की। अध्यक्ष उमेश त्रिवेदी ने आयोजन टीम और छात्रों को उनके असाधारण प्रयासों, समर्पण, और इस आयोजन को भव्य और सामाजिक रूप से सार्थक बनाने के लिए उनकी प्रतिबद्धता के लिए आशीर्वाद दिया। किंशुक त्रिवेदी ने एसएआईटी के प्रोफेसर वैभव शर्मा के प्रयासों की भी प्रशंसा की, जिन्होंने इस अवसर को यादगार बनाया।

त्यौहार 13 अप्रैल को छात्रों द्वारा सांस्कृतिक प्रस्तुतियों की एक शानदार श्रंखला के साथ समाप्त हुआ, जिससे सभी उपस्थितों पर एक स्थायी प्रभाव पड़ा। कोग्नाइज 2k24 केवल एक वार्षिक उत्सव नहीं था। यह अन्वेषण और आत्म-व्यक्ति की अटूट भावना का प्रमाण था, जिसने उन सभी के दिलों में स्थायी यादों को उकेरा जिन्होंने इसकी जादूगरी में हिस्सा लिया।

बीजेपी के मेनिफेस्टो में 2047 का विजन,कांग्रेस हुई हमलावर

जीतू पटवारी बोले–पीएम तब की बात कर रहे जब हम जीवित ही नहीं रहेंगे

भोपाल। बीजेपी ने लोकसभा चुनाव 2024 के लिए रविवार को मेनिफेस्टो जारी किया है। इसे भाजपा का संकल्प-मोदी की गारंटी नाम दिया गया है। भाजपा के इस मेनिफेस्टो पर जीतू पटवारी ने कहा- प्रधानमंत्री ने कल एक इंटरव्यू दिया और बहुत सी बातें की। लेकिन, बॉन्ड और करप्शन की बात नहीं। बेरोजगारी, काले धन की बात नहीं की। देश की चरमराई अर्थव्यवस्था पर बात नहीं की। देश में जो महंगाई हो गई उस पर बात नहीं की। प्रधानमंत्री जी तब की बात कर रहे हैं जब हम जीवित नहीं रहेंगे। जीतू ने आगे कहा- प्रधानमंत्री ने बात की तब की जब हम जीवित नहीं रहेंगे। प्रधानमंत्री की जो आज उम्र है, भगवान

करे वो सौ साल जिएं। लेकिन, व्यक्ति का अपना एक विजन होता है। वो 2047 की बात करेंगे जब वो सौ साल से ऊपर हो जाएंगे। इस तरह की भावना गुमराह करने की भावना है। आपने दस साल में क्या डिलेवर किया ये देश को पता चलना चाहिए। मैं मानता हूं कि बीजेपी का जो घोषणा पत्र है वो झांसा है। इस झांसे से देश और प्रदेश की जनता को बचना चाहिए। पीसीसी चीफ ने कहा- देश में जिनको आपने ठेके दिए उन्हीं से 80 प्रतिशत चंदा ले लिया। प्रधानमंत्री जी देश को ये बताने में असफल रहे कि अगर काला धन वो लें, तो कोई बात नहीं। दूसरी राजनीतिक पार्टियां कहीं भी चूक कर जाएं तो उनके खिलाफ प्रशासन, ईडी और सीबीआई है। तो प्रधानमंत्री का काला धन से निपटने का दो तरह का व्यवहार है ये देश देख रहा है और समझ रहा है।

कमलनाथ के घर पुलिस भेजना, मतलब बीजेपी डरी हुई है- छिंदवाड़ा में पूर्व सीएम कमलनाथ के घर पुलिस जाने और विधायक नीलेश उइके के घर आबकारी और पुलिस विभाग की सर्चिंग पर पटवारी ने कहा- छिंदवाड़ा में जो कृत्य भारतीय जनता पार्टी और प्रशासन द्वारा किया गया। ये उनके डर को चिल्ला- चिल्ला कर बता रहा है। राहुल गांधी के हेलीकॉप्टर की जांच करना यह महसूस कराता है कि देश में लोकतंत्र की हत्या हो रही है। नरेंद्र मोदी, भारतीय जनता पार्टी के तमाम नेता मध्य प्रदेश में भी पूरी बीजेपी धनबल का किस तरह से उपयोग कर रही है। ये जग जाहिर है। हमारे खाते सीज किए, हमारे पास आर्थिक संसाधनों की कमी है। हमारे कई कैंडिडेट एक वोट - एक नोट की बात करते हैं। ऐसे में इस तरह की हठधर्मिता की गई। एक विधायक के घर पर 4 घंटे तक पुलिस का रहना। फिर कमलनाथ जी के घर पर इस तरह की घटनाक्रम करना यह लोकतंत्र के साथ एक तरीके से कुठाराघात है। ये लोकतंत्र की हत्या है।

अनादि के दोहरे प्रदर्शन से इंदौर ने ग्वालियर को हराकर फाइनल जीता

फाइनल मैच में कप्तान अनादि को सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी घोषित किया

इंदौर। मध्य प्रदेश क्रिकेट संगठन द्वारा आयोजित अंतर संभागीय गर्ल्स अंडर-18 एक दिवसीय क्रिकेट स्पर्धा का फाइनल मुकाबला होलकर स्टेडियम में इंदौर और ग्वालियर के बीच खेला गया। इंदौर ने सभी विकेट खोकर 50 ओवर में 145 रन बनाएं। ग्वालियर 55 रनों पर ढेर हो गई। इंदौर ने यह मैच 90 रनों से जीत लिया। इस मैच में कप्तान अनादि तागड़े ने दोहरा प्रदर्शन किया और वे सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी चुनी गई।

इंदौर ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी का निर्णय लिया। ग्वालियर की कसी हुई गेंदबाजी और शानदार क्षेत्ररक्षण के कारण इंदौर की टीम को रन बनाने में मुश्किल आ रही थी। आयुषी शुक्ला ने संघर्ष कर कुछ रन बनाएं परंतु जल्द ही तीन विकेट गिर गए। इसके बाद कप्तान अनादि तागड़े ने बल्लेबाजी में गंभीरता दिखाते हुए स्कोर को 100 के पार पहुंचा दिया।

इंदौर ने सभी विकेट खोकर 50 ओवर में 145 रन बनाएं। तब यह लग रहा था कि शायद आज इंदौर का दिन नहीं है। परंतु कप्तान अनादि तागड़े ने एक

छोर से तेज गेंदबाजी और ग्वालियर के 3 महत्वपूर्ण विकेट लिए। इसके बाद ग्वालियर की टीम दबाव में आ गई और ग्वालियर मात्र 55 रनों पर ढेर हो गई और इंदौर ने यह मैच 90 रनों से जीत लिया।

मैच में सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाली इंदौर की कप्तान अनादि तागडे को सर्वश्रेष्ठ खिलाड़ी के रूप में मैच आब्जर्वर और पूर्व रणजी खिलाडी कन्नू पवार द्वारा पुरस्कृत किया गया। मध्यप्रदेश क्रिकेट संगठन की सह सचिव सिद्धियानी पाटनी एवं अतिथियों द्वारा विजेता टीम को ट्रॉफी प्रदान की गई। उल्लेखनीय है कि प्रदेश से 6 लड़कियों का चयन नेशनल क्रिकेट अकादमी के एनसीए-जेडसीए कैंम्प के लिए हुआ है। इसमें इंदौर से अनादि तागड़े, आयुषी शुक्ला व धानी बुचड़े का चयन हुआ।